केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

२ जनवरी २०१२, वर्ष १९, नं ५९, लक्ष्मीनगर, D-1, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम - ६९५ ००४

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का ३१वें वार्षिक सम्मेलन का उद्घाटन मन्त्री श्री.शिवकुमार जी कर रहे हैं। डॉ.फैसलखान, डॉ.नायर, डॉ.तम्बान, श्री.कुञ्ञिकृष्णन, श्रीमती राजपुष्पम, डॉ.तंकमणि अम्मा, श्री.जी.हरि, डॉ.एम.के.रामचन्द्रन नायर

डॉ. नायरजी की डॉक्युमेन्टरी का षूटिंग उद्घाटन महाराजा श्री. उत्राटम तिरुनाळ कर रहे हैं। डॉ. नायर पत्नीसमेत बैठे हैं

केरल विश्वविद्यालय डी.ई.हॉल में संपन्न डॉ.चन्द्रशेखरन नायर के रचना संसार पर राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन प्रसिद्ध जस्टिस हरिहरन नायर कर रहे हैं

निंस युणिवेर्सिटी ने अपने यहाँ डॉ.चन्द्रशेखरन नायर के नाम एक चेयर स्थापित किया। उसका प्रमाणपत्र मिनिस्टर डॉ.नायरजी को समर्पित कर रहे हैं।

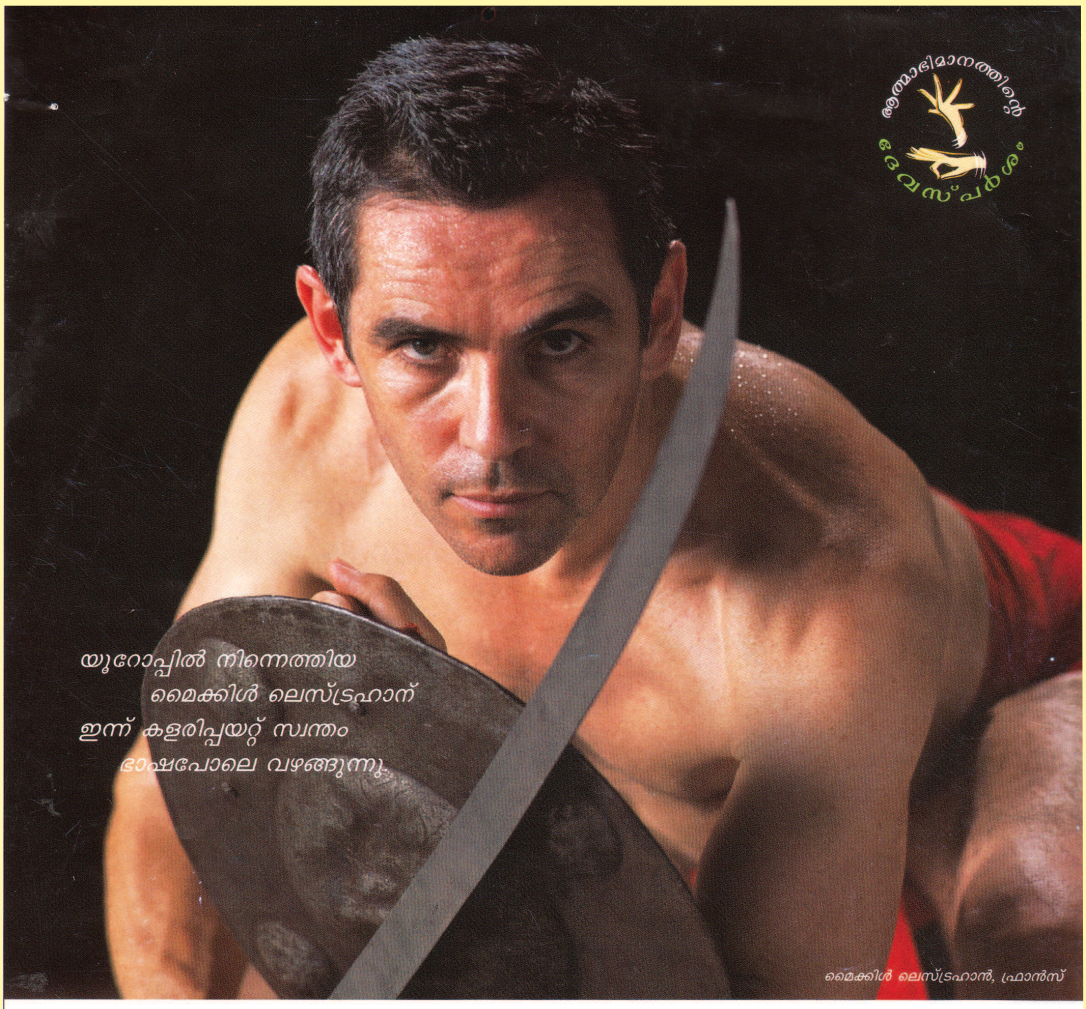

മൈക്കിൾ ലെസ്ട്രഹാൻ, ഫ്രാൻസ്

മുന്നൂറു വർഷം മുൻപ് അപരിചിതനായ ഒരു വിദേശി നമ്മുടെ ഭാഷയ്ക്ക് ആദ്യനിഘണ്ടു നൽകി. ഇരുന്നൂറു വർഷം മുൻപ് വിജ്ഞാനദാഹിയായ ഒരു വിദേശി നമ്മുടെ ജൈവവൈവിദ്ധ്യത്തെ ആദ്യമായി സമാഹരിച്ചു. പശ്ചിമഘട്ടത്തിന്റെ സുഗന്ധം തേടി വന്ന വിദേശികൾ നമ്മുടെ സംസ്കാരത്തിന്റെ വൈവിദ്ധ്യത്തിലേയ്ക്ക് ലയിച്ചു. നമ്മുടെ ദേശത്തെയും ഭാഷയെയും സംസ്കാരത്തെയും സ്നേഹിക്കുന്ന 58 ലക്ഷം സഞ്ചാരികൾ ഓരോ വർഷവും കേരളത്തിലേയ്ക്കു വരുന്നു. ലോകം, ഇന്ന് കേരളത്തെക്കുറിച്ചഭിമാനിക്കുന്നു. നിങ്ങളോ?

तीन सौ वर्ष पहले एक अपरिचित विदेशी ने हमारी भाषा को प्रथम शब्दकोश तैयार करके दिया। दो सौ वर्ष पूर्व एक विज्ञानप्रवीण विदेशी ने हमारी जैवसम्पत्तियों का प्रथमतः समाहरण किया। पश्चिमीघाट के सुगंध की खोज में आये विदेशीजन हमारी संस्कृति के आयामों में खो गये। हमारे देश को, भाषा और संस्कृति को चाहनेवाले ५८ लाख पर्यटक प्रतिवर्ष केरल आते हैं। सारी दुनियाँ आज केरल पर गर्व करती है। क्या आप भी?

kerala
God's Own Country
കേരളം - ദൈവത്തിന്റെ സ്വന്തം നാട്

STARK.Tvm.1326

Kerala Tourism Park View Trivandrum 695 033 Kerala India Phone: ++91-471-2321132 Fax: 2322279 Email: deptour@vsnl.com **www.keralatourism.org**

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

२ जनवरी २०१२ अंक, वर्ष १९, नं ५९, लक्ष्मीनगर, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम - ६९५ ००४

सम्पादक

डा० एन० चन्द्रशेखर नायर

संरक्षक

श्रीमती शांता बाई (बेंगलोर)
श्री. डी.शशांकन नायर
श्रीमती कमला पद्मगिरीश्वरन
डा० वीरेन्द्र शर्मा (दिल्ली)
डा० अमर सिंह वधान (पंजाब)
श्री. हरिहरलाल श्रीवास्तव (काशी)
श्रीमती के. तुलसी देवी (चेन्नै)

परामर्श-मण्डल

डा० एस.तंकमणि अम्मा
डा० मणिकण्डन नायर
डा० पी.लता
श्रीमती आर. राजपुष्पम
श्रीमती एल. कौसल्या अम्माल
श्रीमती रमा उण्णित्तान

सम्पादकीय कार्यालय

श्रीनिकेतन, लक्ष्मीनगर,
पट्टम पालस पोस्ट
तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४
दूरभाष-०४७१-२५४१३५५

प्रकाशकीय कार्यालय

मुद्रित : (द्वारा)
श्रीरामदास मिशन मुद्रणालय,
चेंकोट्टकोणम, तिरुवनन्तपुरम-८७
मूल्य-एक प्रति: २०.०० रुपये
आजीवन सदस्यता : १०००.००
संरक्षक : २०००.००

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका कहाँ कहाँ जाती है?

कन्याकुमारी, मैसूर-२, महाराष्ट्रा, मणिपुर, मद्रास-६, कलक्कता-२, नई दिल्ली (अनेक स्थान), गुन्डूर, त्रिवेन्द्रम (अनेक जगहें), बागपत (यु.पी.) उन्नाव (उ.प्र.), बिलासपुर (म.प्र.), गुंतकल, जबलपुर, इलहाबाद, अहमदाबाद, बिरख्रडी, जमशेदपुर, लातूर, हैदराबाद, रतलाम, देवरिया, गाजियाबाद, इम्फाल, चुडीबाज़ार, पीली भीत, फिरोजाबाद, अम्बाला, लख्रनऊ, बलांगीर, बिहार, पटना, गया, बांका, ग्वालियर, भगलपुर, देवधर, जयपुर, बनारस, तृशूर, आलप्पुषा, मेरठ केन्ट, कानपुर, उज्जैन, पानीपत, होरंगाबाद, सीतामठी पोस्ट, प्रतापगढ, सरगुजा, बिजनौर, भीलवाडा, सतना, रेलमंत्रालय, तिरुवल्ला, वर्कला, कोट्टयम, नई माही, ओट्टप्पालम, चेप्पाड, लक्किडि, नेय्याट्टिनकरा, कोषिकोड, पय्यन्नूर, कोल्लम, मान्नार, मंगलोर, पुरनपुर, पंजाब, विशाख्रपटनम

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय नई दिल्ली द्वारा निर्देशित जगहें :

तमिल नाडु:- अरुम्बाक्कम, तोरापक्काओ, मद्रास, चेन्नै-३२, क्रोमोपेट्टा, चेन्नै-२१, चेन्नै-२, चेन्नै-८, कान्चीपुरम, तिरुचिरापल्ली, तिरुचिरापल्ली-२, नोर्त अरकोट, ताम्बरम, कोयम्बतूर, सेलम, सेलम-२६, चेन्नै-३४, चेन्नै-२४, तिरुचिरापल्ली-२, चेन्नै-३०, कोयम्बतूर-४, चेन्नै-२८, चेन्नै-८६। **गुजरात:-** अहमदाबाद, बरोडा। **कर्नाटक:-** बांगलोर, चित्रदुर्ग, श्रीनिगेरी, मौंगलोर, मैसूर, हस्सन, मान्डीया, चिगमौंगलोर, षिमोगा, तुमकूर, कोलार। **महाराष्ट्रा:- मुम्बई,** कोलाबा-मुम्बई, मुम्बई-२०२, माटुंगा, मुम्बई-८, मुम्बई-८६, अन्देरी-६९, मुम्बई-२६, मुम्बई-८७, मुम्बई-२, औरंडगाबाद-३, औरंडगाबाद-२, औरंडगाबाद-१, नागपुर, रामटाक-नागपुर, सताना, नन्दगौन-नासिक, पूना, पूना-१, पूना-४, मानमाड-नासिक, चन्द्रपुर, अमरावती, कन्डहार, कोलहापुर, बानडरा, अकोला, नासिक, अहमदनगर, जलगौन, दुलिया, सांगली-कोलहापुर, षोलापुर, सतारा, सान्ताक्रूस, बारसी-४१३, माटुंगा, संगली-४१६। **वेस्ट बंगाल:-** कलक्कत्ता। **हैदराबाद:-** सुल्तान बाज़ार। **गौहाटी:-** कानपुरा। **नई दिल्ली:-** आर, के पुरम। गोवा:- मपुसा-५०७।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं हैं। सम्पादक

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका केरल विश्व विद्यालय से अनुमोदित पत्रिकाओं की सूची में शामिल की गयी है। (संपादक)

www.hindisahityaacademy.com

सम्पादकीय

केरल हिन्दी प्रचार सभा हीरक जयन्ती समारोह मना रही है!!

यह बड़े आनन्दकी बात है कि केरल की एक प्रतिष्ठित राष्ट्रीय संस्था के रूप में अति प्रख्यात बनी हुई केरल हिन्दी प्रचार सभा मार्च १५,१६,१७, २०१२ के दिनों में अपनी हीरक जयन्ती समारोह साघोष मना रही है! मेरे आनन्द के कई कारण हैं! आज सभा अपने बहु आयामी कार्य-व्यापारों से जो व्यस्त है उसे प्रारंभ काल के शान्त विद्यालय रूप में भली-भाँति परिचित था। विद्यालय का संबन्धित नाम भी अलग था। पर उसके संचालक के राष्ट्र-बोध एवं निर्भीकता के कारण उस समय भी, याने सन् १९४५ में भी आस-पास के जनों की दृष्टि में मान्यता-प्राप्त संस्था रही थी। वहाँ पढ़नेवाले विद्यार्थी भी समाज में माने जानेवाले रहे थे। संस्था के कार्य-कर्ता विद्वान के. वासुदेवन पिल्लै लोगों की दृष्टि में सम्मान्य व्यक्ति थे। उनके असंख्य शिष्य थे। उन दिनों वह विद्यालय अथवा हिन्दी सभा आयुर्वेद कालेज के पास और श्रीचित्र हिन्दुमत ग्रंथशाला के निकट थी। सन् १९४५ को मैं त्रिवेन्द्रम आया था।

श्री आर. जनार्दनन पिल्लैजी और श्री. के.वासुदेवन पिल्लैजी से परिचय पा लिया था। सन् १९४८ में श्री. वासुदेवन पिल्लैजी अपनी पाठ्य-पुस्तक के प्रचरणार्थ पुनलूर आये और मुझसे मिले। उनके अनुरोध पर आसपास के प्रदेशों के स्कूलों में किताब लगवा दी। उस समय मैं पुनलूर हाइस्कूल का अध्यापक था।

उन दिनों श्री. के. वेलायुधन नायर को वासुदेवन पिल्लैजी के निकटतम अनुयायी एवं सहयोगी के रूप में पाया था। आगे वषुतक्काट में केरल हिन्दी प्रचार सभा नाम से स्वतंत्र संस्था की स्थापना हुई। श्री. वासुदेवन पिल्लैजी के दिवंगत होने पर उनकी पत्नी सरोजिनी अम्मा सेक्रेटरी बनी और उनके भी निधव के पश्चात् श्री. वेलायुधन नायर ने सभा का कार्यभार ले लिया। कहने की आवश्यकता नहीं कि श्री. वेलायुधन नायर अपने मेधा एवं उत्साह तथा लगन से आधुनिक सभा की निर्मिति कर ली। वे केन्द्र सरकार के दो-चार मंत्रालयों की हिन्दी सलाहकार समिति में सदस्य मनोनीत हुए। हम दोनों कतिपय मंत्रालयों में एक साथ रहे थे। उसी काल में उन्होंने सभा की प्रोन्नति के लिए आवश्यक कार्रवाइयाँ जो कीं, उनका परिणाम अच्छा निकला।

के.वासुदेवन पिल्लै

आज सभा की अध्यक्षा डॉ.एस. तंकमणि अम्मा और सेक्रेटरि प्रोफसर के.केशवन नायर जी हैं। दोनों सभा को श्रेष्ठ अवस्था में देखनेवाले हैं। चेयरमेन श्रीमती अम्मा हिन्दी के क्षेत्र में सर्वत्र विश्रुत प्रोफसर हैं, जो साहित्य, संस्था का तकनीकी परिचय, सामाजिक व्यवहार में गहरा ध्यान रखनेवाली हैं और देश-विदेश की अनेक संस्थाओं से मिली हुई हैं। देश के असंख्य विश्व-विद्यालयों, यू.जी.सी. एवं असंख्य सरकारी मंत्रालयों से सम्बन्ध रखनेवाली और प्रतिभाधनी लेखिका एवं निपुण वक्ता हैं। उनके निदेशन में सभा की उन्नति जो होती है स्वाभाविक है। अपनी पूरी आयु उन्होंने प्रोफसरी में बिता दी थी। केरल विश्व-विद्यालय के हिन्दी-विभाग की प्राध्यापिका एवं विभागाध्यक्षा रह चुकी थी। उनके नेतृत्व में सुचारु रूप से सभा चलती है। यह एक विशेष लाभ है कि सचिव के. केशवन नायरजी भी सभा की श्रीवृद्धि बनाये रखने में सक्षम एवं कार्यशील हैं। सभा के कार्यायोग में प्रतिबद्ध रहनेवाले अनेक सहयोगी हैं जिनमें श्री के.जी.बालकृष्णपिल्लै जी (पूर्वाध्यक्ष) श्री. गोपन आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

आज हीरक जयन्ती प्रशस्त करनेवाली केरल हिन्दी प्रचार सभा का, आगे भी अपनी प्रशस्ति बनाये रखने का सौभाग्य बने रहे, यही मंगल-कामना है!!

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर

"मैं हिन्दी हूँ"

कविता

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर

मैं हिन्दी हूँ, जाया संस्कृत की दुलारी
थी बापू की कैसे प्यारी बनी सारे देश की।
बनी आसेतु हिमाचल स्वाधीनता-वाहिनी
पारखी के हाथ की सूत्रधारिणी
बाँध दिया एकत्व मंत्र गले पर
फूँक दिया जनहृदय में प्रणवंत स्वर
मैं बनी रुद्राणी का अमोघ शस्त्र
आजादी का अचूक अस्त्र
उस बापू का वरदान याद करती हूँ
जिसने फेंक दिया मुझे मुक्ति-पथ में
क्या कहना था फिर भारत के घर-घर में,
मेरा बोल-बाला होने लगा था।
कवि बने, विद्वान हुए
भारत पर साहिति सेवी हुए
ऊँचे गुम्बजों पर फहरी संस्कृति-पताकाएं
तुलसी-मीरा-सूर कबीर
निर्गुण भी सगुण भी धीर
रामानन्द रामानुज वीर हुए अनेकों
आचार्य वर समाज-संघर्ष ग्राम-शहर
राजनीति, आदर्श, भेद-अभेद
किं बहुना विषय-विषय विपुल
उनका समाधान प्रेमचन्द
गुप्त-शुक्ल-चौहान पंत भी
मेरा गुणगान करके थकित हुए।
निराला-नवीन-दिनकर
तारशब्दक भी बने विलक्षण
कवि गण गुए अनेक भारत भर
मेरे गुण गान किये केरल में भी
पर क्या हुआ, नहीं व्यर्थ
भाग्य मेरा बुलंद, व्यथा भी
देश-शासन मुझे क्यों
दुतकार देता है? आँखें मुँद लेता है?
मैं संसार भर की भाषाओं में
विनम्र, सक्षम, शास्त्रीय।
शालीन, देशीय संस्कृति की
गीतिका संपदा देश की
आधुनिक तकनीकी गुणों की
खान, देखले कोई शक्ति मेरी
पर मेरे देश का शासन
क्यों करता है मेरा अपमान
जबकि सारी दुनियाँ देती है मान
क्यों जानें मुझे गति हीन?
शासक भी नहीं जानते मुझे
न जानने में गर्व है,
चाहे होम मिनिस्टर हो चाहे रक्षा मंत्री,
विश्व भाषा बनाने का श्रम चल रहा है,
यहाँ मेरे प्राण बिन्दुजनों की कोई
परवाह नहीं, ध्यान आदर नहीं है
भीतर भगिनियों पर ध्यान है
मुझे भी उनकी प्रोन्नति में आनन्द हैं
क्यों न मैं उन सब को एक धागे में
पिरोकर भीतर सूत्र का काम न बना लूँ
जिससे मेरा देश अखण्ड बन सके।
राजनीति की जटिल व्यवस्था से
मेरा दुर्भाग्य हटनेवाला नहीं है
हमारे नेहरु नहीं सुभाष यदि
जिन्दा रहते तो बच जाती मैं हिन्दी।

www.drnchandrasekharannair

पाठकीय प्रतिक्रिया

सम्पादकजी, 17-12-2011

आपके द्वारा प्रेषित शोध पत्रिका का अक्तूबर २०११ अंक प्राप्त हुआ, धन्यवाद!

भारतीय भाषाओं में आदान प्रदान की अत्यन्त आवश्यकता है। डॉ. केशव फालके का लेख हिन्दी पर गहराता संकट विचारणीय हो हमें अपनी सोच को सकारात्मक बताया होगा। नयी पीढ़ी हिन्दी की-ओर आकर्षित हो इस बात पर विचार करता होगा।

डॉ. नरेन्द्र कोहली ने महाभारत का तीन पृष्ठ भूमि पर हिन्दी में महत्वपूर्ण कार्य किया है। डॉ. नायर हिन्दी व मलयालम की इसी प्रकार सेवा करते रहें। हम उनके दीर्घ जीवन की कामना करते हैं। शुभ कामनाओं सहित भवदीय,

डॉ. श्रीमती निर्मल सिंहल, संपादक जनभाषा सन्देश

आदरणीय डॉ. साहब, सादर नमन् २५-०५-२०११

नया अंक मिल गया। ऋषि अगस्त्य पर डॉ.एम. शेषन का आलेख शोधपरक एवं विचारोत्तेजक है। ऋषि अगस्त्य प्रचण्ड प्रतिभा के धनी तो है । यही मेरा मानना है कि उन्होंने तमिलवासियों को शस्त्र सज्जित कर समुद्री डाकुओं से उन्हें लड़ना भी सिखाया था जो नौकाओं से आकर तटवर्ती क्षेत्रों में अनाचार और लूटपाट करते थे। तीन चुल्लू में समुद्रपान की कथा का यही प्रतीकार्थ मुझे प्रतीत होता है। आपके चिरजीव महाकाव्य पर समीक्षा भी प्रभावी है। इस विषय पर लिखा गया यह हिन्दी का प्रथम महाकाव्य है। निरालाकी दलित कहानियों पर डॉ. चन्द्रभानसिंह का आलेख भी अच्छा है।

अन्य आलेख तथा रचनाऐं भी प्रभावी हैं। आप जिस निष्ठा और संकल्प के साथ इस पत्रिका का संम्पादन कर रहे हैं वह सर्वथा प्रशंसनीय हैं। विनयावनत, **डॉ.रामसनेहीलाल शर्मा, यायावर-डी.लिट. ८६, तिलकनगर, बाईपासरोडे, फीरोज़ाबाद २८३२०३**

ये भी शोधपत्रिका के आजीवन सदस्य बने (१०१)

श्रीमती रमा उण्णित्तान

जन्म : १७-१६-१९४५, पूजप्पुरा, त्रिवेन्द्रम

शिक्षा : हिन्दी पारंगत, भारती, साहित्य रत्न

रचना : लोक कथाएं, अंजना (उपन्यास हरिचरण वैद्य)। विष्णुप्रभाकर की कहानियों का मलयालम में अनुवाद। पारंपर्य स्पन्दन (पीढ़ीतरकविताएं)। अनेक पत्रिकाओं में लेखन। दि पब्लिक की त्रिवेन्द्रम लेखिका; रेडियों से सम्बन्धित।

संप्रति : कैलास, ९८६११/९८६/नलंदा, त्रिवेन्द्रम-३

ये भी शोधपत्रिका के आजीवन सदस्य बने (100)

डॉ. लीलाकुमारी अम्मा

जन्म : २५-०६-१९६७ आट्टिंगल में

शिक्षा : एम.ए. (केरल वि.वि.) एमफिल (कोचिन वि.वि.) पी.एच.डी. (केरल)

रचना : (१) एक पथबन्ध (उपन्यास-वैद्यनाथ मिश्र का आलोचनात्मक अध्ययन) (२) ललित निबन्ध पर अलोचना केरल वि.वि. के पाठ्यक्रम समिति (पी.जी.) में सदस्या

संप्रति : प्राध्यापक, एस.एन.कालेज, कोल्लम

ये भी शोधपत्रिका के आजीवन सदस्य बने (102)

डॉ. जाधव सुनील गुलाब सिंग

जन्म : १-९-१९७८

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी) नेट/विद्यावाचस्पति। (१) बलिराम पाटिल कॉलेज, किनवट में कुछ समय अध्यापन का कार्य (२) विगत ग्यारह वर्षों से यशवंत कॉलेज, नांदेड में अध्यापन का कार्य

सम्प्रति : अध्यापक, यशवंत कॉलेज, नांदेड में

प्रकाशित ग्रन्थ : (१) नागार्जुन के काव्य में व्यंग्य (२) मैं भी इन्सान हूँ

निर्माणाधीन ग्रन्थ : (१) अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में लगभग चालीस सोध आलेख प्रकाशित (२) सम्पादकीय समिति में नव प्रवाह अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका, रायपूर छत्तीसगड़ (३) सम्पादकीय परामर्श मंडल में "१५ डे" अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका, वाराणसी (४) विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में आलेख पठन

पुरस्कार एवं सम्मान : (१) हिन्दी अकादमी दिल्ली, एवं अहिन्दी भाषी हिन्दी लेखक संघ। (२) गंगा गौमुखी गौरव पुरस्कार

सम्पर्क : **महाराणा प्रताप हौसिंग सोसाइटी, हनुमान गड़ कमान के सामने, नांदेड-०५**

चलभाष : 09405384672/09850702763

ये भी शोधपत्रिका के आजीवन सदस्य बने (99)

श्रीमती सजिना पी.एस.

(अड्वोकेट बिनुमोन की पत्नी)

संपर्क : कलियिलिल पुत्तनवीड
पल्लिक्कल पी.ओ.,
मडवूर, तिरुवनन्तपुरम - ६९५६०२

सम्प्रति : शोध छात्रा, केरल वि.वि.

मोबाईल : 9846592341, 0470 2140880

गंगा दशहरा पर्व

मुस्लिम विद्वानों की दृष्टि में गंगा मइया

बद्री नारायण तिवारी

भारतीय अस्मिता की पहचान गंगा से होती है, हिन्दी साहित्य के महान कवि भागीरथी गंगा स्तुति में तल्लीन होते हुए कितनी भावपूर्ण रचना की जिनका नाम सैयद गुलाम नबी था और रसलीन उपनाम से बहुचर्चित हुए।

विश्नु जू के पग तें निकस संभू सीस बसि, भगीरथ तप तें कृपा करी जहान पैं.
पतितन तारिबे की रीति तेरी ऐसी गंगा पायी रसलीन आन्ह तेरेई प्रमाण पै.
कालिमा कालिंदी सुरसती अरुनाई दौड़, मेटि-मेटि कीन्हें सेतु आपने विधान पैं.
तोंही तमोगुन, रजोगुन सब जगत के, करिके सतोगुन चढ़ावत विमान पैं.

देश के सुविख्यात राष्ट्रीय शायर नजीर बनारसी भी गंगा के रंग में इतने डूबे थे कि उनकी प्रस्तुत पंक्तियां उसको प्रमाणित करने हेतु पर्याप्त हैं जो मध्य रात्रि के बाद की तथा प्रात: का दृश्य नजीर साहब की भावपूर्ण अभिव्यक्ति करती है:

अगर कभी आस दिल की टूटी लहर-लहर ने दिया सहारा/भरी है ममता से मां की गोदी नहीं हैं गंगा का ये किनारा जो थपकियां मौत दे रही है/तो लोरियां भी सुना रही है और इस तरह से कि जैसे मां अपने बालकों को सुला रही है। मिला है गंगा जल का जो निर्मल उत्तर के ऊषा नहा रही है/ हवा है रागिनी है कोई टहल के बीना बजा रही है।

प्रात: काल काशी नगरी के मंदिरों के कलश सूर्य किरणों से चमक रहे हैं/अंधेरे करते हैं साफ रसता सवारी सूरज की निकल रही है/ किरन-किरन अब कलस-कलस को सुनहरी माला पिन्हा रही है/है रात बाकी हवा के झोंके अभी से कुछ गुनगुना रहे हैं/अगर कथा कह रहे हैं तुलसी, कबीर दोहे सुना रहे हैं/अमर हैं तो संत और साधू जो मर के भी याद आ रहे हैं/जो काशी नगरी से उठ चुके हैं वो मन की नगरी बसा रहे हैं/पहन के आबे शां की साड़ी ख्रां है सीमाबवार गंगा/ख्रां है मौजें कि मां के दिन की तरह से हैं बेकरार गंगा/यहां नहीं ऊंच-नीच कोई उतारे है सबको पार गंगा/नजीर अंतर नहीं किसी में सब अपनी माता के हैं दुलारे/यहां कोई अजनबी नहीं है न इस किनारे न उस किनारे।

वाह, आगरा के तेजस्वी कवि वहीद बेग 'शाद' की कलम तथा ओजस्वी वाणी से कवि सम्मेलन में राष्ट्र भक्ति का ज़ज्बा छा जाता था, उन्होंने गंगा को किस रुप में देख्रा है-

इस मां ने बेटों को इतना प्यार दिया है। पाप विनाशी गंगा जैसा दरिया बहा दिया है।

भारत माता की धरती ने ऐसे लाल जने हैं, जिनने खेलों-खेलों में शेरों के दांत गिने हैं।

जब-जब इस धरती पर कोई विपदा आन पड़ी है। तब बेटों ने ख्रून दिया है इसकी लाज रख्री है।

गद्दारों को हरगिज़ सपने नहीं संजोने देंगे। कैसे अपनी मां के टुकड़े-टुकड़े होने देंगे।

शाद काश्मीर पर बच्चा-बच्चा कट जायेगा। अब भारत में कोई ख्रालिस्तान न बन पायेगा।

देश के स्वाधीनता वर्ष सन् १९४७ के रामनवमी महापर्व पर रामनौमी शीर्षक का मुस्लिम विद्वान जनाब सैयद मुहम्मद रिजवी मख्मूर द्वारा लिख्रा लेख्र आज ६२ वर्षों बाद भी राष्ट्रीय एकता और अखंडता की यह मशाल व वर्तमान समय में भी धार्मिक उन्माद के आतंकवाद के गहन अंधकार में भटकते समाज को भरपूर रोशनी दिख्राने में समर्थ होगा, उनके रामनौमी शीर्षक विस्तृत लेख्र की कुछ पंक्तियां ही भारतीय अस्मिता को रेख्रांकित करने के लिए पर्याप्त है:

"....जो मुझे अर्ज करनी है, यह है कि मैं गरीब भी आप सबकी तरह हिंदी हूं।"

हिमालय और विंध्याचल, गंगा और जमुना, पुष्कर और अजमेर, द्वारिकाधीश और जामा मस्जिद इलोरा के मार और ताज बीवी का रोना भारत मंदिर की मूर्तियां हैं और उन सब मतवालों की तरह, जो वतन का जमाल पूजते हैं, मैं भी इन देवताओं का पुजारी हूं, मैं भी इसी एक सरज़मीं का गेहूं ख्राता हूं, इसी का पानी पीता हूं और यहीं की हवा से मेरी जिंदगी कायम है, मेरा गोश्त, मेरी हड्डियां इसी जमीन की पवित्र मिट्टी की दूसरी शक्ल है, यहां के मुनाजिर, यहां तमछुना, यहां का साहित्य, यहां का आर्ट मेरे ख्रून में मिला हुआ है, मेरी फितरत का जुवा है यहां मेरा पैदायशी हक है... "रामायण सबसे पहले बाल्मीकि और फिर तुलसीदास ने लिख्री जहाँ तक रामचंद्र जी से मुहब्बत का ताल्लुक है, मुझे तो हिंदोस्तान का हर जीव हर वाशिंदा बाल्मीकि और तुलसीदास ही नजर आता है..." युवा कवि वाहिद अली वाहिद ने गंगा की उत्पत्ति से लेकर उसके महात्मा की कितनी सुंदर व्याख्या प्रस्तुत पंक्तियों में की है-

ब्रह्मा कमंडल से निकली तब रुद्र जटा में समा गयी गंगा,
राजा भगीरथ के तप से इस भारत भूमि पे छा गयी गंगा।
तारनहार कहाने लगी जनमानस के मन भा गई गंगा, थिश्व में देश कई थे परंतु, ये राम के देश में आ गयी गंगा।
माँ के समान जगे दिन रात जो, प्रात हुई तो जगाती है गंगा,
कर्म प्रथान सदा जग में, सब को श्रम पंथ दिख्राती है गंगा
संत असंत या मुल्ला महंतं सभी को गले लगाती है गंगा,
ध्यान, अजान, कुरान, पुरान से भारत एक बनाती है गंगा।
प्यारी हुई गुरुभूमि को सींच के थूल में फूल खिला रही गंगा,
घोर प्रदूषण को सहके अभी लाखों को वरि पिला रही गंगा।
ढीमर, केवट के परिवार को जीविका नित्य दिला रही गंगा,
बांट रहे कुछ लोग हमें पर विंध्य से बंग मिला रही गंगा।

कविवर वाहिद गंगा प्रदूषण को मानसिक विभाजन को सम्बद्ध कर उसे सदभाव में परिवर्तित करने हेतु हृदय स्पर्शी पंक्तियों में कहते हैं-

शरतचन्द्र आज दुनिया भर स्मरण किया जाता है। उसकी वीर मृत्यु का स्मरण उसके पिता और माता भी साभिमान करते हैं।

बात राम की करते हैं तो रमजानी की बात करें, या कुरान की बात करें तो गुरुवानी की बात करें।

वाहिद चेतावनी देते हुए सचेत करते हैं-

गंगा जल की बातें करते, स्वयं गटर में बैठे हैं, मरा आंख का पानी, जिनसे मत पानी की बात करें।

बस्ती जनपद के श्रमजीवी कविवर रहमान अली रहमान ने रामकथा के गंगा तट पर सुमंत शीर्षक रचना के मार्मिक प्रसंग की कुछ पंक्तियों में व्यक्त हैं-

...कुछ लौट चले थोड़ा चल कर, कुछ ने तमसा को पार किया।
शेष को छोड़ चले सोते, प्रभु ने ऐसा व्यवहार किया।
फिल पहुंच गये गंगा तट पर, केवट को प्यार अपार किया, मैं रहा देखता खड़ा-खड़ा तीनों ने गंगा पार किया।

वर्तमान रचनाकार भी अपनी रचनाओं में गंगा जी को स्मरण करते रहते हैं, युवा शायर जावेद गोंडवी के शब्दों में-

सारे हिंदोस्तां की दीपावली हो जायेगी, प्यार के दीपक जलाओ रोशनी हो जायेगी।
अपनी आशाओं पर टपकाते रहो गंगा का जल, एक दिन सूखी हुई डाली हरी हो जायेगी।

राष्ट्रीय कवि दीन मुलम्मद दीन का भारत प्रेम राष्ट्रीय एकता के भावों से कितना ओत-प्रोत है, जिसमें उनका स्वदेश प्यार कण-कण में व्याप्त हैं।

गीता, रामायण हो या फिर हो कुरान की वाणी, प्रेम सहित रहना सिखलाये करे न वह मनमानी।
नदियों का पानी अमृत है पावन गंगा जल है, पग-पग जिसका पूजनीय है वंदनीय हर स्थल है।

बहुचर्चित साहित्यकार राही मासूम रजा सुविख्यात राष्ट्रीय शायर के रूप में विख्यात है। 'महाभारत' धारावाहिक से वह जन-जन में रच बस गये थे। भारत के 'रामायण' तथा 'महाभारत' जैसे दो कालजयी महाकाव्य उसकी अस्मिता की पहचान हैं। उत्तरप्रदेश के गंगा तट पर बसे गाजीपुर के असीम प्यार ने राही मासूम रजा की इन हृदय स्पर्शी पंक्तियों में गंगा मइया के प्रति किस समर्पित भाव से काव्यांजलि प्रस्तुत की गई है-

मुझे ले जाके गाजीपुर में गंगा की गोदी में सुला देना, वो मेरी मां हैं, वह मेरे बदन को जहर पी लेगी।
जहां से मुझको गाजीपुर ले जाना, न मुमकिन हो तो फिर मुझको, अगर शायद वतन से दूर, इतनी दूर मौत आये, अगर उस शहर में छोटी सी इक नदी भी बहती हो।
तो मुझको उसकी गोदी में सुलाकर उससे कह देना कि यह गंगा का बैटा आज से तेरे हवाले है।

बहुभाषा विद् अब्दुल रहीम ख़ान ख़ाना 'रहीम' नाम से बहुचर्चित हैं, रहीम मुगल काल में प्रधानमंत्री तथा सेनापति थे, वह संस्कृत, फारसी, अरबी, तुर्की तथा हिंदी के विद्वान तथा काव्य सृजन में अग्रिम पंक्ति के महाकवि एवं विश्व कवि संत तुलसीदास के घनिष्ट मित्रों में थे, उनकी संस्कृत में रचित भावपूर्ण पंक्तियां हैं-

अच्युतचरणरंगिणि मदनान्तकमौलि मालती माले, त्वयि तनुवितरणसमये हरता देया न में हरिता। (१)
चिरं विरंच्चि विष्णु पूज्य पाद वारि धारिणी, प्रतापकेतु पट्टिम्बुयटिका विहारिणी।
शशांक्कान्तिपूरकेण पापकूद कंदिनी, जगत् त्रिदोषतस्तुनं पुनातु ज नुनंदिनी। (२)
शिवोत्तमांगवेदिका विहार सौख्य कारिणी, ततो भगीरथांग-संडगमर्त्य लोग चारिणी।
त्रिमार्गगा, त्रितापहा त्रिलोक शोक खंडिनी, जगत् त्रिदोश्तस्ततुं पुनात जहन्नुन्दिनी। (३)
हिमाद्रि कन्दरा बिहार सिद्धचारणांगनः, सुगीतमृत्यतालभेज काम केलि नंदना।
सकुन्जपुन्जनबन्जुजलप्रफुल्लसून गान्धिनी, जगत् त्रिदोषतस्तनुं पुनातु जहन्नुन्दिनी। (४)
चकोरचक्रवाकहसवृन्दकूल राजिता, मृगाल खंड धूमवायुपूत सत्त्वंसंजिता।
शवांग गंधपूतहरि-वारि-वारि सन्दिनी, जगत् त्रिदोषतस्तनुं पुनातु जहु नन्दिनी (५)
रसालवेतसीतमाल सालकुजपावनी मयूर कोकिल प्रमत्तीर शोभितावनी।
अनेक देश कूलवात काल भीति दंडिनी, जगत् त्रिदोषतस्तनुं पुनातु जहु नन्दिनी।
नेरंद्र पुत्रमुक्तिदा सुरेंद्र लोक साधनम् (६)
स्वसेवकाय दात्रिका मृतं सुमित्रकं धनम्, नदीशपूर संगममेन विश्व ताप कंदिनी।
जगत त्रिदोषतस्तुनुं विलोल विचिदीलितम्, नवप्रवाहसंचलद् विलोल विचिदीलितम् (७)
श्वमीन कंककचितं श्रृंगाल, वाकभक्षितम्, नरं विलोक्य सादर विवुंठ लोकगामिनं,
वदनित देवि? देवता भृश त्वपदीपविस्मयम्, विदेहि देवि मेमति त्वदीय वारि रवने। (८)
शुभते तरे कदा प्रतीतिरस्तु एवंबुधे, तवाम्बुपानमादरात्कुप्यति प्रतिक्षणं, त्वदीय वीचि मीक्षितः तुयातु देवि में निदम, मुरारि वादसेविना विरामखानसूमुना (९)
सुभाष्टक शुभं तं मया गुरु प्रभावतः पठेदिदं सदा शुचिः
प्रभातकाल तस्य तः, लभेत वांछितं फल स जाहवी प्रभावतः (१०)

नई पीढ़ी और पुराने मूल्य

रमा उण्णित्तान

भारत में जितने ही अवतार पुरुषों के जन्म हुए हैं उन में भगवान श्रीकृष्ण, स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण परमहंस आदि-आदि प्रमुख हैं। सहस्रों वर्ष पहले दो महान व्यक्तियों का जन्म हुआ था। उनके जीवन की छाप भारतीय जीवन पर खूब पड़ी। एक द्वैपायन कृष्ण अर्थात् महर्षि वेदव्यास, दूसरा श्रीकृष्ण।

महर्षि वेदव्यास की अमूल्य रचनाओं से भारतीय जनजीवन प्रभावित हुआ। भिन्न होते हुए भी एक ही लक्ष्य पर आगे बढे। भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का सुन्दर आख्यान, गीता के महान तत्वोपदेश और महाभारत के धर्मयुद्ध ये सब आज भी भारत के कोने-कोने में जानेजाते हैं। धार्मिक जीवन ही भारत की एकता का सूत्र मान लें तो जन जीवन की गति-विधि को नियन्त्रित कर लक्ष्य की ओर ले जानेवाला आकाश- दीप है गीता।

प्राचीनकाल में भारत का जनजीवन धार्मिक शिक्षा पद्धतियों पर आधारित था। लेकिन आज सब उलट-पुलट हो गया है। भारतीय इतिहास पर विहग वीक्षण करनेवाले बाहर के लोगों को आज की सभी घटनायें जो राजनैतिक हो, सामाजिक हो, शैक्षणिक हो या सांस्कृतिक हो, जो भी हो हंसी मज़ाक मात्र ही है, क्यों कि शताब्दियों के विदेशी शासन प्रधानतः अंग्रेज़ी शासन और उसके पहले का पठान, मुगल, पुर्तगल, फ्रानसीसी शासन सब ने मिलकर भारतीय एकता के और अखण्डता के महान स्वप्न को रंक्तरंचित, जटिल व संकीर्ण बनाया था। इसलिए विदेशियों से रचित पर्दे से सच्चाई में एक भारतीय नवयुवा को भी भारत का यथार्थ रूप अपने पितृ-प्रपिताओं का यथार्थ रूप न दिख्राई पड़ता।

इस पृथ्वी पर भारत वासियों का स्थान कहाँ है? इस प्रश्न का उत्तर इतिहास नहीं दे सकता। हमारे नौजवान, अंग्रेज़ी शिक्षा-रीति के ज़रिए ऐसे हो गये हैं कि अपने देश के साथ निजी संबन्ध को हीन समझते हैं। इसलिए, देश की ममता छूट गयी है। माता-पिता और गुरू से अविनय होती गयी। अंग्रेज़ी शिक्षा के प्रभाव से हमारे नौजवानों की संस्कृति उनकी देन बन गयी है। इसलिए आचार-विचार, ख्रान-पान, चाल-ढाल, रहन-सहन जो भी जीवन के अंग हैं सब विदेशियों से स्वीकार करने की इन बातों से हमें इस निर्णय पर पहुँचना पड़ता है कि घने अन्धकार में टटोलते नौजवानों को पूर्व की ओर, उदय सूर्य की ओर आकर्षित कर, ठीक रास्ते से आगे बढ़ाने के लिए महान पुरुषों के, आदर्शों पर प्रकाश डालने वाली नई शिक्षा पद्धति भारत भर को स्थाई रूप से लागू करना वांछनीय है।

स्वामी विवेकानन्द, राजा राममोहनराय, तिलक, स्वामी दयानन्द सरस्वति आदि लोगों ने भारत की जनता की आत्मशक्ति को जगाया। सर्वप्रथम भारत के गौरव व शान, सभ्यता व संस्कृति का विलायतों में असर डालने का श्रेय स्वामी विवेकानन्द को ही है। उन्होंने अमेरिका, कानडा, लन्दन, जर्मनी आदि देशों का पर्यटन करके दार्शनिक भाषणों के द्वारा भारत को संस्थापित किया। संस्कृति एक स्वयंभू वस्तू है। जैसे-जैसे आदर्श व्यावहारिक रूप धारण करते है वैसे तो संस्कृति बनती जाती हैं। समय के अनुसार संस्कृति में परिवर्तन होता रहता है। नई पीढ़ी को चाहिए कि वह पुरानी और नई दोनों संस्कृतियों की अच्छी बातें अपने जीवन के लिए ग्रहण कर विकास के पथ पर बढती रहें क्योंकि भारतीय संस्कृति का मूल आधार त्याग और संमय है।

रमा उण्णित्तान, कैलास, टी.सी.११/९८६, नालन्द, नन्दनकोड, तिरुवनन्तपुरम-६९५००३. फोन: ९२४९२३०६१९

मुस्लिम विद्वानों की दृष्टि में गंगा मइया...

ख्रानख्रानाकृतं गंगाष्टक संपूर्णम्।

अर्थात् "गंगे तुम्हारी महिमा अनंत है, तुम्हारी महिमा से मरणोपरान्त भक्तजन विष्णु और शिव पद प्राप्त कर लेते हैं। लेकिन तुम मुझे विष्णु रूप न बनाना क्योंकि विष्णु रूप बनाने पर तुम चरणों से निकलनेवाली नदी कहलाओगी। जो उचित नहीं है। अतएव तुम मुझे शिवरूप ही बनाना ताकि मैं तुम्हें आदर के साथ मस्तक पर धारण कर सकूं। यह 'गंगाष्टकम' संस्कृत रचना किसी हिंदू धमाचार्य द्वारा न हो कर इस्लाम धर्म अनुयायी बहुभाषा विद् अब्दुल रहीम ख्रानख्राना द्वारा रचित है। इसके अतिरिक्त काशी से प्रकाशित संस्कृत पत्रिका 'विश्ववाणी' के संपादक प्रवर संस्कृतज्ञ पं. गुलाम दस्तगीर विराजदार: ने गंगा जी पर वर्तमान समय में काफी लिख्रा है। अंत में अमर शहीद अशफाफ उल्ला ख्रा वारसी 'हसरत' ने भी फूल माले की तरह फैजाबाद जेल में अपने गले में फांसी का फंदा पहन कर बलिदान के पूर्व हिंदी में लिख्रा था जिसमें 'गंगा मइया' के साथ उसके मूल स्थान 'गंगोत्री' को भी याद रख्रा।

'हे मातृभूमि! तेरी सेवा किया करूंगा, फांसी मिले भले ही या जन्मकैद मुझको बेड़ी बजा-बजा कर तेरा भजन करूंगा।'

'भजन' शब्द में उन्हें कभी 'कुफ्र' देख्रना गवारा न हुआ उन्होंने यह भी याद दिलाया कि-

'गंगा' स्थान 'गंगोत्री' का पवित्तर, पिधौरा की लाट और उदयपुर का दफ्तर, हिमालय की वे चोटियां सिर उठा कर एक आवाज से कह रही हैं बराबर कि 'जब तक हैं हम, इनको मरने न देंगे।'

गीता, रामायण हो या फिर हो कुरान की वाणी, प्रेम सहित रहना सिख्रलाये करे न वह मनमानी।

नदियों का पानी अमृत है पावन गंगा जल है, पग-पग जिसका पूजनीय है वंदनीय हर स्थल है।

संपर्क: मानस संगम, प्रयाग नारायण शिवाला (मंदिर), कानपुर-२०८००१

"मैं हूँ वीर प्रसू माँ भारत"

राजपुष्पम, निदेशक,
हिन्दी विद्याभवन, शास्तमंगलम

मैं हूँ वीर प्रसू माँ भारत
मेरी कोख़ में जन्म लिया है
अनमोल अनेक नवरत्न जैसी सन्तानों ने
वे मुझे आर्ष भारत नाम देकर
उसकी पवित्रता को कायम रखने
सदा जागरूक रहते थे वीर बेटे
न चिन्ता न सोच अपने बारे में
करते थे दिन-रात मेरी ख़ातिर सेवा
कूद पडे आज़ादी की लडाई की लहरों में
बापूजी के नेतृत्व में अनेक महानुभावों ने
बचा लिया मुझे दुष्टों को भगाकर श्रद्धा से
पहले से भी ज़्यादा मज़बूत खडा किया
मेरे एक भी वीर सपूत जब तक मेरे साथ हैं
मुझे न भय न निराशा है न कोई डर
यह सच्ची बात है वह सजाकर रखेगा मुझे
इसे कोई धर्म या जाति के नाम पर
नष्ट न कर सकेगा यह निश्चित बात है
क्योंकि मैं हूँ वीर प्रसू माँ भारत जिसने,
युग-युगों से सारी दुनिया को ज्ञान का
सबका सिखा-सिखाकर शान्ति दी है
अत: मैं खडी हूँ इन यातनाओं के साथ भी
मुझे पूरा विश्वास है वीर सपूतों पर
वे बनायेंगे नव भारत और सजाऐंगे नव-भारत
वह इसलिए कि मैं हूँ बीर प्रसू माँ भारत

"नव वर्ष मंगलमय हो"

रामकुमार वर्मा, प्रतापपुर चौक,
अम्बिकापुर, छत्तीसगढ़, भारत

लक्ष्मी माता द्वार विराजे, कलम में वीणा वाली माँ।
भुजा में तेरे दुर्गा माता, मंजिल दे महाकाली माँ।।
नव वर्ष की पावन वेला में इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ-
मांग ले बंदे जो चाहे तू, जाने वाला देता हैं।
वर्ष पुराना द्वार से तेरे, आज विदायी लेता है।।
दिसम्बर तुझसे मांग रहे हैं, देना मुझको यह उपहार।
नए वर्ष में दूर हो सके, भारत में फैला भ्रष्टाचार।।
जाते-जाते तुम्हें यह दुआ दिये जा रहा हूँ।
तुम्हारे देश के अंधेरे मैं लिये जा रहा हूँ।।
अमृत का प्याला सौप के उसको।
विष का प्याला मैं पिये जा रहा हूँ।।
रहमत की बारिस और ख़ुशियों का पिटारा है।
यह नया वर्ष हमारा है, यह नया वर्ष हमारा है।।
कुछ-कुछ अरुण सुनहली, कुछ-कुछ प्राची की क्या भूषा है।
नव-वर्ष में द्वार पे तेरे, स्वयं खड़ी क्या उषा है।।
एक हाथ में मंजिल उसके, दूजे में पावन सा प्यार।
दोनो हाथों लेकर आया, देनें तुझको यह उपहार।।
नव वर्ष में हम वक्त के सम्मान का संकल्प लें क्योंकि-
वक्त तेरा इंतजार करेगा, क्या वह तेरा गुलाम है।
एक हाथ में जन्नत जिसके, दूजे में शमशान है।।

लाया-नववर्ष ब्रह्माण्ड-रहस्य...!!!

डॉ. मधु धवन, के-३,
अन्नानगर ईस्ट, चेन्नै-६००१०२.

नई सहस्राब्दी का बारहवाँ वर्ष आया है
नवीन दिशाओं की खोज-खबर लाया है
लाया है - असंख्य मनभावन कामनाएँ
फलती-फूलती दिलखुश योजनाएँ
षंजर में नवीनतम शैली की इमारतों की योजनाएँ
चट्टानों को बुत बनाने की योजनाएँ
बुत ऐसे जो सदियों तक करेंगे
कला प्रदर्शन खुले आम
संस्कृति फिर पहनेगी नूतन परिधान।
नई सहस्राब्दी...
नववर्ष की खुशियाँ समेटे अभिनंदन करती
आएगी पहली किरण
अहलादित करेगी कण-कण
रोमांचित होगा तन-मन
भरेगा नव स्पंदन नव-चेतन
शिक्षा में क्रांति की नवीनतम लहर
कदम-कदम पर इलैक्ट्रानिक की खबर
नई सहस्राब्दी....
आगाभी पीढ़ी हितार्थ कमाल-ही-कमाल
खेत-खलिहान होंगे अद्‌भुत मिसाल
नई पौंध नई फसल उगेगी
लहराएगा स्वर्ण-धान मोती जड़ा मक्का
पीली-पीली लहरी चुन्तरिया समं
सरसों भरे खेत लहराएँगे
ट्रेक्टरों से हल जोतेंगी बालाएँ
धान काटेंगे मिल बाल-बालाएँ।
नई सहस्राब्दी....
कार्यक्षेत्र को नया आयाम मिल जाएगा
किसानी-मजदूरी से कोई नहीं कतराएगा
ग्रामवासी-आदिवासी के होंठो पर
नए-नए गीत थिरकेंगे
भरेगा जीवन-राग गॉड पार्टिकल शोध के साथ
हृतंत्री मानव की बजेगी बार-बार
ब्रह्माण्ड का रहस्य खुल जाएगा
मानव-जीवन सफल हो जाएगा
नववर्ष आया है
ब्रह्माण्ड रहस्य लाया है... लाया है....!!! ●

ये भी शोधपत्रिका के आजीवन सदस्य बने (98)

रीजा आर.एस. (श्री. एस. राजप्पन की पुत्री)

जन्म	:	२०-७-१९८२
संपर्क	:	जोणी भवन, विष्णुवूर, मलयम पी.ओ., तिरुवनन्तपुरम-६९५५७१
भाषा परिचय	:	हिन्दी, मलयालम, अंग्रेज़ी
परीक्षाएँ	:	एम.ए., बी.एड़. साहित्यरत्न, अनुवाद कार्यालय पत्राचार तथा पत्रकारिता
संप्रति	:	केरल विश्वविद्यालय में शोध-छात्रा
मोबाईल	:	9388676710

गली और जन

कुलशेखर कुरुप
मन्नाडियिल, कोटुवल्लूर पी.ओ., चेड्डन्नूर

एक गली सौ लोग हैं सारे
बीस मकान दस झोंपडी न्यारी
जात उपजात पहचान से सब जन
अलग अलग है, नीति अलग है।
खाना अलग पहिनावा अलग, सोच
संस्कार अलग बसा संसार अलग
दृष्टि अलग परिभाषा अलग,
विचार
आचार सभी भिन्न भिन्न त्योहार।
हिंसा वही अहिंसा भी वही कुछ
पंडित भी कोई पाखंड भी
मंदिर अलग ईशोपूजा अलग न्याय
सिद्धांत वैभव सब सब अलग
हर घर में भाई चारा है अंदर से
दरवाजा बंद है खिडकी विशाल है
सब कुछ जमाकर वे भोग रहे हैं हर
घर एक राज्य है, भोग का
लालसा का

विदा-गीत

डॉ. राम सनेही लाल शर्मा यायावर, डी.लिट. ८६,स
तिलकनगर, बाईपास रोड, फीरोजाबाद-२८३२०३

है बन्धु! विदा का क्षण आया
सुख भी थोडा दुख भी लाया
तुम साथ छोड़कर जाते हो पीड़ाएं मन
में जाग उठीं
जाने-अनजाने जो की हैं त्रुटियां वे क्षमा
सब मांग उठीं
हम साथ-साथ हंसते थे कल
छंट गये उदासी के बादल
तुम आज अकेला छोड़ चले कैसा
दुख यहभीषण आया
है बन्धु! बिदा का क्षण आया
पाओ जीवन का लक्ष्य नया संक्ल्पों से
इतिहास गढ़ो
हर पथ पर नये फूल बिखरें जब
भी तुम पथ पर चलो बढ़ो
कर्तव्यों की भाषा मानो
जीवन की परिभाषा जोनो
कल तक जिसकी तैयारी थी अब
वही परीक्षा रण आया
है बन्धु! बिदा का क्षण आया

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का ३१ वाँ वार्षिक रिपोर्ट

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का ३१ वाँ वार्षिक सम्मेलन अक्तूबर १९-१०-२०११ अपरान्ह २.३० बजे सरकारी पब्लिक लैब्रेरी के विशाल हॉल में मनाया गया। श्रीमती आर. राजपुष्पम के प्रार्थनागीत के साथ सम्मेलन की शुरुवात हुई। अकादमी के महामंत्री डा.एस.तंकमणी अम्मा ने स्वागत भाषण किया। अकादमी चेयरमान डा.एन. चन्द्रशेखरन नायर ने अध्यक्षीय भाषण द्वारा अकादमी की ३१ वर्षों की उन्नति के बारे में सदस्यों को खूब जानकारी प्रदान की। माननीय देवस्वम बोर्ड मंत्री श्री. वी.एस.शिवकुमार ने वार्षिक सम्मेलन का उद्घाटन अकादमी की खूब प्रशंसा करके किया। अकादमी मंत्री श्रीमती आर.राजपुष्पम ने अकादमी का वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत किया।

श्री. कुंजीकृष्णन जी ने (पूर्व दिल्ली दूरदर्शन केन्द्र निदेशक) डा. एन.चन्द्रशेखरन नायर के नाम पर तैयार किया हुआ डोकुमेंटरी (गुरुसागरम) का प्रकाशन निम्स यूणिर्वेसिटी के पी.वी.सी. डा.फैसलखान को देते हुए किया। उनका भाषण भी हुआ था।

फिर डा.एम.के. रामचन्द्रन ने (पूर्व केरल विश्व विद्यालय वी.सी. और चेयरमान मेनेजमेंट स्टडीस ने (नूरुल इस्लाम विश्व विद्यालय) डा.चन्द्रशेखरन नायर के नाम पर अपने विश्व विद्यालय में स्थापित चेयर संबन्धी प्रमाण पत्र को प्रदान किया।) (निम्स यूणिवेसिटी ने डा. चन्द्रशेखरन नायर के नाम पर एक अकादमिक चेयर स्थापित किया)। राष्ट्रभाषा हिन्दी की बढ़ती उपयोगिता को मानकर निम्स के उच्चशिक्षा प्राप्त उपाधि-धारियों को हिन्दी और हिन्दी साहित्य का ज्ञान प्राप्त कराना निम्स का लक्ष्य है। फिर डा.एम.के. रामचन्द्रन नायर डा.फैसलखान (एम.डी. निम्स मिड़िसिट्टी, पी.वी.सी. नूरुल इस्लाम विश्व विद्यालय) डा.एम.आर. तंपान (निदेशक, भाषा इंस्टिट्यूट) डा.टी.पी.शंकरनकुट्टि नायर आदियों ने निम्स के द्वारा स्थापित डा.एन.चन्द्रशेखरन नायर के चेयर के और अकादमी के बारे में विस्तृत भाषण दिए।

फिर स्टेट बैंक, पूजप्पुरा के महाप्रबन्धक श्री.संजयसिंह ने साहित्य पुरस्कार पाँच-पाँच हज़ार डा.मनु (श्रीशंकराचार्य वि.वि. कोईलांडी) के "हम इन्तज़ार में हैं" नामक मौलिक रचना को और डा.मणिकंठन नायर (प्रो.एम.जी.कालेज त्रिवेन्द्रम) के "सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के गद्य में राजनैतिक व्यंग्य" नामक शोध ग्रंन्थ को प्रदान किया।

अकादमी पुरस्कार पाँच हज़ार रुपये और प्रशस्तिपत्र डा.पी.आर. हरीन्द्रशर्मा (दूरदर्शन केन्द्र के राजभाषा विभाग अध्यक्ष, त्रिवेन्द्रम) को अकादमी चेयरमान डा.चन्द्रशेखरन नायर ने प्रदान किया।

इसके उपरान्त १५ कालेजों के पुरस्कृत छात्र छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। प्रत्येक कालेज को १५०० रुपये का पुरस्कार दिया गया।

श्री. के राजेन्द्रन (मानेजिंस ट्रस्टी, यवनिका पब्लिकेषनस) ने मंगलाशंसाएं अर्पित कीं। केरल हिन्दी प्रचारक समिति के महामंत्री श्री. एम.नाज़र ने अकादमी की बढ़ती प्रगति पर प्रशंसात्मक भाषण दिया। फिर डा. कुलदीप सिंह चौहान ने (हिन्दी प्रबन्धक एस.बी.टी, पूजप्पुरा) सदस्यों को कृतज्ञता ज्ञापित की। प्रोफसर पी.लता (विमनस कालेज, त्रिवेन्द्रम) संचालक रही थीं।

विशाल हॉल में अकादमी में प्रतिमास भारत भर से आनेवाली लगभग १५० पत्रिकाओं को सुसज्जित रख्रा था। साथ ही चेयरमान डा.चन्द्रशेखर नायरजी के चुने गये ६० ग्रन्थों की भव्य प्रदर्शिनी भी थी।

सभा में उपस्थित डेढ सौ प्रेक्षकों केलिए चाय सत्कार की भी व्यवस्था की गयी थी। शाम को साढ़े छः बजे राष्ट्रगीत के साथ साथ समारोह का सुन्दर समापन हो गया।

मंत्री, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी

एक ज़मीन अपनी: एक सामान्य परिचय

सजिना पी.एस.

चित्राजी बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न साहित्यकार है। उनकी लेखनी ने उपन्यास, कहानी, लघुकथा, निबन्ध, बालसाहित्य, आदि साहित्यिक विधाओं को अपने लेखन का विषय बनाया है। 'एक ज़मीन अपनी' का कथात्मक परिचय प्रस्तुत है।

१. एक ज़मीन अपनी: विज्ञापन की दुनिया में अपनी ज़मीन की तलाश में स्त्री

'एक जमीन अपनी' चित्राजी का १९९० में प्रकाशित प्रथम उपन्यास है, जो मध्यवर्गीय कामकाजी महिलाओं की अस्मिता की सफल-असफल तलाश की विभीषिका को यथार्थ रुप में उघाडता है। "प्रस्तुत उपन्यास अपने कथ्य में इतना संश्लिष्ट है कि उसे केवल महिला-लेखन के सीमित अनुभव वृत्त का उपन्यास नहीं कहा जा सकता अपितु वह एक ऐसे पुरुष प्रधान समाज और उसके विशिष्ट क्षेत्र का परिचय देता है जिसके केन्द्र में नारी है।" [1] अंकिता को केन्द्रित कर और माँडलिग की दुनिया पर लिखे गये इस उपन्यास में एक स्वाभिमानी स्त्री के यथार्थ जीवन के कटु एवं भीषण संघर्षमय पक्ष को उजागर किया गया है। घरवालों के विरोध के बावजूद प्रेम - विवाह करनेवाली अंकिता पति सुधांशु के असह्य व्यवहार से त्रस्त है। उसे अहसास होता है कि पति के घर में वह महज एक नौकरानी बनकर रह गई है, उसे लगता है, "मैं सिर्फ गृहिणी नहीं हूँ.... एक स्त्री भी हूँ... आख़िर सुबह के रात के बीच कोई एक क्षण ऐसे नहीं हो सकती, जिसे मैं नितांत अपने लिए जी सकूँ.... कागज़ कलम लेकर बैठ सकूँ। जो पढ़ना चाहती हूँ, पढ सकूँ... लिखना चाहती हूँ, लिख सकूँ, क्योंकि सुघांशु को लगती है, यह मेरा घर है... और यहाँ तख्ती वही लटकेगी जैसे मैं चाहूँगा... और सुधांशु ने उसकी कविताओं की कॉपी चिथडे-चिथडे कर कूडेदान में फेंक दी थी। वह फटी-फटी आँखों से उन चिथडों को घूरती रह गई थी... उसे लगा था, यह कविता की कॉपि के चिथडे नहीं है, उसके 'स्व' को चिंदी-चिंदी कर कूडेदान में फेंक दी थी। वह फटी-फटी आँखों से उन चिथडों को घूरती रह गई थी... उसे लगा था, यह कविता की कॉपि के चिथडे नहीं है, उसके स्व को चिंदी-चिंदी कर कूडेदान में फेंक दिया गया है और अब वह अपने होने को अधिक अनदेखा नहीं कर सकती"।[2] अंकिता उससे रिश्ता तोडकर अपने पैरों पर खडे होने का कठोर संकल्प करती है। अंकिता विज्ञापन जगत में अपना करियर बनाने का प्रयास करती है। मुंबई जैसी चमक-दमक, अपराध और सेक्स के तांडव की नगरी में विज्ञापन फिलमों की चक्रव्यूह में फँसकर भी किस प्रकार अपने अस्तित्व, चरित्र को बचाकर रहा जा सकता है, इसकेलिए कितने संकट झेलने पडते हैं, कैसी अग्नि परीक्षाएँ देनी पडती है, मनुष्य रुपी कैसे-कैसे खूँख्वार भेडियों से जुझना पडता है, अंकिता इसका आदर्श स्थापित करता है। घर में वह अपने पति से टकराती है, अपना मायके में भैया, भाभी और माँ की रुढिवादिता से, माँ की मृत्यु के बाद मायके में पारिवारिक संपत्ति के अपने हिस्से को त्यागकर उससे संबन्धित कलह से उबरती है। विज्ञापन फिलमों की अपनी सहयोगी हीरोइन नीता को उसकी धनलोलूप प्रवृत्ति के लिए लताडती जिसके नीता थौन शोषण का शिकार बनी है। अंकिता कला निर्देशकों की कामुकता, उनके द्वारा किये जाने वाले थौन शोषण का प्रतिकार करती है। कला के नाम पर इस देह - भोग का घोर विरोध करती है। वह जानती है कि, विज्ञापन फिल्मों का सारा व्यापार बेईमानी और सेक्स के बेतू पर चलता है"।[3] इसलिए वह एक विज्ञापन एजेंसी की प्रबन्धक होने पर इस प्रवृत्ति की रोकथाम के लिए निर्देशक और मालिक को लताडती है। "वह अश्लीलता का आश्रय लेकर उत्पाद को बेचने के विरुद्ध है, अपनी एजेंसी को वह 'चकला' नहीं बनाना चाहती।"[4]

उपन्यास की दूसरी प्रमुख पात्र नीता के जीवन की त्रासदी यह है कि वह निर्बाध मुक्त व्यक्तित्व के विकास के नाम पर अपना शोषण करती रही है। नीता इस शोषण को पुरुष की दासता से मुक्ति, स्वच्छंद और आत्म विकास का साधन मानती है। उसे इस बात का अहसास नहीं कि विज्ञापन कला की आड में उसकी देह का ही नहीं उसके समूचे व्यक्तित्व का ही सौदा हो रहा है। उसकी स्थिति रेंगिस्तान में भटकती हुई हिरनी जैसी है। बीबी बच्चों वाले सुधीर के साथ इस भ्रम में रहती हैं कि, "पति-पत्नी के शताब्दियों की दासता के जीवन से मुक्त होकर सहज स्त्री - पुरुष के रुप में रहा जा सकता है, बिना शोषित हुए या किए"[5] लेकिन यह भी छालावा ही सिद्ध होता है। नारी स्वतंत्रता के नाम पर स्त्रियों के अविवेकपूर्ण, उच्छृंखल व्यवहार, तथा पुरुषों द्वारा उनकी इस विवशता को जो शोषण होता है, इस उपन्यास में उसका बडा ही यथार्थ और प्रभावशाली चित्र नीता के रुप में मिलता है। अंकिता के माध्यम से लेखिका ने कहना चाहा है कि, धैर्य, विवेक, साहस के साथ अत्याचारों का विरोध करते हुए पुरुष के असह्य अहंकार और दुष्टता से टकराते हुए अपनी राह बनाना भी संभव है, यद्यपि सरल नहीं है।

उपन्यास के अंत में सुधाशु प्रायश्चित करते हुए अंकिता से उसे अपनाने को कहता है तो वह उसे बहुत ही मार्मिक उत्तर देती है, "सुधाशुभूजी, औरत बेनसोई का पौधा नहीं है, जब जी चाहा, उसकी जडें काटकर उसे वापस गमले में रोप दिया। वह बौना बनाए रखने की इस साजिश को अस्वीकार भी कर सकती है।"[6] "जब चाहा ठुकरा दिया, जब चाहा सहल दिया, पुरुष की इस मनमाती का विरोध तो होना ही चाहिए।"

इस प्रकार 'एक ज़मीन अपनी' में विज्ञापन जगत के एक ख़ास चुने हुए कथ्य और परिवेश के माध्यम से आधुनिक नारी की सच्ची अस्मिता व्यक्ति रुप में उसकी सार्थक और वास्तविक स्थिति की तलाश अभिव्यक्त हुई है।

---

१. पुष्प पाल सिंह, शीराजा, अगस्त-सितंबर १९९७, पृ.७
२. चित्रा मुद्रगल, एस ज़मीन अपनी पृ.१६
३. वही वही पृ.१८३
४. चित्रा मुद्रगल एक ज़मीन अपनी पु.१८३
५. वही वही पृ.३८
६. वही वही पृ.१७७ ●

विख्यात साहित्य मनीषी डा.एन. चन्द्रशेखरन नायरजी के रचना-संसार पर चर्चा-सम्मेलन
दूरशिक्षा केन्द्र, कार्यवट्टम,

DR.N.C.NAIR

Justice HARIHARAN

Dr.FAIZAL KHAN

Dr. THANKAMONY AMMA

Dr. UMA KUMARI

Prof.K.KESAVAN NAIR

Dr. K.G. PRABHAKARAN

Dr.M.S. JAYA MOHAN

Dr.P.LATHA

Dr.K.S.VIJAYA-LEKSHMI

K.G.BALAKRISHNA PILLAI

Dr. PREMA KUMARI T.E.

Dr. BINU BELSAR

R. RAJA PUSHPAM

Dr. LEELA KUMARI AMMA

हिन्दी केलिए एक पूरी ज़िन्दगी (मातृभूमि पत्र, नगर अंक)

भाषा के प्रति ममत्व को ८८ वर्ष। इस बीच पाँच पी.एच.डी. उपाधियों केलिए विषय बने। स्वयं ४५ कृतियाँ प्रकाशित की। ५३ पुरस्कार प्राप्त हुए। यह मलयाली-हिन्दी लेखक राजधानी तिरुवनन्तपुरम के बाहर-भीतर से जानते थे। मलयालम को तहे दिलसे पहचाने हुए होकर भी हिन्दी संज्ञक प्रौढ़ भाषा के राजदूत थे। शुरु में प्रेचारक वेषधारी थे, लेकिन आगे बढ़कर डा.एन. चन्द्रशेखरन नायर केरलीय जनता की दृष्टि में राष्ट्रभाषा के माननीय अम्बासडर हो चुके थे। हम जानते हैं हिन्दी लिपियों के सिर पर ही रेखा जाती है लेकिन भाषा स्नेह के नाम पर इनके नाम के नीचे ही रेखा अंकित की जाती है। इस बढ़ती ८८ वीं इम्र की अवस्था में भी ये हिन्दी केलिए रातें आँखों में ही काटते हैं। देश के अनेक विश्व विद्यालयों के हिन्दी पाठ्यक्रमों में इनकी रचनाएं स्थान पा चुकी हैं। मलयालम में भी काफी लिख्र चुके हैं लेकिन केरल इनको पूरा नहीं पहचानता। यही एक विडंबना है।

तीन दशवर्षों के महात्मागाँधी कालेज के अध्यापक होने पर भी इनका कार्यव्यापार केवल अध्यापन में सीमित नहीं रहा है। तिरुवनन्तपुरम शहर के पट्टम लक्ष्मीनगर निवासी होकर अनवरत रचना-धार्मिता से ये हमेशा तल्लीन है। इसी प्रकार के फलस्वरूप ही वे इलाहाबादवाले साहित्य सम्मेलन की साहित्यरत्न परीक्षा वसूल कर सके, बनारस हिंद विश्व विद्यालय की एम.ए. परीक्षा पास कर ली और बिहार विश्व विद्यालय से पी.एच.ड़ी. हिग्री पा गए।

जब स्कूल के हिन्दी पंड़ित बने तब हमारा देश भारत आज़ाद नहीं था। जब १९८४ में महात्मा गाँधी कालेज से सेवानिवृत्त हुए तब प्रथम श्रेणी के प्रोफसर रहे थे।

डा. चन्द्रशेख्रर नायर अपने जीवन को अध्यापन के दायरे में सीमित करके नहीं रह सकते थे। वे साहित्य की सारी विधावों में स्वस्थ कलम चलाते रहे थे। नाटकों, कहानियों, कविताओं, लेख्रनों और अन्य विधावों में ४५ ग्रन्थ हिन्दी भाषा को प्रदान किए। बिहार विश्व विद्यालय के शोध-प्रबन्ध को जब यू.जी.सी. ने प्रकाशित किया तब उसका लोकार्पण भारत के प्रधानमेंत्री श्रीमती इन्दिरागाँधी ने ही किया था। दिल्ली में संपन्न तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन में दुनिया के पचासों साहित्यकारों के साथ डा. चन्द्रशेख्रर नायर भी समादृत एवं पुरस्ककृत हुए थे। किं बहुना डा. नायरजी के नाम पर और उनकी रचनाओं के नाम पर भारत के छः विश्व विद्यालयों से शोध-उपाधियाँ निर्मित हुई हैं और उनका प्रकाशन भी हुआ है।

असंख्य पुरस्कार भी इन्हें अलंकृत कर सके हैं। प्रेमचन्द पुरस्कार विवेकानन्द पुरस्कार, मदन मालवीय पुरस्कार इत्यादि पचासों पुरस्कार जो प्राप्त हुए हैं। वे प्रतिष्ठित एवं आकर्षित रहे थे। जो पुरस्कार सन् २००३ में डा. नायरजी को पत्रकारिता के लिए राष्ट्रपति के हाथों से एक लाख्र रुपये प्राप्त हुए थे उन्हें उसी दिन सुनामी सेवा केलिए प्रधान मंत्री मनमोहनसिंह को सुपुर्द कर दिए। इस प्रकार के सात देशीय पुरस्कार इनको प्राप्त हुए हैं। मगध विश्व विद्यालय, कामराज विश्व विद्यालय, केरल, कालिकट विश्व विद्यालय, दवधर हिन्दी विश्व विद्यापीठ, केरल हिन्दी प्रचार सभा इन सभी कलालयों ने डा. नायरजी की रचनाओं को पाठ्यक्रमों में अपनाया। सन् १९८० में जब केरल हिन्दी साहित्य अकादमी की स्थापना की तब उसका लक्ष्य भी हिन्दी साहित्य का प्रचरण-प्रसारण के साथ देशीय भावात्मक एकता की संकल्पना भी थी। अपने पूरे जीवन में एक चित्रकार का जीवन भी चला सके थे और एक सफल चित्रकार का अंगीकार भी प्राप्त हुए थे। हिन्दी और उसके साहित्य की प्रगाढ़ प्रगति केलिए अब भी प्रयत्नशील रहनेवाले इनका जीवन इस लक्ष्य में ही कर्मोमुख है।

उद्घाटन भाषण: अपने गुरुजी की साहित्यिक चर्चा करते हैं

जस्टीस एम.आर.हरिहरननायर

मैं इसे अपना भाग्य समझता हूँ कि मुझे इस कार्यशाला का उद्घाटन करने का अवसर प्राप्त हुआ। बहुत कम पूर्व विद्यार्थियों को यह अवसर प्राप्त होता है, और आज मैं धन्य हुआ हूँ। मुझे इस आनन्द-प्रद कर्तव्य के लिए बुलाया गया, इसके लिए मैं धन्यवाद अदा करता हूँ।

उन्नीस सौ अठावन से उन्नीस सौ इकसठ् (१९५८-१९६१) तक महात्मागाँधी कॉलेज में मुझे प्रो.चन्द्रशेखरन नायरजी ने पढ़ाया है, मैं तब भौतिक शास्त्र का, द्वितीय-भाषा का छात्र था। कॉलेज छोड़ने के बाद अब करीब पचास वर्ष तक हम एक-दूसरे से नहीं मिल पाए। दो महीने पहले, मैंने इन्हें एक बार फोन किया, पूर्व विद्यार्थियों की एक बैठक के लिए, इन्हें बुलाने केलिए। इन्होंने हमारे निमंत्रण को हार्दिक रुप से स्वीकार किया। जब मुझे मालूम हुआ कि, नूरउल्ल् इस्लाम विश्वविद्यालय (Noorul Islam University), इनके नाम से एक अध्यक्ष पद (chair) स्थापित करने जा रहे हैं, तो मैं उस सम्मेलन में भाग लेने पहुँचा। इस सम्मेलन के भवन में, इनके द्वारा लिखित, करीब साठ (६०) से ज्यादा पुस्तकों को देख्र कर, मुझे आश्चर्य हुआ। सर! आपके कारण, आपकी संस्था और हम सब सम्मानित हुए हैं।

कोई जन्म में महान होता है, कोई स्वयं अपने महत्व आर्जित करता है, और महानता किसी पर थोपी जाती है। इनमें से दूसरे वर्ग को प्यार और प्रशंसा अधिक मात्रा में प्राप्त होता है। प्रो.चन्द्रशेखरन नायर भी इस दूसरी श्रेणी में आता है - उस का स्कूली जीवन सातवाँ कक्षा तक है। संयोगवश, वे हिन्दी पठन की ओर मुड़े। भारत के स्वतंत्र होने के तेईस साल पहले, तबभी इनके रगों में, स्वतन्त्रता के लिए राष्ट्रीय-संघर्ष का स्पन्दन था। राष्ट्रीय नेताओं के प्रति आकर्षित इसलिए हुए, और हिन्दी पठन की ओर मुड़े, क्योंकि उन नेताओं की भाषा हिन्दी थी।

अगर महात्मा-गाँधी ने वकालत छोड़ दी, तो इसलिए, वे झुठ का सहारा नहीं लेना चाहते थे, प्रो.नायरजी ने भी, अपनी नौकरी छोड़ दी, कि वे बाज़ार जा के, केले बेचने पर जान गए कि, व्यापार में मुनाफे के लिए, व्यापार-तन्त्रों का होना, और सच के रास्ते से हट कर, टेड़े रास्तों को अपनाना पडता है। ऐसे एक सच्चे व्यक्ति को, वर्तमान स्थिति तक पहुँचना, कितना मिश्किल है, इस का अनुमान लगाया जा सकता है। उन्होंने अपना मेट्रिकुलेशन, मद्रास विश्वविद्यालय से ली, और उसके बाद उन्होंने पीछे मुड़ कर नहीं देख्रा। पर उपाधियाँ इनकी राह में आती गयीं। हाँ, ऐसे एक विद्यामोही के मार्गदर्शन में, आधे-दर्जन स्नातकोत्तर (P.G.) विद्यार्थियों को, शोध की डाक्टरल उपाधि मिली।

प्रो.नायरजी बहुरुपिया हैं। वे एक चित्रकार, एक कवि, लेख्रक और इन सब से ऊपर एक करुणामय व्यक्ति है। अपनी आत्मकथा में उन्होंने कहा है कि, उनका पहला स्कूल-शास्तांकोट्टा वर्णाक्युलर मिडिल स्कूल, उनकेलिए ज्ञान की देवी और एक यथार्थ विश्वविद्यालय है। शास्तामकोट्टा में जन्मे बालक चन्द्रशेखरन जी का विकास आज जो है वह असामान्य और दूसरों के लिए स्पर्धापूर्ण है!

उन्नीस सौ अठावन-इकसठ् (१९५८-६१) में, जब मैं महात्मागाँधी कॉलेज में पढ़ रहा था, तब इस कॉलेज के प्रिन्सिपल, प्रो.मन्मथनजी थे। मैं हॉल में ही, उनके यादगार में बनी ट्रस्ट का भागीदार बना, क्योंकि, मैं उनके ऊँचे नैतिक-मूल्यों का आदर करता हूँ, जिनका उन्होंने हमेशा पालन किया। वे एक सच्चे गाँधीवादी थे, और जैसे गाँधीजी अपने वचन पर अड़िग थे, वैसे ही प्रो.मन्मथनजी ने भी, वही किया, जो उन्होंने कहा। उन्होंने प्रो.चन्द्रशेखरनजी को, अपना दामाद बनाया, जिससे दोनों लाभान्वित हुए। एक लायक ससुर का लायक दामाद! उन दोनों में एक और समानता है-अगर प्रो.मन्मथनजी ने, कालेज के काम त्याग दिया, क्योंकि, वे अपने कॉलेज के प्रशासन में ही अडिग रहे राजनीतिक दख़ल को, सह नहीं पाए। प्रो.चन्द्रशेखरनजी ने भी अपने स्कूल की नौकरी छोड दी, क्योंकि उन्होंने धैर्यपूर्ण मैनेजमेंट के सारे बन्धनों को अनदेखा करते हुए, उस स्कूल में पहला स्वतन्द्रतादिवस मनाया।

जब मैं महात्मागाँधी कॉलेज में था, तब वहाँ के सारे अध्यापक जो मुझे पढ़ाते थे, मेरे लिए आदरणीय थे। तब विद्यार्थियों में ट्यूटर, लक्चेरर और प्रोफसर आदि के बीच भिन्नता का एहसास नहीं होता था। कम-से-कम मेरे लिए तो, जो भी कक्षा में ज्ञान बाँटते थे, वे मात्र अध्यापक ही थे। प्रो.नायरजी की आत्मकथा से मुझे ज्ञात हुआ कि, जिस समय वे वहाँ ट्यूटर के पद पर नियुक्त थे, उनके पास स्नातक की उपाधि नहीं थी। हाल में ही मैंने उनकी आत्मकथा-अनन्तपुरियुम ज्ञानुम पढ़ी और उसमें जो कुछ बातें विस्तार पूर्वक लिखी गई हैं, वह सब, वर्तमान विद्यार्थियों के लिए लाभदायक हैं।

अपनी मूर्ख्रता पर हँसने वाले लोग बहुत कम परिमाण में मिलते हैं। प्रो.नायरजी के किताब में, उन्होंने इस बात का ज़िक्र किया है, कि, कैसे उन्होंने अपनी वेश-भूषा-धोती को, पतलून में बदला जो कि दिल्ली में एक बस यात्रा के दौरान हुआ था। वे कैसे एक नायन (Lion) बने, मेरा मतलब, लायन्स क्लब के मेम्बर बने, कैसे वे एक शेयर-होल्डर बने, कैसे उन्होंने एक चोर का पीछा किया, आदि इस किताब में विस्तार से जो लिख्रे हुए हैं, मजा देने वाले, विवरण हैं। प्रो.नायरजी उनमें हैं, जो कड़ी मेहनत से हिचकिचाते नहीं, और न ही चुनौतियों से भागते हैं। जब उनके शोध-कार्य के पंजीकरण को, ख़ारिस करने की धमकी बिहार वि.वि. से मिली, तो उन्होंने अपनी थिसिस (Thesis) केवल छह महीनों में पूरा करने का निश्चय किया। यह विश्चय, उन्होंने मनोयोगपूर्वक सफल बना दिया और निश्चित समय के भीतर, थीसिस प्रस्तुत की। और शोध उपाधि, पा ली।

उन दिनों सुबह पुस्तकालय के खुलते ही, उसमें सबसे पहले प्रवेश करने वाले, और उसके बन्द होने पर, सबसे अन्त में वहाँ से निकलने वाले, प्रो.नायरजी ही थे। हम सब के लिए उनका जीवन एक नमूना (Model) है।

यह बहुत ही अच्छी बात है कि, विश्व-साहित्य के लिए, उनके जीवन भर की, जो साहित्यिक देन है, उसका मूल्यांकन यहाँ किया जा रहा है।

आदरणीय प्रोफसर! उन्नीस सौ अठावन में डिग्री केलिए मैंने द्वितीय-भाषा के रुप में, हिन्दी पढा था, फिर इसका उपयोगि नहीं किया। इसलिए हिन्दी में मेरा ज्ञान सीमित है! यहाँ बैठे, विशिष्ट हिन्दी विद्वान, आपकी कृतियों का, मूल्यांकन करेंगे। मैं इतना कह सकता हूँ, कि केवल हिन्दी-साहित्य के ही नहीं, बल्कि आपके विद्यार्थी और केरल के लोग जो पाठक हैं जो भी, आपको गर्व और आराधना की दृष्टि से देखेंगे।

प्रोफसर साहेब, मैं जानता हूँ, कि आप की उम्र अठासीयों में है। यह ऐसे दिन हैं, जब ईश्वर द्वारा दिये गये स्वास्थ्य को दवाईयों के सहारे और आगे धकेला जाता है और यह इम्र मनुष्य के कारयित्री

डॉ. चन्द्रशेखरन नायर का निबंध साहित्य

डॉ. के.जी.प्रभाकरन

डॉ. चन्द्रशेखरन नायर बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी साहित्यकार हैं। आप हिन्दी के प्रतिष्ठित लेखक हैं। मलयालम साहित्य पर भी आपका समान अधिकार है। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि विधाओं में आप सिद्धहस्त हैं। आप यशस्वी संपादक हैं, कुशल चित्रकार भी। अध्यापन आप की वृत्ति रही, मगर साहित्य ही आपका मनचीता कर्मक्षेत्र रहा। हिन्दी आप के लिए देश की भावात्मक एकता एवं सास्कृतिक गरिमा का जीवंत प्रतीक रहा। यह भाषा आपके मन-प्राण में रच-बीस गयी है। भाषा, साहित्य एवं संस्कृति के प्रति गहरी निष्ठा एवं अनवरत साधना ने डॉ.नायर को 'संस्कृति पुरुष' बना दिया है। केरल हिन्दी साहित्य अकादमी भाषा एवं साहित्य के प्रति डॉ.नायर की निष्ठा एवं, प्रतिबद्धता का जीवंत प्रतीक बनी हुई है।

डॉ. नायर के निबंध साहित्य में उनके कलाकार मनीषी व्यक्ति का प्रस्फुटन है। साहित्य, राष्ट्रीयता, समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक जागरण निबंधों के मुख्य विषय हैं। ये निबंध युगचेतना के समर्थ वाहक हैं। साहित्य संबंधी निबंधों में उनके पांडित्य तथा आलोचना की पैनी दृष्टि का ख्राता परिचय मिलता है। समाज निर्माण संबंधी निबंधों में सामाजिक विकृतियों का विरोध और नवनिर्माण के स्वर प्रबल हैं। सांस्कृतिक निबंधों में राष्ट्रीय चेतना एवं सांस्कृतिक जागगरण की श्रेयसी प्रेरणा है।

डॉ.नायर की साहित्यिक रचनाएँ (निबंध साहित्य) शीर्षक संग्रह में ५२ निबंध संग्रहीत हैं। मोटे तौर पर इन निबंधों को तीन कोटियों में रख्रा जा सकता है: १. साहित्य संबंधी, २. समाज, धर्म, दर्शन तथा अध्यात्म संबंधी, ३. कला संबंधी।

साहित्य संबंधी निबंध तीन प्रकार के हैं। (१) हिन्दी साहित्य संबंधी, (२) मलयालम साहित्य संबंधी, (३) हिन्दी और मलयालम साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन संबंधी। साहित्य संबंधी निवंध मुख्यतः कवि विशेष से संबंधीत काव्य प्रवृत्ति परक, कृति विशेष संबंधी और रचना की अन्तदृष्टि संबंधी हैं। 'भारतीय महाकवि वल्लत्तोल नारायण मेनोन', 'हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठ कविवर जयशंकर प्रसाद', 'सांस्कृतिक प्रतिष्ठा के पुरोधा: हजारीप्रसाद द्विवेदी' आदि निबंध पहली कोटि के हैं। 'मैथिलीशरम गुप्त जी का श्रेष्ठ विरह काव्य यशोधरा' कृति विशेष का मूल्यांकन है। 'निराला की प्रतीक योजना', 'जी.शंकर कुरुप की कविता में ध्वनि और अलंकार', 'मुक्तिबोध और उनके स्वप्न चित्र', 'काव्य शैली पद्धति-विषयक निबंध हैं।' भारतीय साहित्य में ऐतिहासिक उपन्यास, विधापरक अध्ययन है।

'राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में भारतीय नारी की अस्मिता-विशेषकर यशोधरा के संदर्भ में', 'मैथिलीशरण गुप्त कालीन मलयालम काव्य चेतना', 'स्वतंत्र भारत में सांस्कृतिक पुनर्जागरण', साहित्य के क्षेत्र में दिनकर के कुरुक्षेत्र में अहिंसा और विश्वशांति का स्वर आदि निबंध रचना एवं रचनाकार की अन्तर्दृष्टि एवं मूल्यचेतना संबंधी हैं। तुलनात्मक अध्ययन परक निबंधों में प्रमुख है कवीन्द्र रवीन्द्र, सुमित्रानंदन पंत, जी.शंकर कुरुप, भारतीय महाकवि जी.शंकर कुरुप और हिन्दी के सिम्बोलिक कवि आदि।

डॉ.नायर के साहित्य संबंधी निबंधों से यह प्रकट होता है कि उन्होंने साहित्य के सन्दर्भ में भी राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना को प्रश्रय दिया है। फलस्वरुप, पुनरुत्थानवादी चेतना के कवि मैथिलीशरण गुप्त जी, भारतीय अध्यात्म एवं संस्कृति के कवि रवीन्द्र, प्रसाद और निराला तथा राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धारा के कवि दिनकर उनके प्रिय कवि रहे। मलयालम में वल्लत्तोल और जी. के काव्य से उनका विशेष लगाव रहा। साहित्यिक कसौटी पर ही नहीं, राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक मूल्यपरक कसौटी पर भी ये निबंध ख्ररे उतरते हैं।

'जगदम्बा श्री. मूकाम्बिका', 'गीता प्रवचन: जीवन और उसके मूल्यों का संचालक', 'राजयोग, हठयोग और गोरख्रनाथ', 'स्वामी विवेकानन्द का समाजवाद संकल्प', 'केरल की ऋषि परंपरा और महर्षि विद्याधिराज महाराज', 'अणु युग में भी ऋषि की प्रभुता', गाँधीजी का सर्वोदय संकल्प एवं भारतीयता प्रतीक आदि लेख्र धर्म, दर्शन तथा अध्यात्म संबंधी निबंधों की कोटि ने आते हैं। इन निबंधों में लेख्रक की सदाशायता, नैतिक चेतना, समाज हित चिन्तन और उच्च अध्यात्म दृष्टि के दर्शन होते हैं। विषय कोई भी हो, विवेचन के तहत निबंधकार की मानवतावादी दृष्टि सर्वत्र प्रतिफलित है।

केरल की कलागत उपलब्धियाँ: चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला, लोकनर्तन और केरल: भारतीय लोकनर्तनों के परिप्रेक्ष्य में, चित्रकला सम्राट, राजा रविवर्मा और समकालीन भारतीय चित्रकार, त्रिवेन्द्रम के अजायबधर में रखे हुए दारुशिल्प आदि कलापरक निबंधों में केरल की चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला और लोकनृत्य का गंभीर विश्लेषण है। स्वयं कुशल चित्रकार होने के नाते अध्ययन के इस क्षेत्र पर डॉ.नायर का अधिकार है।

डॉ. नायर के निबंध साहित्य के अध्ययन के संदर्भ में गौरतलब है कि उनके सभी निबंध विचारात्मक एवं मीमांसापरक है। व्यक्ति व्यंजक प्रभाववादी निबंध में उनकी रुचि नहीं रही। कारण यह हो सकता है कि निबंधकार के मुख्य सरोकार समाज एवं संस्कृति रहे। समाजोत्थान, राष्ट्रीय चेतना का उन्नयन एवं सांस्कृतिक जागरण ही उनके श्रेय प्रेय बने रहे। डॉ.नायर के निबंधों में उनके बहुश्रुत, बहुभाषज्ञ, संस्कृति-कर्मी उदारचेता व्यक्तित्व की गहरी छाप लगी है। देश की भावात्मक एकता को प्रशस्त करने में डॉ.नायर के साहित्य का, विशेषकर उनके निबंध साहित्य का महत्वपूर्ण योगदान है।

डॉ. नायर ने अपना सम्पूर्ण जीवन साहित्य सेवा में, ख्रासकर हिन्दी की सेवा में लगा दिया है। रचनाक्षेत्र का इतना विस्तार और वैविध्य केरल के अन्य किसी साहित्यकार में नहीं मिलता। युवा पीढ़ी के लेख्रकों के लिए डॉ.नायर का अक्षय रचनाशील व्यक्तित्व प्रेरणादायक एवं मार्गदर्शक है।

डॉ.के.जी.प्रभाकरन, पूर्व प्राध्यापक, सुरभि, कोटुंत्रल्लूर-६८०६६४

उद्घाटन भाषण अपने गुरुजी की साहित्यिक चर्चा का...

क्षमता या सेवा प्रबलता का मानदण्ड नापने केलिए, नहीं होता। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ, कि आप को, स्वास्थ्य और लम्बी उम्र दें और आप हिन्दी-साहित्य को और अधिक कृति प्रदान कर सकें।

इन शब्दों के साथ, में इस महती कार्यशाला का उद्घाटन करता हूँ।

धन्यवाद-जय हिन्द! ●

नागार्जुन के काव्य में व्यंग्यात्मक शैली

डॉ. जाधव सुनील गुलाबसिंग

नागार्जुन का समस्त काव्य व्यंगात्मक शैली से ही परिपूर्ण रहा। यदि यह कहा जाए कि व्यंग्य ही नागार्जुन की कविता का मुख्य प्रतिपाद्य है, तो अनुचित नहीं होगा। नागार्जुन ने अपनी कविता में व्यंग्यात्मक शैली का बड़ा ही मार्मिक प्रयोग किया है। वास्तव में उनके काव्य की आत्मा ही व्यंग्य है, इसलिए व्यंगात्मक शैली ही उनकी कविता का सबसे अधिक सबल पक्ष है। नागार्जुन की कविता में अधिकतर स्थलों पर व्यंग्य का बड़ा ही प्रखर रुप देखने को मिलता है। उनकी व्यंग्यात्मक शैली की यह विशेषता ही है कि उससे कोई नहीं बच सका। पूँजीवादियों की साम्राज्यवादी नीति और देश के भ्रष्ट-नेताओं का चरित्र दोनों पर नागार्जुन ने करारा व्यंग्य किया है। ऐसा नहीं है कि नागार्जुन की व्यंग्य की शैली यहाँ तक सीमित रही। यह सच है कि उनका अधिकतर व्यंग्य भ्रष्ट नेताओं के चरित्रों पर या फिर साम्राज्यवादी नीतियों के विरुद्ध किया गया है, पर उनकी अनेक कविताओं में समाज में प्रचलित अकल्याणकारी और अहितकारी परंपराओं और रुढ़ियों पर भी बड़ा ही कटु व्यंग्य किया गया है। जिन सामाजिक अहितकारक रुढ़ियों पर उन्होंने व्यंग्य किया, वहाँ उनकी व्यंग्य शैली बड़ी ही स्वस्थ दिखाई देती है। डॉ.रामविलास शर्मा के मतानुसार इस व्यंग्य ने, "रामराज्य के सपने टूटने पर तेवर बदलती हुई हिन्दुस्थानी जनता की रोशभरी फुफ्कार का रुप ग्रहण कर लिया हैं।" [१] इस देश की जनता की रोश से भरी हुई यह प्रतिक्रिया अनेक कविताओं में बड़ी ही सार्थक रुप में व्यक्त हुई है। हाँ, इतना अवश्य है कि नागार्जुन का यह व्यंग्य कचोटने वाला और चिकुटी लेने वाला है। नागार्जुन अपने काव्य में हर स्थल पर कटु व्यंग्य ही करते हैं, ऐसी बात नहीं। उनकी अनेक कविताओं में व्यंग्य की मोटी चिकुटियाँ भी मिलती हैं। हाँ, इतना अवश्य है कि नागार्जुन की कविताओं में व्यंग्य के साथ-साथ कई स्थलों पर आक्रोश की भी अभिव्यक्ति हुई है, पर यह आक्रोश वहीं व्यक्त हुआ हैं, जहाँ उन्होंने मूल्यहीन राजनीति और भ्रष्ट नेताओं पर व्यंग्य किया हैं। अन्य स्थलों पर तो नागार्जुन की काव्य-शैली का बड़ा ही मार्मिक रुप देखने को मिलता है। उनकी कविता में जहाँ आक्रोश व्यक्त हुआ हैं, वहाँ उन्होंने शोषित, पीड़ित और निसहाय जनता के अभावों, यातनाओं और पीड़ाओं को ही व्यक्त किया हैं। शोषित, पीड़ित जनता का जहाँ तक संबंध है, उन पर हो रहे अन्याय के कारण ही उसके जिम्मेदार लोगों पर वह व्यंग्यपूर्ण आक्रोश को व्यक्त करता हैं। साथ ही जब पूँजीपतियों, साम्राज्यवादियों और राजनेताओं को जब जन-सामान्य के हित के विरुद्ध कार्य करते हुए देखता है तो वह इनकी कटु आलोचना करता है। नेताओं की भ्रष्ट चालों का पर्दाफाश करते हुए वे कहते है कि-

रामराज में अब की रावण नंगा होकर नाचा है। सुरत शकल वही है बिल्कुल बदला केवल ढांचा है। नेताओं की नियत बदली फिर तो अपने ही हाथों। भारत माता के गालों पर कस कर पड़ा तमाचा है।[२]

नागार्जुन ने अपने काव्य में व्यंग्य शैली के रुप में विविध प्रकार के प्रयोग किए हैं। व्यंग्य शैली में कोई एक रुप नहीं हैं, कहीं व्यंग्य में वह आक्षेप लेता है तो कहीं आक्रोश व्यक्त करता हैं। कहीं कटु आघात है, तो कहीं स्वस्थ हास्य का सृजन करता है। व्यंग्य के इन विविध रुपों के कारण ही नागार्जुन ने विविध शैलियों का प्रयोग किया है। कहीं-कहीं उन्होंने अपने व्यंग्य में लटका शैली का बड़ा ही सुंदर प्रयोग किया है। 'लटका' शैली में भी उन्होंने निशाना बनाया है, इस देश के भ्रष्ट काँग्रेसी नेताओं को ही। एक उदाहरण दृष्टव्य है-

चना है बना मसालेदार, खायिए भी तो यह सरकार/मिलेगा परिमट बारंबार, मिलेंगे सौदे सभी उधार/नया हो जाएगा घर-बार, पड़ोसी की टपकेगी लार/चना है बना मसालेदार।[३]

इस प्रकार के नागार्जुन के लटके एक समय में बहुत ही लोकप्रिय हुए। विशे, रुप से रेलगाड़ियों में चना बेचने वाले लटके को गाया करते हैं। लटके के साथ-साथ उन्होंने मुक्तवृत के आधुनिकतम रुप में भी व्यंग्य का सुंदर प्रयोग किया है। इस प्रकार के प्रसंगों पर उन्होंने जिस नाटकीय शैली में व्यंग्य किया है, सभी ने उसे बड़ा सराहा है। मुक्तवृत में कवि नें जहाँ व्यंग्य का प्रयोग किया हैं, वहाँ उनकी कविता और अधिक प्रभावपूर्ण हो गई हैं। "प्रेत का बयान", "सौदा", "मास्टर" जैसी कविताओं में मुक्तवृत में व्यक्त व्यंग्य बड़ा ही प्रभावपूर्ण सिद्ध हुआ हैं। इन रचनाओं में कवि ने मार्मिक व्यंग्य-शैली ही प्रस्तुत की है। नागार्जुन के मुक्तवृत में किए गए व्यंग्य ने, हिन्दी कविता में नए प्रतिमान स्थापित किए हैं। अपनी विशिष्ट प्रकार की व्यंग्यपूर्ण नाटकीय शैली के कारण ही नागार्जुन की कविताएँ आज भी पाठकों को आकर्षित करती हैं। नागार्जुन की नाटकीय शैली का उत्कृष्ट उदाहरण उनकी फिजो, दलाई लामा और जय प्रकाश के संबंध में लिखी गई कविताओं में देखने को मिलता है। समीक्षक माने या न माने पर यह सच है कि नागार्जुन की व्यंग्यपूर्ण शैली में हिन्दी कविता ने एक नए इतिहास का सृजन किया है। उनकी प्रभावपूर्ण व्यंग्य शैली में जितना तीखा और सटीक व्यंग्य पढ़ने को मिलता है उतना समकालीन कविता के किसी भी कवि में नहीं हैं। नगार्जुन की 'तीनों बंदर बापू के' नामक कविता बहुत ही लोकप्रिय हुई हैं, जो चना जोर गरम लटका शैली में ही लिखी गई है। इस कविता में कवि ने 'बापू के भी ताउ निकले तिनों बदर बापू के' कहकर गांधी के नाम का आधार लेकर जीने वाले इस देश के मक्कार नेताओं पर करारा व्यंग्य किया है।

नागार्जुन ने अपनी कविता में जिस व्यंग्य शैली का प्रयोग किया है, वह कहीं-कहीं पर बड़ी तीखी हो गई हैं। साथ ही साथ उन्होंने तो कुछ स्थलों पर तो व्यक्तिगत रुप से ही व्यंग्य का प्रहार किया है। ऐसी कविताओं के विषय में भी हमें यह ध्यान में रखना होगा कि जो कुछ कवि कह रहा है, वह आधारहीन था तथ्यहीन नहीं है। कटु सत्यों की अभिव्यक्ति के लिए ही उन्होंने इस प्रकार के प्रयोग किए हैं। वैसे भी नागार्जुन की व्यंग्य शैली अपने आप में निराली और मौलिक है। उन्होंने कुछ कविताओं में दो विरोधी वृत्तियों को सामने रखकर एक की प्रशंसा और दूसरे पर व्यंग्य करते हुए कविताएँ लिखीं। इस प्रकार की कविताओं में 'वे और तुम' एक आदर्श कविता है। इस कविता में कवि ने जो वर्ग कड़ी मेहनत करता है, उसकी तो प्रशंसा की है, पर जो केवल स्वप्न देखते हैं, उन पर-आघात किया है। यह उदाहरण दृष्टव्य है-

वे लोहा पीट रहे हैं, मन को पीट रहे हो। वे पत्थर जोड़ रहे हैं, तुम सपने जोड़ रहे हो। x x x x x **उनके दुःख है तरुण आम की मंजरियों को पाला मार/ गया है तुमें दुःख है काव्य संकलन दिमक चाट गए हैं।**[४]

इस प्रकार की व्यंग्य शैली का प्रयोग नागार्जुन जैसा प्रतिभासंपन्न कवि ही कर सकता है। उन्होंने व्यक्तिगत व्यंग्य किए और इसमें संदेह

डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर की कविताएँ: राष्ट्रीय भावना के विशेष सन्दर्भ में

डॉ. प्रीता रमणी टी.ई.

केरल के हिन्दी साहित्य क्षेत्र में प्रतिष्ठा प्राप्त साहित्यकार हैं कर्मठ हिन्दी सेवी एवं उत्तम देशप्रेमी डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर। उन्होंने कवि, नाटककार, उपन्यासकार, कहानीकार, निबन्धकार, आलोचक, चित्रकार आदि विभिन्न रूपों में अपनी बहुमुखी प्रतिभा प्रकट की है। देशीय एवं भावात्मक एकता के उद्देश्य से उन्होंने १९८० में 'केरल हिन्दी साहित्य अकादमी' नामक साहित्यिक संस्था की स्थापना की। वे इसके अध्यक्ष पद पर विराजमान रहकर निरंतर हिन्दी की सेवा कर रहे हैं। अकादमी का मुखपत्र है - 'केरल हिन्दी साहित्य अकादमी-शोधपत्रिका'। डॉ. नायरजी को पच्चास से अधिक पुरस्कार मिले हैं। 'राष्ट्रीय गीतकार', 'देशरत्न', 'मास्टर ऑफ एड्चूकेशन', 'डॉक्टर आफ लिटरेचर', 'साहित्य शिरोमणी पुरस्कार' आदि इनमें कुछ हैं।

केरल के राष्ट्रीय कवि के रूप में ख्याति प्राप्त नायरजी की हिन्दी में चार काव्य रचनाएँ प्रकाशित हुई है - 'हिमालय गरज रहा है', 'कविताएं देश भक्ति की' निषाद शंका एवं 'चिरंजीव महाकाव्य'।

'हिमालय गरज रहा है' शब्दीय भावना से ओतप्रोत खंड काव्य है। इसमें कवि ने चीनी आक्रमण के विरुद्ध गरजते भारत के आक्रोश को वाणी दी है। 'कविताएँ देश भक्ति की' काव्य संकलन में डॉ. नायरजी की कतिपय रचनाएँ हैं जो सन् उन्नीस सौ इकसठ से समय-समय पर लिखी और विविध पत्रिकाओं में प्रकाशित है। 'चिरंजीव महाकाव्य' उनकी नवीनतम कृति है। इसका मुख्य प्रतिपाद्य सात चिरजीवों का जीवनचरित है। यह उनके जीव के व्यापक अनुभव, प्राचीन साहित्य के गहरे अध्ययन एवं काव्यकुशलता का उत्तम प्रमाण है।

नागार्जुन के काव्य में व्यंग्यात्मक शैली...

नहीं कि कंही-कंही उनके ये व्यक्तिगत व्यंग्य बड़े तीखे हो गए हैं, पर इन कविताओं में भी एक और कविता का सुंदर और स्वस्थ रूप ही दिखाई देता है। उदाहरण के लिए हम कवि पंत पर किए गए व्यंग्यपूर्ण कविता को देख सकते हैं, जहाँ वे कहते है-

अन्यथा... कुछ भी नहीं तुम कर सकोगे/बहुत होगा, भाग कर सिमला की नैनीताल/अथवा, मसुरी के पास जाकर/ललीत लोकायतन बनाकर, यहीं क्षेत्र सन्यास लोगो।[५]

कवि का यह व्यंग्य भी उसके स्वस्थ दृष्टि और खुले मन का ही प्रतीक है। कई कविताओं में नागार्जुन ने उन पर भी इस प्रकार का व्यंग्य किया है, जो अपने सामाजिक दायित्व को भूल जाते हैं, या अपनी जिम्मेदारियों का भान नहीं रखते। कुछ समीक्षकों ने इस पर भी ऊँगली उठाई है जिसका कोई अर्थ नहीं हैं। इस प्रकार की कविताओं में उनके हास्य और विनोद का निर्माण करनेवाली शैली ही प्रभावपूर्ण लगती है। यह उदाहरण दृष्टव्य है-

ठमक गई सहसा बेचारियों के पैर/हाय इतने सुंदर हो जाएंगे दागी/ भड़क उठा परिमार्जित रुचि बोध/फिर कौन लगवाए काला निशान।[६]

इस कविता में भी उनकी दृष्टि व्यंग्यपूर्ण शैली में यथार्थ स्थिति को व्यक्त करने की ही है। इसप्रकार की व्यंग्य शैली में न तो कोई दोष है और न ही कोई बुराई। क्योंकि यहाँ पर उनका मुख्य उद्देश्य प्रभावी और स्वस्थ व्यंग्य सृजन का ही है। उन्होंने इस प्रकार का अत्यंत प्रभावपूर्ण व्यंग्य अपनी 'सौंदर्य प्रतियोगिता' नामक कविता में भी किया हैं। इस कविता में कवि ने दोनों की लड़ाई के बीच तीसरे का ही लाभ कैसे होता है, इसे बड़ी मार्मिकता से प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि व्यंग्य की विभिन्न शैलियों का अत्यंत मार्मिक और प्रवाहपूर्ण प्रयोग नागार्जुन की कविताओं में हुआ हैं। उनके काव्य में सर्वत्र ही समय, परिस्थिति और परिवेश के अनुकूल एक विशिष्ट प्रकार की लचक दिखाई देती है। उनकी अनेक कविताएँ राष्ट्रप्रेम और राष्ट्र रक्षा की भावना से परिपूर्ण हैं। उन्होंने लटकों की शैली से लेकर आधुनिक प्रत्यय की मंत्र कविता तक व्यंग्य की भिन्न प्रकार की शैलियों का सफलतम प्रयोग किया है। उनका समस्त व्यंग्यपूर्ण काव्य ही उन्हें अपने समय का सर्वाधिक सफल और सर्वश्रेष्ठ कवि सिद्ध करता है। उनके व्यंग्य में हास्य और विनोद के साथ-साथ जो पैनी और मन को कचोटने वाली वक्रता है, वह किसी भी उनके समकालिन कवि में नहीं है। नागार्जुन का समस्त काव्य वर्तमान जीवन के ही यथार्थ का चित्रण करता है और वर्तमान जीवन के कई रंग-रूप ऐसे हैं, जिनको यथा रूप में चित्रित करने के लिए कटु और करारे व्यंग्य का ही प्रयोग करना पड़ता है। उन्हें एक प्रकार का पैनापन खुदबखुद आ जाता है। वैसे तो नागार्जुन ने श्रृंगारपरक और प्रकृति चित्रण से युक्त अत्यंत कमनीय और कोमल भावों को व्यक्त करनेवाली कविताएँ भी लिखी हैं, पर वहाँ उनकी शैली बड़ी ही गंभीर, शांत और गहन भावों को वहन करने में सिद्ध हुई है।

हमें यह मानना ही पड़ेगा कि नागार्जुन ने अपनी कविताओं में जिस व्यंग्य शैली का प्रयोग किया है, उसके वे एक मात्र अधिपति हैं। डॉ. रामविलास शर्मा जैसे प्रगतिवादी समीक्षक भी यह स्वीकार करते हैं कि नागार्जुन के जैसा स्वस्थ, तीखा और प्रभावपूर्ण व्यंग्य उनकी समकालीन कवियों में बहुत कम दिखाई देता हैं। विवाद और व्यंग्य की दृष्टि से नागार्जुन की कविताएँ हिन्दी को मिली एक अभूतपूर्व देन ही हैं।

संदर्भ सूचि:-

(१) डॉ. रामविलास शर्मा-युगधारा के कवर पृष्ठ से। (२) हँस, जून १९४९, पृ.४९३ (३) नागार्जुन: इस गुब्बारे की छाया में पृ.७६ (४) नागार्जुन: प्यासी पथराई आँखे पृ.५४ (५) नागार्जुन: पंत पर लिखि गयी व्यंग्य कविता से पृ.७६ (६) नागार्जुन: सतरंगे पंखोवाली पृ.३६

डॉ.जाधव सुनील गुलाबसिंग, यशवंत कॉलेज, नान्देड,
पता: हनुमानगढ़ कमान के सामने, महाराणा प्रताप
हौ.सो.नान्देड-०५. चालभाष: 9405384672
Email: suniljadhavheronu10@gmail.com

अपने राष्ट्र को संपन्न देखने और बनाने की भावना ही राष्ट्रीयता का मूल आधार है। अपनी जन्मभूमि के प्रति अगाध प्रेम, अपनी संस्कृति एवं सभ्यता के प्रति गौरव, अपने देश के प्रत्येक पदार्थ एवं प्राणी के प्रति ममता आदि राष्ट्रीयता के द्योतक हैं। राष्ट्रीयता के उत्कृष्ट गायक कवि डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर की कविताओं का शक्तिकेन्द्र ही राष्ट्रप्रेम है। इनमें राष्ट्रीय भावना के विविध स्तरों की व्यंजना हुई है।

कवि अपनी मातृभूमि को माँ मानते हैं और उसे चिरयौवना के रूप में देखने की उत्कट अभिलाषा भी व्यक्त करते हैं। यह माँ साधारण माँ नहीं, अपितु व्यास, शंकर, विवेकानन्द, गाँधीजी, नेहरू जैसे पुत्ररत्नों की जननी भी है।

महिमामय केरलभूमि के प्रति कवि के मन में अगाध प्रेम है। केरल को सर्वोच्च एवं सर्वोत्कृष्ट सिद्ध करते हुए उसकी महिमा का गान कवि 'स्वर्ग, मही का केरल मेरा देश' शीर्षक कविता में करते हैं। केरल के प्राकृतिक वैभव का चित्रण वे इस प्रकार करते हैं-

'सुरुचिर जल धारा से नित सिंचितय/अगणित मधुमय सुजला नदियों से ल्लवित/जन मन को शीतलकर पुलकांकुर दे/हर्षित करनेवाला केरल मेरा देश।'[२]

कवि के अनुसार केरल मानव-मैत्री का प्रतीक है। केरल की गरिमामय संस्कृति का चित्रण कवि इन शब्दों में करते हैं-

'सारी दुनियाँ एकत्रित है केरल में/समता का स्वर्गिक मंच बना है ओणम में/कुछ लेकर कुछ पाकर ही लौट रही है दुनियाँ/लेना नहीं, देना ही जानता है मेरा केरल देश'।[३]

धार्मिक सहिष्णुता एवं अनेकता में एकता हमारी संस्कृति के प्रमुख अंग हैं। केरल की एकता की भावना का चित्रण डॉ.नायरजी यों करते हैं-

'यहाँ की गलियों में ऐसे चौराहे हैं/जहाँ तीनों किनारों पर तो खडे हैं/मज़जित, मंदिर और गिरिजा घर/मानव मैत्री का प्रतीक मेरा केरल देश'।[३]

अतीतकाल के श्रेष्ठ महापुरुष भारतीय संस्कृति के गौरव एवं गरिमा के परिचायक हैं। डॉ.नायरजी अपनी संस्कृति के प्रति श्रद्धा और प्रेम रखनेवाले राष्ट्रप्रेमी कवि हैं। महापुरुषों के आदर्श-निष्ठ व्यक्तित्व की महिमा का चित्रण श्रीराम, चन्द्रगुप्त, भरत, लक्ष्मण, झाँसीराणी, शिवाजी, वेलुत्तंपी, नेहरू, गाँधीजी, शंकराचार्य, स्वामी विवेकानन्द जैसे भक्त विभूतियों से संबन्धित कविताओं में देख्र सकते है। 'नेहरू को श्रद्धांजलियाँ', 'प्रहर माँ के सपूत', 'बीसवीं सदी का मानुष', 'हिमालय गरज रहा है' आदि कविताएँ इस तथ्य के उदात्त उदाहरण हैं।

'नेहरू को श्रद्धांजलियाँ' शीर्षक कविता पंडित जवाहरलाल नेहरू की मधुरस्मृति पर श्रद्धांजलि है। यहाँ कवि का विश्व मानवतावादी रूप भी स्पष्ट परिलक्षित होता है। कवि के अनुसार नेहरूजी अमर ज्योति है जिनके कारण इतिहास भी अमर हो गया है-

'तुम मरकर भी हो गये चिर अमर/जैसे भारत के पुरुष पुराण'।[४]

कवि के मन में गाँधीजी के प्रति अगाध श्रद्धा एवं प्रेम है। वे उन्हेकं जगत की अमर संगन मानते हैं। उनकी विचारधारा संपूर्ण विश्व केलिए मानवता का संदेश देनेवाली थी। उनके जीवनदर्शन एवं सिद्धांतों के प्रति पूरी श्रद्धा एवं आस्था व्यक्त करते हुए कवि कहते हैं-

'झूठे कलियुग में भी/युग-पुरुष गाँधी ने/सत्य को प्रश्रय दिया/निज आचरणों से/देख्रा मानवों ने उस नर में/ईसा, बुद्ध, कृष्ण के गुणों को'।[५]

'हिमालय गरज रहा है' ख्रंडकाव्य में श्रेष्ठ पुरुषों की याद कवि आदरपूर्ण भाव से यों करते हैं-

'पावन विश्व महाकवियों का/यह जन्मदेश है, जग जिनका/भक्ति भाव से प्रणमन करता/रुको, झुका दो अपना माथा'।[६]

कवि द्वारा किए गए भारत के अतीतकालीन उत्कर्ष का चित्रण भारतवासियों में उत्साह एवं स्वाभिमान की भावना जगाने केलिए सर्वदा उपयुक्त है। उन्होंने अपनी काव्य-कृतियों में भारत की संस्कृति, समृद्धि, प्रकृति आदि का चित्रण अत्यंत आकर्षक ढंग से किया है। 'हुंकार भर दो नगपति' शीर्षक कविता में गरिमामय हिमालय का चित्रण इस प्रतकार है-

'अये नगपति!/गरिमामय, चिर तुषार वेष्टित/ग्रणत हूँ, प्रणत हूँ तुम्हारे/विशाल नभ चुंबित मुख्रालोक के आगे'।[७]

हिमालय भी इस तथ्य का साक्षी है कि इस धरती पर ऐसे व्यक्तियों ने भी जन्म लिया जो अपने सत्कर्मों के कारण देवों से भी बढ़कर पूज्य रहे। विशेषकर भारत में ऐसे महान व्यक्तियों की एक सुदीर्घ परंपरा है। हिमालय के मुख्र से कवि ने भारत की उदार मानवतावादी परंपरा का यशोगान यों कराया है-

'देश अनूठा है यह, जग में/पावन संकल्पों का स्वर्ग/आदर्शों में नहीं जटिलता/इसका रास्ता ही अति सीधा'।[८]

कवि हिमालय को दुनिया के इतिहास एवं सभ्यता के चिरसाक्षी के रूप में हमारे सम्मुख्र प्रस्तुत करते हैं। इसके द्वारा कवि भारत की महान संस्कृति, उसके श्रेष्ठ आदर्श एवं उदात्त गुणों को बहुत ही मार्मिक एवं रोचक ढंग से व्यक्त करने का प्रयास ही करते हैं। कवि की अन्तर्वाणी इस प्रकार मुख्ररित होती हैः

'हे चिरसाक्षी, जगती तल के/सभ्यता-इतिहास के/क्या तुमने देख्रा है कभी कहीं/विश्वोत्तर भावोंवाला भारत-सा देश'?[९]

शांति की भावना भारतीय संस्कृति का एक अविच्छिन्न अंग है। कवि का शांतिवादी दृष्टिकोण 'हुँकार भर दे नगपति' शीर्षक कविता में स्पष्ट रूप से देख्र सकते है। कवि के अनुसार युद्ध शांति का उपाय नहीं है-

'हम चाहते हैं, कभी किसी से/युद्ध करने का अवसर न पावें/युद्ध शांति का सदुपाय नहीं है/युद्ध का परिणाम शांति के अनुकूल नहीं है'।[१०]

कवि की दृष्टि में युद्ध स्वीकार्य नहीं है। फिर भी सत्य एवं शांति की स्थापना और अन्याय एवं अत्याचार के विष्कासन केलिए वे युद्ध की अनिवार्यता सिद्ध करते हैं-

'सत्य की शांतिमय आभा से/रहे तरल जग बाहर-भीतर/पथ अनाचारों के बंद रहें/उस हेतु सधीर ले हथियार'।[११]

भारतीय संस्कृति पर श्रद्धा रख्रनेवाले कवि डॉ.नायरजी का दृष्टिकोण व्यापक है। उन्होंने एक संकुचित दायरे में काव्य रचना नहीं की है। कवि ने विश्वबन्धुत्व, विश्वप्रेम, विश्वशांति एवं विश्वकल्याण को उचित स्थान देकर अपनी व्यापक राष्ट्रीय भावना का परिचय दिया है। उनकी राष्ट्रीय भावना 'वसुधैव कुटुंबकम्' के सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करती है। यह एक बडा व्यापक दृष्टिकोण है जो उन्हें विश्वमानवतावादी के आसन पर प्रतिष्ठित करता है।

'गरिमामय भारत जननी' शीर्षक कविता में कवि का विश्वमानवतावादी स्वर यों गूँज उठता है-

'जननी जन्म भूमिश्च/स्वर्गादपि गरीयसी/शुभे रत्नगर्भे!/समस्त जनता की/मंगल कामना में/सदैव आशा विश्वास लिए/निर्द्वन्द्व, निर्वैर

डॉ.चन्द्रशेखरननायर की कहानियों में सामाजिक और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति:

डॉ. लीलाकुमारी एस.

रचनाकार सामाजिक प्राणी होता है। इसलिए सामाजिक सन्दर्भ में उसे समझना होगा। अपनी विशिष्ट प्रतिभा एवं साधना के माध्यम से समाज में वह अपने स्थान एवं गौरव का अधिकारी बनता है। ऐसी स्थिति में सर्जक समाज की इकाई या मात्र-जन न रहकर विशिष्ट व्यक्तित्व संपन्न मनुष्य एवं साहित्यकार बन जाता है। रचना के माध्यम से रचनाकार की मूल प्रेरणा तक पहुँचा जा सकता है।

केरल निवासी डॉ. नायरजी अहिन्दी भाषी हैं। लेकिन हिन्दी भाषा तथा साहित्य की प्राणधारा को उन्होंने गहरायी से आत्मसात किया है। भारतीय संस्कृति के प्रति उनके मन में गहरी आस्था है। उनका रचना-संसार व्यापक एवं बहु आयामी है। साहित्य की सभी विधाओं पर उन्होंने तूलिका चलायी हैं। विभिन्न प्रकार के पुरस्कारों से वे अलंकृत हैं। परंपरा के प्रति प्रणिपात दृष्टि उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व की रेखांकित विशेषता है।

मानवीय संवेदनाओं की घटनात्मक अभिव्यक्ति का नाम कहानी है। कहानी में कहानीकार अपने जीवन की किसी एक घटना के मर्म की अभिव्यक्ति करता है। मानवीय जीवन को मूल्यवान बनाने की क्षमता रखनेवाले गुणों को हम सामाजिक मूल्य कहते हैं। सामाजिक मूल्य शाश्वत व्यवहार है। इसका निर्माण मानव के साथ-साथ हुआ है। यदि इसका अंत होगा तो संस्कृति के साथ मानवता भी समाप्त हो जाएगी। आज एक परिचित, काम चलाऊँ और औपचारिक ढंग की नकली जिन्दगी समाज में पनप पडी है। वह नकलीपन और उसके पीछे मुँह बिराता खोखलापन किसी भी सहृदय व्यक्ति को जो दर्द पैदा करता है, वही नायरजी की कहानियों का प्रेरणास्रोत है। डॉ. नायरजी की कहानियों का संग्रह है चर्चित कहानियाँ। इसका प्रकाशन उन्नीस सौ अठानब्बे में हुआ। डॉ. नायरजी की कहानियां एक युग की सच्चाइयों का इतिहास है।

'बाप का बेटा' कहानी में चित्रकार पिता द्वारा रचे गए देवयानी के रूप और बेटा द्वारा रचित झाड़ूवाली के चित्र में एक ही प्रकार के एकाकीपन और व्यथा दर्शनीय थी। ग्राम्य जीवन की संवेदना को समेटते हुए दोनों चित्रों में एक ओर नारी के प्रेम, विरह और स्वान हैं तो दूसरी और अपने सामाजिक परिवेश और वैयाक्तिक जीवनचर्या के वीच उसका संघर्ष भी चित्रित थी। देवयानी और झाड़ूवाली के आंसू और संघर्षपूर्ण आनन्द से युक्त बाप-बेटे के चित्रों में एक रूपता समाई हुई थी।

'हार की जीत' कहानी ने यह स्पष्ट कर दिया था कि उनकी कहानियों में प्रखर राष्ट्रीय-चेतना, सामाजिक-चेतना और सबसे बढकर मानवीय-चेतना अंकित हुई है।

'भवोति अम्मे' कहानी की कथा नायिका महिमामंडित मातृत्व के साथ सहनशीलता का समीकरण भी है। लेकिन वह पुरुषों के बलात्कारों के आगे उग्र प्रतिक्रिया दिखाने वाली है। समाज के आगे अपनी इज्जत को किसी कीमत पर नष्ट करने केलिए वह तैयार नहीं है। परिवार और समाज के साथ उसकी संलग्नता भी कहानी में दर्शनीय है।

'चमार की बैटी' में भारतीय समाज की एक ज्वलंत समस्या अनमेल विवाह का खुला चित्रण हुआ है। घर और समाज में नारी की बुरी हालत को प्रस्तुत करने का प्रयास है। सामाजिक व्यवस्था में पुरुषों का जो एकाधिकार है, उसका दृष्टांत है कहानी में चौदह वर्षीय कुंती की शादी। उसे पर्याप्त शिक्षा देने से भी वंचित रखती है। दहेज न दे सकने के कारण कुंती को एक बूढे से शादी करने की विवशता है।

'अंजन्ता का कलाकार' में कुलीन वर्ग की महिला और एक गरीब चित्रकार के बीच में जो वर्ग संघर्ष है, इसका चित्रण हुआ है। सवर्ण

डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर की कविताएँ: राष्ट्रीय भावना के विशेष सन्दर्भ में...

तुम विराजती हो/वसुधा को अपना परिवार मान'।[१२]

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि नायरजी की कविताओं में राष्ट्रीय भावना के विविध आयामों की सफल व्यंजना हुई है। डॉ. गोपालजी भटनागर का कथन है - 'हिमालय गरज रहा है' राष्ट्रीय भावना से अनुप्रेरित काव्य-ग्रंथ है। राष्ट्रीय भावना के ओजस्वी कवि दिनकर की 'मेरे नगपति मेरे विशाल' कविता जैसे आवेश और हुंकार के दर्शन उसमें होता है। अतः निस्संदेह यह कह सक्ते हैं कि कवि ने अपनी राष्ट्रीय कविताओं के माध्यम से सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा का ही प्रयास किया है, जो सराहनीय भी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

१. केरल के हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास - डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, तिरुवनन्तपुरम-१९८९
२. केरल में हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास - डॉ. एन.ई. विश्वनाथ अय्यर, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी-१९९६
३. कविताएँ देशभक्ति की - डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, तिरुवनन्तपुरम
४. चिरंजीव महाकाव्य - डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, तिरुवनन्तपुरम।

संदर्भ सूची:

१. डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, कविताएं देशभक्ति की,त पृ.७१
२. डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, कविताएँ देशभक्ति की, पृ.८२
३. डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, कविताएँ देशभक्ति की, पृ.८२
४. डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, कविताएँ देशभक्ति की, पृ.२५
५. डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, कविताएँ देशभक्ति की, पृ.४९
६. डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, कविताएँ देशभक्ति की, पृ.८८
७. डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, कविताएँ देशभक्ति की, पृ.४१
८. डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, कविताएँ देशभक्ति की, पृ.८३
९. डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, कविताएँ देशभक्ति की, पृ.४२
१०. डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, कविताएँ देशभक्ति की, पृ.४३
११. डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, कविताएँ देशभक्ति की, पृ.४३
१२. डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, कविताएँ देशभक्ति की, पृ.४५

प्रध्यापिका, सरकारी महिला महाविद्यालय, तिरुवनन्तपुरम

डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायरजी का शोध-कार्य

प्रो. एन.जी.देवकी

डॉ. चन्द्रशेखरन नायरजी की अध्ययन यात्रा का पाथेय शोध-कार्य ही है। वस्तुतः शोधकार्य से अध्ययन-प्रक्रिया में नैरन्तर्य और गतिशीलता प्रतिष्ठित होती है। केरल हिन्दी साहित्य अकाधमी शोध-पत्रिका उनकी शोध दिशा का समष्टिमूलक प्रमाण प्रस्तुत करती है। इसमें केरल के शोधकर्ताओं, अध्यापकों, लेखकों के अतिरिक्तते केरल के बाहर के विद्धानों की रचनाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं। केरलीय हिन्दी साहित्य को रुपायित करने में अकादमी शोध-पत्रिका महती भूमिका निभाती है।

चन्द्रशेखरन नायरजी का आधारभूत शोधकार्य हिन्दी और मलयालम के दो सिम्बॉलिक (प्रतिकवादी) कवि हैं जिससकेलिए सन् १९७७ में बिहार विश्वविद्यालय, मुज़फ्फरपुर से पीएच.डी.उपाधि प्राप्त हुई। इसका पुस्तक रुप में प्रकाशन सन् १९७९ में यू.जी.सी.द्वारा संपन्न हुआ। इधर पिछले कुछ वर्षों से भारतीय साहित्य की अवधाराप ज़ोर पकडती जा रही है। इस संदर्भ में यह शोधकृति महत्वपूर्ण उपलब्धि है. सात अध्यायों में व्याप्त प्रस्तुत रचना प्रतीक विधान की समग्र झांकी प्रस्तुत करने में सक्षम है। प्रतीक विधान के वस्तुनिष्ठ अध्ययन से प्रारंभ होनेवाली यह कृति पौरस्त्य पाश्चात्य दृष्टियों से उसका तुलनात्मक अध्ययन, हिन्दी के प्रतीकवादी कवि पन्तजी और मलयालम के प्रतिनिधिकवि जी.शंकर कुरुप के व्यक्तित्व तथा रचना संसार का संस्पर्श करते हुए दोनों के तुलनात्मक

जाति में जन्में राजलक्ष्मी के मन में अजन्ता के चित्रकार के प्रति सम्मान की भावना है, लेकिन उस चित्रकार के चित्रों के प्रति जो प्यार है, उससे ऊपरी दृष्टि से अपवित्रता का संकल्प खत्म हो चुका दृष्टिगोचर होता है। पर कहानी के अंत में जातीयता अपना कराल रुप धारण कर लेता है। राजलक्ष्मी को छूने की चित्रकार की अदम्य चाह के आगे प्रतिबंध स्वरुप सवर्ण युवति की अहं एवं जातीयताबोध उठ खडा होता है।

'बापू का संकेत' में चोरी करनेवाले को माफी और दो रुपये देते हुए कथानायक ने गाँधीजी के महान आदर्श का पालन किया है. इससे उस आदमी में सुधार लाने में कथानायक सक्षम होता है।

'प्रोफेसर और रसोइया' गाँधीजी के आदर्शों पर चलनेवाले प्रोफसर साहब और उसे आदर्शों के घेरे से बाहर लाने का प्रयास करनेवाले रसोइया की कहानी है।

'कलाकार रामू' कहानी में जीने के लिए हाथ पैर मारते लोगों में दूसरों को डुबोकर स्वयं बच निकलने की स्थिति है तो यह खेल शीर्षक कहानी विपन्नों के बीच परस्पर सहानुभूति का एक चित्र उपस्थित करती है।

'बैचारा नकसल' में जिस आदमी को कथानायक नक्सलवादी मानकर अपने परिवार से दूर रखता है, वह अंत में उसके बच्चे का रक्षक बनता है। तभी यह भी पता चलता है कि असल में नकसलवादी वह आदमी नहीं, जो स्वयं कथानायक का बेटा है।

'अब कलयुग है' कहानी में मनुष्य के करतूतों से भगवान भी व्याकुल है। चिन्ताधीन है। भगवान की निन्दा करनेवाले को राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कार प्राप्त हो जाता है। तभी भगवान पहचान लेता है यह कलियुग है।

'प्रेम बनाम प्रेम' में अपने पर अगाध प्रेम जतानेवाली मालिनी को राधेश केवल एक परस्त्री मानता है और अपने आपको एक आदर्श पति साबित करता है।

'आपका नारायणीम' का कथानायक एक भिखारी बाबा को भीख मांगने से रोकने का प्रयास करता है। जीविका केलिए एक मार्ग भी ढूंढकर देता है। लेकिन उसे भीख मांगने की आदत को छोडना नामुमकिन था।

'अब आप मकान बदलिए' प्रेत-गाथा है और इतने सहज ढंग से लिखी गयी है कि इससे लेखक का, भूत-प्रेतों में विश्वास व्यक्त होता है। 'मकान' कहानी कर्मठ इंजीनियर मधुशील के प्रगतिशील विचारों की कहानी है।

'प्रेम परीक्षा' नामक कहानी में पत्नी को शंका की दृष्टि से देखनेवाला पति कहानी के अंत में उसकी प्रतिभा, संस्कार, कार्यक्षमता और सहनशीलता को पहचानकर लज्जित हो जाता है।

'नीनाबाई' कहानी की नायिका जिस पुरुष से प्यार करती है, केवल उसके आगे अपने-आपको समर्पित करने केलिए तैयार है। अपने पर बलात्कार करने आए पुरुष को वह मारती भी है। अतः किसी भी हालत में आत्मसम्मान को छोडने के लिए वह तैयार नहीं है।

निष्कर्ष के दौर पर कहा जा सकता है कि डॉ.नायरजी का कहानी-सृजन ऐतिहासिक बोध को समसामयिक चेतना से समन्वित होकर विकसित होना पडता है। एक ओर वे अपनके चारों ओर व्याप्त कुंठी, भ्रष्टाचार एवं मूल्य-विघटन को अपने व्यंग्य का लक्ष्य बनाते हैं तो दूसरी ओर सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्यों पर आस्था व्यक्त करते हुए आज के मनुष्य के विघटित व्यक्तित्व को ऐतिहासिक चेतना की अखंडता से समन्वित भी करते हैं। इसी कारण नायरजी की कहानियां आज के जीवन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करके भी जीवन के प्रति निराश नहीं करतीं, आस्थावान बनाती हैं। यथार्थ की प्रामाणिक अनुभूति और शिल्प के स्तर पर वे नयी कहानी के किसी भी सशक्त हस्ताक्षर से स्पर्द्धा करते हैं। उनके पात्र सुरक्षित फुटपाथों पर घूमनेवाले लोग नहीं हैं, अपितु ट्रैफिक के खतरों से जूझकर सडक पार करने के प्रयत्न में लगे हुए हैं। ये कहानियाँ स्वातंत्र्योत्तर परिवेश एवं युगबोध के संक्रमणशील मूल्यों की जीवन्त दस्तावेज बन सकी है।

नायरजी की कहानियों की बडी विशेषता यह है कि कहीं भी भारतीयता का ह्रास नहीं हुआ है। उनके सामने समाज का कुत्सित और उत्तेजना व्याप्त करनेवाला प्रसंग आया है तो कुशल शिल्पी की तरह पात्रों के माध्यम से इस तरह प्रकट किया है कि जैसे सांप भी मरा और लाठी भी नहीं टूटी।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि डॉ.चन्द्रशेखरन नायर श्रेष्ठ कहानीकार हैं। उनकी दृष्टि सामाजिक और सांस्कृतिक आदर्शों पर केन्द्रित रहती है, जिस प्रकार एक किसान की दृष्टि अपने अनाज पर। उनकी यह कला नाटककार प्रसाद और कहानीकार प्रेमचन्द के समीप बिठा देती है। नायरजी का समस्त जीवन इन मूल्यों की रक्षा केलिए समर्पित है। कहानियाँ आकार में छोटी हैं, पर अपने पैनेपन के कारण चोट करने में सक्षम हैं। नारी की समस्या और विवशता का समावेश पाया जाता है। जन-मानस को आकर्षण करनेवाली है। वस्तुतः वे समसामयिक प्रसंगों के प्रत्यक्षदर्शी कहानीकार हैं। उनकी कहानियाँ अपने जीवन-काल में भी प्रासंगिक है और भविष्य में भी रहेगा।

एस.एन.कॉलेज, कोल्लम

डॉ.बालशौरी रेड्डी के नाम लिखे गये पत्र

डॉ.आरसू

साहित्य की कुछ विधाएं आज विलुप्त हो रही हैं। संवेदनाएं जब सूख जायेंगी तब उनका बुरा असर साहित्य पर अवश्य पडेगा। प्रौद्योगिकी का वर्चस्व आज बढ़ रहा है। इसकी आपातापी बहुतसारी मूल्यवान चीज़ें हम खो बैठेंगे। केवल बुद्धि विकास से मानविकता का विकास संभव नहीं होगा। हृदयविकास भी उसकेलिए अनिवार्य है।

मन की हरियाली संवेदताओं की अभिव्यक्ति पर निर्भर है। आपसी सद्भाव, ममता और आदर ही मानसिक हरियाली के बुनियादी तत्व है। डायरी, पत्र, संस्मरण जैसी साहित्यिक विधाओं में इसके घनीभूत रुप हम देख्र पायेंगे।

पत्रों के माध्यम से साहित्यकार की पहचान इस दृष्टि से मूल्यांकन-लायक एक अपूर्व कृति है। पत्र में इतिहास, संस्मरण, जीवनी के अंश एकमेक हो जाते हैं। उनको रेशों को अलग-थलग करना मुश्किल हो जायेगा। हिन्दी में कई अमर कृतियाँ लिख्रकर भारतीय संदर्भ में धवल कीर्ति प्राप्त करनेवाले **डॉ.बालशौरी रेड्डी** इन पत्रों के चरितनायक हैं। उनको शब्द और समाज, साहित्य और संस्कृति के कार्यक्षेत्र के कई दिग्गजों के संपर्क में रहने का सौभाग्य मिला था **सगीता रामचन्द्र भोगले** द्वारा संपादित पत्रावली एक सृजनशील लेख्रक को प्राप्त बधाइयों, शुभकामनाओं और मंगल आशीवादों का गुलदस्ता है। यह एक अनमोल विरासत है।

डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायरजी का शोध-कार्य...

बिन्दुओं का समाहार प्रस्तुत करती है। इस कृति में १५ मई सन् १९७७ में स्वयं सुमित्रानंदन पंतजी द्वाय लिखित दो पृष्ठों का आमुख है जिसके बाद अगला पृष्ठ पंतजी के हस्तलिखित आमुख का अंश है। हिन्दी के ज्ञानपीठ पुरस्कारप विजेता पन्तजी ने डॉ.चन्द्रशेखरन नायरजी के शोध प्रबन्ध के संबंध में प्रस्तुत आमुख में लिख्रा है। ग्रंथ में यह देख्रकर आश्चर्य हो रहा है कि मुझमें और जी.शकर कुरुप में दूरवर्ती होते हुए थी, अनेक प्रकार के साधर्म्य प्रस्तुत किए गए हैं। जीवन में विचारेतं में, भावों में, वस्तु-चयन में, अभिव्यक्ति में प्रेरणा-स्त्रोतों में, राष्ट्र-बोध, युग-बोध, भाव-बोध में हमारे काव्यों के जिस साधर्म्य को लेख्रक प्रकाश में लाया है वह कौतुक की बात नहीं। यह रचना केवल हिन्दी की ही नहीं, भारतीय साहित्य के लिए एक विशिष्ट देन है।

दोनों के सम्पूर्ण काव्य आयामों को प्रतीकात्मक परिप्रेक्ष्य में देख्रने का यह प्रथम सफल प्रयास है। हिन्दी के महान् कवि सुमित्रानंदनजी से बढ़कर मैं इस शोधकार्य के बारे में क्या कह सकती हूँ, कैसे कह सकती हुँ, इदमित्थं कुछ नहीं जानती। भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य के संदर्भ में प्रतीक विधान का विशद अध्ययन इस शोधप्रबन्ध की उल्लेख्रनीय विशेषता है। तुलनात्मक साहित्यिक शोध केलिए यह कृति निश्चय ही महत्वपूर्ण योगदान है।

सन् १९८५ से १९८७ तक यू.जी.सी. मेजर रिसर्च फेलो के रूप में 'गाँधीजी भारत के प्रतीक' विषय पर किया गया कार्य उनकी शोधयात्रा का उत्कृष्ट सोपान है। किन्तु श्री. चन्द्रशेखरन नायरजी के अकादमिक केरियर की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि सन् १९८७ से सन् १९८९ तक यू.जी.सी. एमिरिट्स प्रोफसर की ऐसियत से किए गए कार्य हैं जो केरल के हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास नाम से सन् १९८९ में केरल हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित भी है। सन् १९८९ जनवरी ३० तक की केरलीय रचनाएँ इसमें समाविष्ट हैं। केरल के हिन्दी साहित्य की समग्र गतिविधियों का लेख्रा-जोख्रा इसमें विद्यमान है। कुल आठ अध्यायों में विभाजित यह लगभग ४०० पृष्ठों का श्रेष्ठ इतिहास है। सच्चे अर्थ में यह बृहद् इतिहास ही है। इसकी विषयानुक्रमणिका क्रमशः इस प्रकार है

१. दक्षिण में हिन्दी भाषा का प्रचलनः प्रारंभ और विकास
२. केरल में हिन्दी साहित्य का इतिहासः प्रारंभ और विकास
३. केरल में हिन्दी साहित्य का इतिहास (सन् १९४७ तक)
४. स्वातंत्र्योत्तर केरलीय हिन्दी साहित्य का इतिहास
५. केरल में रचित हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक मूल्याकन
६. हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सतत योगरत केरल की संस्थाओं का इतिहास

लघु कथा

वंश गरिमा

डॉ.वी.गोविन्द शेनाय,एम.ए.,एल.एल.बी.,पी.एच.डी.,

रामकृष्ण गोगन की पुत्री का विवाह था, शानदार विवाह, गोगन वंश की गरिमा के अनुसार ही। वर डाकुर, वधू गहनों से लदी साजसज्जा ऐसी कि वीडियोंवाले भी अचंभित और भोज का कहना ही कहा! बिदाई की रस्म पूरी हुई तो माँ ममता में विह्वल ऐसी हुई कि बेटी के साथ होली। हाँ, अपने पति को आश्वासन अवश्य दिया कि वह जल्दी ही लोटेगी। रामकृष्ण गोगन के परदादा विष्णु गोगन के दो कोठियाँ थी; उतने ही हाथी थे और परिवार में बन्तीस व्यक्ति थे नौकर चाकर अलगा। दादा ने वंश की गरिमा बनाये रख्रने में कोई कसरह नहीं छोडी, पर परन्त उनका पुत्र वंश गरिमा ढोते ढोते ऐसी स्थिति को पहुँच गये कि परचून की दूकान करनी पडी जो उन्होंने अविलम्ब पुत्र रामकृष्ण को सौंपदी और संन्यास ग्रहण किया। रामकृष्ण ने वंश गरिमा विधिवत ही ढोई। मकान गिरवी रख्रा, परचून की दूकान की मैनेजरी सुब्बन फाइनान्स को सौंपी, साथ ही पुरनोट भी लिख्र दी और सब की रजिस्ट्री एक साथ ही करा दी और नोट के बडल ले आये। पुत्री का विवाह सम्पन्न कराय और वाह वाह लूटी।

पत्नी को लौटने में देर लगी, ममता बिह्वल जो थी। लौटी तो देख्रा, घर के द्वार बंद हैं। पडोस के संतू ने कहा, आधि रात को आया करते हैं। मंदिर के महंत के यहाँ कोई अविधूत आये हैं। उनका अध्यात्म इन पर हावी हो गया है। इन्तजार करो, आजायेंगा। गोगन आधी रात को आये। पत्नी वारस पही - यह तुमने क्या कर रख्रा है। गोगन ने कहा - ऐसी स्थिति पिता की भी हो गई थी और उन्होंने संन्यास ग्रहण किया था। उन्होंने परचून की दूकार मुझे सौंप दी थी मैंने सम्बन फाइनान्स को सौंप दी है। वंश परम्परा का ही पालन कर रहा हूँ। अवधूत माध्यम भर है।

रिट्टेइर्ट प्रिन्सिपाल, सौभाग्या, ओल्लूक्करा, तृश्शूर ६८०६५५

देवयानी के मिथक की समसामयिकता

डॉ. लीना बी.एल.

डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर हिन्दी के प्रतिष्ठित एवं बहुचर्चित साहित्यकार है। साहित्य की सभी विधाओं में आपने साधिकार लिखा है, हिन्दी और अपनी मातृभाषा मलयालम में। डि.लिट्, साहित्य मार्ताण्ड, देशरत्न, राष्ट्रीय कवि आदि विभूषणों से उन्हें सम्मानित किया गया। त्रिवेणी, कुरुक्षेत्र जागता है, युग संगम, सेवाश्रम, देवयानी, धर्म और अधर्म उनके प्रमुख हिन्दी नाटक हैं। निबंध, आलोचना, जीवनी, खंडकाव्य आदि साहित्यिक विधाओं में भी उन्होंने अपनी लेखनी चलायी। ख़ासकर उनका नाटक साहित्य राष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक और भावात्मक एकता का सबल माध्यम है। देवयानी को शिक्षा मंत्रालय व हिन्दी प्रतिष्ठान् के पुरस्कार मिले हैं। देवयानी नाटक में समसामयिक समस्याओं का समाधान अतीत के चिर-विश्रुत अख्यान में खोजने का प्रयास किया है। त्याग और प्रेम, भोग व योग, राग-विराग, स्वार्थ-परमार्थ का विपरीत व विरोधी शाश्वत मानव वृत्तियों का युगधर्म के अनुकूल पौराणिक कथावस्तु के परिप्रेक्ष्य में नाट्य रूप दिया गया है।

देवयानी पौराणिक नाटक है। नाटक में श्री. नायरजी ने मिथक का सफल व सर्जनात्मक प्रयोग किया है। देवयानी भारतीय विवाह संस्था के प्रति आस्था जगाता है। नाटक में निहित प्राचीन आख्यान आज के लिए प्रासंगिक और आधुनिक बन गया है। इसमें पुरु ययाति, कचकुमार के आख्यान द्वारा नारी जीवन की आधुनिक समस्या, छात्र-जीवन में त्याग-तपस्या का महत्व, प्रेम की पावनता का उद्घाटन, संसार की सार्थकता का प्रतिपादन, भोग वृत्ति का निरस्कार, संयम की विशेषता का विश्लेषण तथा भारत की महिमा का ज्ञापन है। नाटक की सामाजिक सार्थकता असंदिग्ध है। इसमें अखिल मानवीय स्तर पर नारी के अंतरंग का मनोवैज्ञानिक

डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायरजी का शोध-कार्य...

७. केरल में प्रकाशित हिन्दी पुस्तकों की सूची एवं विवरण.
८. केरल में विश्वविद्यालय में किये गये शोध-कार्य।

यह इतिहास होते हुए भी शोधपरक दृष्टि से लिखा गया है। प्रस्तुत कृति की भूमिका 'दो शब्द' शीर्षक के अन्तर्गत लेखक ने एक विचाणीय बिन्दु पर हम जैसे अध्येताओं को सोचने केलिए मज़बूर किया है। वह यह है कि केरल में मौलिक सर्जनात्मक हिन्दी साहित्य का लेखन अपेक्षाकृत रूप से कम है। क्या हम अनुवादकों के रूप में या आलोचकों के रूप में हिन्दी जगत में छा जाना पसंद करेंगे। हिन्दी में सोपाधिक शोध-कार्य समृद्ध हो रहा है। अनुवाद के क्षेत्र में काफी प्रगति हो गयी है। मलयालम काव्य तथा उपन्यास ज्यादा अनूदित हो चुके हैं। पत्रिकाओं में संपादकीय साहित्य तथा आलेखों के रूप में केरलीय प्रतिभाओं की शोधपरक दृष्टि का परिचय हम प्राप्त कर सकते हैं। केरल में रचित साहित्य का जो इतिहास बृहद् रूप में प्रस्तुत किया गया है वह निश्चय ही सराहनीय है और यह ग्रंथ सारे देश का अकेला है। हिन्दीतर प्रदेशों में विशेषकर दक्षिणाँचल में हिन्दी साहित्य की जो उपलब्धि है उसमें केरल का योगदान सर्वथा बहुमूल्य है।

प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कोच्चिन यूमिवेर्सिटी ऑफ साइन्स एण्ड टेक्नोलॉजी कोच्चि-६८२०२२, केरल

विश्लेषण किया गया है। प्रेम और पातिवृत्य का द्वन्द्व जो आधुनिक नायिका की विशिष्ट समस्या है, इसके उद्घाटन में नाटककार ने अधुनातन युगीन चेतना का परिचय दिया है। अपनी पत्नी के प्रति उदारमन पति ययाति जैनेन्द्र के उपन्यासों के नायकों का स्मरण दिलाता है। ययाति और देवयानी के चरणों पर कच का मालार्पण तो नाटककार की सांस्कृतिक मर्यादा का द्योतक है। जो गाँधीय आदर्शों की देन है।

डॉ. नायरजी ने मिथक पर खोजपूर्ण कार्य किया है। देवयानी नाटक में समसामयिक के साथ इस मिथकीय अंश का सार्थक योग मिलता है। एक ही मुख्य कथा-ययाति-देवयानी का आख्यान प्रारंभ से अंत तक चलती है। देवयानी और कचकुमार का प्रसंग प्रासंगित कथावस्तु की सीमा में आ सकता है, किंतु वह कथा के साथ इतना संपृक्त है कि यह मुख्यकथा का ही अंश प्रतीत होता है। सहायक कथाओं की भीड नहीं है। लघु मिथकीय कलेवर में आधुनिक प्रसंग को सरल ढंग से प्रस्तुत किया है।

देवयानी नाटक की कथा देवयानी-ययाति तथा देवकुमार कच के प्रेम के त्रिकोणी संघर्ष की प्रसिद्ध पौराणिक कथा पर आधृत है। भारतीय संस्कृति के आधार पर पतिवृत धर्म के आदर्श का ही संदेश दिया है। देवयानी राजा ययाति के पुरोहित शुक्राचार्य की पुत्री है। उनके एक शिष्य देवकुमार कच पर मुग्ध होकर वह उससे प्रेम करने लगती है। फिर भी वह विद्याध्ययन समाप्त करने से पूर्व विवाह-बँधन में बंधजाना नहीं चाहता। असुर दो बार कच का वध करते हैं। किन्तु शुक्राचार्य अपनी पुत्री के अनुराग को जानकर मंत्रबल से उसको दोनों बार जीवित कर देते हैं। लेकिन देवयानी अपने प्रति उसकी उपेक्षा से निराशा व विक्षुब्ध होकर उसे विद्या विस्मरण का शाप देती है। शापग्रस्त कच स्वर्ग जाकर घूमता रहता है और देवयानी का विवाह राजा ययाति से हो जाता है। लेकिन क्रुद्ध और सुरा के नशे में शुक्राचार्य द्वारा दिए गए शाप से ययाति असमय वृद्ध होकर शक्तिहीन हो जाता है। वह यौवन भोग की लालसा से प्रेरित होकर अपने द्वारा शर्मिष्ठा से उत्पन्न पुत्र पूरु से उसका यॉवन दान में लेते हैं। लेकिन वह तुरंत ही यौवन वापस कर पुनः वृद्धत्व को प्राप्त हो जाते है। पूरु की विनम्रता, शालीनता, वीरता पितृभक्ति जैसे गुणों से प्रभावित होकर उसे राज्य का भावी उत्तराधिकारी घोषित कर देते हैं जिसका समर्थन देवयानी भी करती है मगर शुक्राचार्य देवयानी के पुत्र यदु को राज्य सौंपना चाहते हैं और अपनी पुत्री को समझाते हैं कि वह ययाति को छोडे दें और यॉवन युक्त कच का वरण करें। लेकिन पति के प्रति देवयानी की निष्ठा जानकर कच पुष्पहार उसके गले में डालने के स्थान पर उसके चरणों में अर्पित करता है।

नाटककार ने नारी के अंतरंग का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है। प्रेम और पातिवृत्य का द्वन्द्व आधुनिक नायिका की विशिष्ट समस्या है। देवयानी वर्तमान नारी समस्या का ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत करती है। नारी की प्रमुख समस्या है काम और विवाह। दिशाभ्रष्ट और विचलित नारियों के लिए नाटक की देवयानी एक भारी चुनौती है। एक आदर्श नारी बनकर रहने में वह सुख पाती है। वह एक

मोहमुक्त माँ भी है। "भारतीय सांस्कृतिक चेतना में नारी मूल रूप से सौंदर्य, प्रेम, करुणा और वात्सल्य की मूर्ति है। उसके अभाव में जीवन अपूर्ण है। नारी के योगदान के बिना मनुष्या की सारी साधनाएँ व्यर्थ है, उसके उत्सव और उल्लास, व्यर्थ है।..."[१]

पुरु छात्र जीवन में त्याग-तपस्या का प्रतीक है। आजकल छात्रों में विलुप्त होती जा रही जीवन मूल्यों के गुण पुरु में दृष्टव्य हैं। बुजुर्गों के प्रति वे आदर सम्मान रखते हैं। पूरे राज्य में ययाति के पुत्र पुरु को छोडकर कोई अपना यॉवन देने को तैयार नहीं रहे। नाटककार ने पुरु के संदर्भ में केवल आंशिक पौराणिक प्रसंग लिए हैं। पुरु में गुरुत्व, आत्म साक्षात्कार की प्रेरणा, कर्मयोग की उपासना, त्याग व तपस्या का महिमा-मंडित मुक्तिदायक स्वरूप है। इन्हीं गहन संवेदनाओं को नाटककार ने पुरु के मिथकीय ऐतिहासिक व्यक्तित्व में पाया और उसे नाटक में चारितार्थ किया। वृद्धावस्था कोई शाप नहीं है, इसका व्याख्यान नाटककार ने पुरु के संवाद से प्रकट कराते हैं पुरु कहते हैं - "....मनुष्य वृद्धावस्था में भी सुखी रह सकता है। लेकिन उसका मन पवित्र रहें, तब पवित्र मन के बल से शरीर भी सबल रहेगा। मनुष्य अपनी आत्मा को प्रसन्न रखने योग्य उचित कल्पना करके और उस कल्पना के अनुसार साधना करके वृद्धावस्था में भी आनंदमय जीवन बिता सकता है।...." [२]

पुरु के यह कथन आज के टेक्नोयुग में दम घुड़कर जीनेवाले माता-पिताओं केलिए बेहद आश्वास दिलाते हैं और टेक्नो युग के चमक-दमक में फँसनेवाले युवक युवतियों को अपने भविष्य के इस अवस्था पर सोच विचार करने के लिए प्रेरक बनते हैं।

प्रेम की पावनता नाटक में दृष्टव्य है। यह प्रेम रचना का मेरुदंड है और अनेक रूपों में व्यक्त हुआ है। प्रेम का विभिन्न पक्ष देवयानी, ययाति, पुरु, कच, शुक्राचार्य में उद्घाटित होते हैं। पति-पत्नी प्रेम, पिता-पुत्र वात्सल्य, कच-देवयानी प्रेम, आदि रूपों में उद्घाटित होते हैं। देवयानी वह धुरी है जिसपर इस नाटक का प्रणय-चक्र गतिशील है। सामाजिक-नैतिकता की दृष्टि से अमर्यादित देवयानी-कच का प्रेम आधुनिक मनोविश्लेषणवाद की पीठिका प्रदान करता है। देवयानी में प्रेम की चतुर्मुखी दीप दीप्तमान है। उसने शुक्राचार्य को पुत्री का प्रेम दिया, कच को प्रियतम का दुलार, ययाति को पत्नी का प्रेम व पुरु को माँ का स्नेह दिया। नाटककार ने आजकल विलुप्त होते जानेवाले प्रेम को जीवन के केन्द्र में रखकर उसकी सिद्धि त्याग, उदात्तता और समर्पण में दिखाया है। निःस्वार्थ उदार प्रेम ही जीवन में मंगल का विधान कर सकता है। डॉ. नायरजी ने पौराणिक मिथकों से प्रेम दर्शन को सहज मानवीय संदर्भों में परखने की कोशिश की है।

नाटक में भोग वृत्ति का तिरस्कार आद्यन्त दृष्टव्य है। हर पात्र अपनी तपस्या का फल जगत् के मंगल के लिए अर्पित करते हैं। देवयानी अचंचलचित्त होकर ययाति के साथ ही बाकी जिन्दगी बिताने की कामना करती है। पुरु में राज्याधिकार का मोह नहीं। पौराणिक चरित्र ययाति भोगलिप्सा के अतिरेक से निन्दनीय न होकर सहज मानवीय कमज़ोरियों का प्रदर्शन करनेवाला एक सामान्य मनुष्य के रूप में दिखाया गया है। इस प्रकार नाटककार ने पुराण से कुछ विचलित होकर ययाति, पुरु, देवयानी व कच को यौवन अधिकार व प्रणय की भोगवृत्ति का तिरस्कार करनेवाले पात्रों के रूप में प्रस्तुत किया। इसके ज़रिए नाटककार यह जीवन आदर्श प्रस्तुत करना चाहता है कि अपने सुखों को तिलांजलि देकर जो दूसरों का भला करता है, वही सच्चा प्रेमी है। ...स्वयं लेने से अधिक देने का स्वभाव जिसमें हैं वह सचमुच महान है। वर्तमान काल में लोगों की मोहान्धता चाहे अधिकार हो, पैसा हो, प्रेम हो, काम हो, यही संसार में हिंसा व अशांति फैलाता है।

नाटक में शुक्राचार्य व्यावहारिक पुरुष की प्रतिनिधि है। लेकिन नाटककार ने उनके ब्राह्मणत्व के उदात्त गुणों का समावेश नहीं किया है। सांसारिक विषयों में उसकी दृष्टि व्यावहारिक है। नाटककार ने उसके मुँह से आधुनिक स्वर की अभिव्यक्ति दी। वह अपनी बेटी देवयानी को कच के साथ विवाह-परिणय संबंध सूत्र में आबद्ध होकर यौवन का उपभोग करने की प्रेरणा देता है। शुक्राचार्य जैसे व्यावहारिक लोगों का इस प्रकार की चिंता भविष्य में स्त्री के चरित्र पर कलंक लगा सकता है। जिससे समाज का नैतिक पतन हो जाएगा। कच के रोमांस वृत्ति पर नाटककार ने प्रकाश डाला है। कच जो साधारण प्रेमी है जो किसी भी नारी को अपने रोमांस का साधन बना सकता है, मगर परिणय-संबंध से बचे रहना चाहता है। नाटककार ने उनके चंचल रोमांस को आदर्श रोमांस में ढाल दिया। शिक्षा के बीच होनेवाला प्रणय शिक्षा को अधूरा छोड देगा, इस आदर्श को स्थापित करके कच को एक आदर्श प्रेमी का रूप दिया है। यह वर्तमानकालीन छात्र जीवन के संदर्भ में अर्थपूर्ण है।

पति एवं पिता का आदर्श रूप नाटक में व्यक्त हुआ है, ययाति के ज़रिए। पुराण में निहित ययाति-शर्मिष्ठा के संबंध को छिपाकर नाटककार ने ययाति को भोगलिप्सा के अतिरेक से निंदनीय न होकर एक आदर्श मनुष्य के रूप में दिखाया है। संसार के हर पिता भी ऐसे आदर्शवान पुत्र की कामना करते हैं। ऐसे पुत्र मिलनेवाले कम होता है और जिन्हें मिलता है वे इस भूमि पर ही स्वर्गीय सुख प्राप्त करता है। नाटककार ने मिथकीय इतिहास को विषय बनाकर भारतीय संस्कृति के उदात्त प्रतिमानों और मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना की है। डॉ. विजयेंद्र स्नातक का मत है - "मैं उन्हें उन लेखकों में स्थान देता हूँ जो राष्ट्रीय सांस्कृतिक विषयों को समसामयिक युग संदर्भ में प्रस्तुत करते हैं और भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों का सन्निवेश करनता नहीं भूलते। देवयानी भी इस कोटि की एक रचना है।"[३]

लेखक ने नाटक के अंत में पतिव्रत धर्म की रक्षा गरिमामयी शैली में व्यक्त किया। पुराणों में उपलब्ध कच देवयानी के आख्यान को अपना आधार बनाकर उस क्षीण कंकाल कर कल्पना के रक्त मांस चढाकर आधुनिक मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों को प्रचाय दिया है। कल्पना का प्रयोग उन्होंने मानव के शाखत मूल्यों की स्थापना के उद्देश्य से किए हैं।

वर्तमानकाल में जीवन और आदर्श संबंधी दार्शनिक मान्यताएँ अव्यावहारिक मानी जाने लगी है। देवयानी में निहित पौराणिक पात्रों के चरित्र में अंतर्लीन जीवन मूल्यों का विश्लेषण करके उन्हें उज्ज्वल रंगों में चित्रित करने का प्रयत्न किया है। आपने पात्रों के ज़रिए दुःखों को संभालने व समस्याओं का दार्शनिक चिंतन बीच-बीच यथानुकूल दिए हैं। यह नाट्य रचना मनुष्य को निर्बल बनानेवाली बाहरी भूल भुलैया से बाहर खींच लाने का प्रयत्न है। जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा करते हैं। वर्तमान काल में माता-पिता के प्रति बच्चो की भक्ति भावना घटती जा रही है। पुरु जैसे आदर्श पात्र के जरिए लेखक वर्तमान युवा पीढ़ी को दिग्भ्रमित होने से बचाना चाहता है। आज की खडी गली शिक्षण व्यवस्था और शिक्षक समुदाय

नायरजी के एकांकी संकलन धर्म और अधर्म में अभिव्यक्त मानवीय चेतना

डॉ. दीपाकुमारी

इस लौकिक जगत् के समस्त धर्मों, दर्शनों संस्कृतियों एवं ज्ञान-विज्ञान के साधनों का एकमात्र लक्ष्य समाज का हित करना है। अविवेक के कारण आसुरी, प्रवृत्तियों से प्रेरित मानव इंसानियत को त्याग कर दानवता को अपनाकर विश्व में संहार एवं विनाश के बीच बोता है। मानव से दानव बने इंसान को पुनः मानवता की ओर ले जाने के लिए साहित्य एवं साहित्यकार ही सार्थक एवं सफल माध्यम होता है। नायरजी ऐसे ही साहित्यकार हैं। उनके साहित्य की सभी विधाओं में मानवता एवं भारतीयता की सार्थक अभिव्यक्ति हुई है।

डॉ. नायरजी का एकांकी साहित्य भी मानवता एवं भारतीयता की प्रस्तुति का सार्थक माध्यम रहा है। दिसम्बर १९८२ में प्रकाशित 'धर्म और अधर्म' एकांकी संकलन में तीन एकांकी हैं जिसका आधार रामायण एवं महाभारत काल है। 'सृष्टि का रहस्य' प्रथम एकांकी है जो रामायण काल से सम्बद्ध है। दूसरा एकांकी 'महाभारत का वीर पुरुष' महाभारत काल से सम्बद्ध है। 'धर्म और अधर्म' इस संकलन का तीसरा एकांकी है जो मानवीय जीवन मूल्यों को प्रतिपारित करता है।

'सृष्टि का रहस्य' भारतीय संस्कृति के कई आयामों को प्रस्तुत करता है। इसमें प्रथम है राष्ट्रीयता अथति् राष्ट्र की जन-समाज के सुख-समृद्धि की चिंता तथा उसके अर्जन का प्रयास, दूसरा नारी के महत्व का प्रतिपादन और तीसरा है वैयक्तिक साधना की अपेक्षा लोकहित के महत्व पर बल।

अंगनदेश सोमपाल अकाल से पीड़ित जनता की परेशानी के कारण अत्यन्त व्याकुल है तथा अपने मंत्री से विचार-विमर्श करता है जिससे वृष्टि हो और जनता धनधान्य से परिपूर्ण हो जाए। उसकी यह चिंता मानवीयता का प्रतीक है। एकांकी का दूसरा आयाम सामंती संस्कृति के विरुद्ध नारी के महत्व की स्थापना करता है याने नारी जीवन के त्याग एवं बलिदान पर आथारित चरित्र की वास्तविकता का अंकन।

दशरत कुमारी शान्ता अपने संसर्ग से एकांकी तथा व्यक्ति-उत्कर्ष-मूलक तपस्या में लीन ऋषि विभाण्डक-पुत्र ऋष्यश्रृंग को जीवन तथा जगत् के प्रति अनुरक्त बनाती है, वारांगना कुमारी ऋष्यश्रृंग के साथ अपने भंगिमीवत् व्यवहार से, ऋषि को निर्जन श्रेत्र से पराङ्मुख्र करके, लोक-कल्याण के प्रति अनुरक्त कर देती है। यह नारी की रचनात्मक भूमिका है, जिसका अभिप्रेत लोकहित है। एकांकी का तीसरा आयाम मानवतावादी चेतना है जो व्यक्ति को एकांकी साधना से हटाकर लोक साधना से जोड़ती है। श्रृंग ऋषि घोर तपस्वी है तथा उनका लक्ष्य एकान्त साधना है। वह भौतिक अवगुणों से सर्वथा मुक्त है पर लोकहित से भी विरक्त है। राजा को एक ऐसे व्यक्ति की तलाश है जो भौतिकता से मुक्त हो और यज्ञ का पुरोहित बन जाए ताकि वृष्टि हो। ऋष्य श्रृंग यह कार्य करते हैं। वह एकान्त साधना के महत्व से विमोहित होकर लोकहित में अनुरक्त हो जाते है। इस प्रकार यह एकांकी मानवीय चेतना को रूपामित करने में समर्थ है।

'महाभारत का वीर पुरुष' नामक एकांकी प्रस्तुत संकलन का दूसरा एकांकी है। यह एकांकी दो दृश्यों से युक्त है एवं दो मानवीय मूल्यों को प्रतिपादित करता है। पहला स्वाभिमान की रक्षा तथा दूसरा सामाजिक सम्बन्धों की तुलना में उपकार एवं मैत्री-भाव की रक्षा के प्रति निष्ठा। महाभारत का वीर पुरुष कर्ण है। युद्ध से पूर्व कृष्ण कर्ण को पाण्डवों के साथ उनका सम्बन्ध बता देते है और कौन्तेय कहकर पुकारते है। भीष्म भी उसकी पाण्डवों का पक्ष लेने का परामर्श देते हैं। किन्तु कर्ण रक्त-सम्बन्धों को महत्व न देकर दुर्योधन के उपकारों और मैत्रीभाव की रक्षा के लिए प्राण देता है। इस

देवयानी के मिथक की समसामयिकता....

की नैतिक पतन को इसमें परोक्षतः इंगित किया है। विद्या के मूल्यवान आदर्श स्थापित करते हुए नाटककार ने कचकुमार के मुँह से यों व्यक्त किए- "...एक चाह थी, एक ध्यान थी कि विद्याप्राप्त कर लूँ। विद्या का अर्जन निसार नहीं है। अध्ययन का काल तपस्या का काल है।"[४]

डॉ.नायर के आत्मप्रकाश का मूल उत्स भारतीय सास्कृतिक चेतना है। भारतीय संस्कृति में जिन युग पुरुषों की परिकल्पना हुई है, उस महान संस्कृति के उदात्त भाव को आत्मसात किया है। आधुनिक बोध से प्रेरित आज की युवानारी पारंपरिक पतिव्रता पत्नी बोध से मुक्त होना चाहती है। लेकिन नाटक में देवयानी के जरिए इस पतिव्रता पत्नी बोध को सुदृढ़ बना दिया है। निर्भाग्यवश आधुनिक काल को प्रशस्त करनेवाला तत्व हिंसा है। इस कृति में गाँधीजी जैसे युग पुरुषों की अहिंसा सिद्धांत के आदर्श प्रस्तुत किए हैं।

आजकल स्त्री-पुरुष संबंध, भोगलिप्सा, पारंपरिकता की उपेक्षा, आदर्शहीन रोमांसवृत्ति, खोखला जीवन दर्शन, भ्रष्ट छात्र जीवन, छट्ती गुरु भक्ति जैसे नाकारात्मक तत्वों को सकारात्मक दृष्टिकोण में लेखक ने उभारा है। यह आख्यान प्राचीन होते हुए भी डॉ. नायर जी की प्रतिस्थापना से आधुनिक बना है।

निष्कर्षतः 'देवयानी' एक आदर्श पौराणिक नाटक है। इसका प्रथम उद्देश्य भारतीय नारी की गरिमा, संयम, आदर्श और मानवता का चित्रण है। मानव जीवन में त्याग व संयम का प्रतिपादन करना, प्रेम व करुणा, उदारता, त्याग जैसे महान गुणों को उजागर करना, एवं भारतीय संस्कृति की महिमा का गायन इस नाटक का प्रमुख उद्देश्य रहा है। इस नाटक में पौराणिक कथा के सागर में अवगहन करके मिथकों के सौंदर्य को अभिव्यक्त कर देने में सफलता पा ली है।

१. भारतीय संस्कृति का प्रवाह, डॉ.कृपाशंकर, पृ.१११
२. डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर का नाट्य साहित्य, पृ.स.१२१.
३. डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर का नाट्य साहित्य-समीक्षात्मक अध्ययन, डॉ.एम.ए.करीम, पृ.सं.४
४. डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर का नाट्य साहित्य, पृ.१३५

लेक्चरर (कोन्ट्राक्टर), हिन्दी विभाग,
कार्यवट्टम कॉम्पस, केरला यूनिवेर्सिटी

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के निबंध: एक मूल्यांकन

डॉ. रम्या एल.

कलम के धनी डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायरजी हिन्दी तथा मलयालम की विभिन्न साहित्यिक विधाओं को अपनी विलक्षण प्रतिभा से संपन्न करनेवाले साहित्यकार हैं। बहुरंगी प्रतिभा के धनी नायरजी ने अपने लेखों, कहानियों, नाटकों, समीक्षाओं आदि के द्वारा हिन्दी साहित्य जगत में जिस अखण्ड गौरव और उज्ज्वल यश का प्रसार किया है वह हिन्दी के समृद्ध साहित्यकार के लिए भी प्रेरणा और आदर्श का विषय हो सकता हैं। नायरजी के व्यक्तित्व का सबसे प्रोज्वल रूप उनके साहित्यकार में दर्शित होता है। हिन्दी एवं मलयालम भाषा पर उनका विशेष अधिकार है। इस भाषाई पकड के कारण हिन्दी एवं मलयालम साहित्य की सभी विधाओं पर लेखनी चलाने में वे सफल निकले हैं। वे भारतीयता के साधक और आख्याता हैं और उनका साहित्य मानवतावाद पर आधारित है।

हिन्दी में साहित्य सृजन के अदम्य उत्साह से ऊर्जस्वित नायरजी ने गद्य के क्षेत्र में नाटक एवं कहानी की कथात्मक विधाओं में तो सिद्धहस्तता प्रतिपादित की ही, निबंध, समीक्षा एवं जीवनी लेखन में भी अपनी विशिष्ट क्षमता का परिचय दिया है। आपके तीन निबंध संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं - 'निबंध मंजुषा', 'भारतीय साहित्य' और 'भारतीय साहित्य और कलायें'। प्रथम निबंध संग्रह, 'निबंध मंजुषा' का प्रकाशन अगस्त १९६६ में हुआ। इसमें समसामयिक समस्याओं पर उन्होंने अपने विचार प्रकट किए हैं। इनमें संस्कृति, राजनीति, विज्ञान के आविष्कार, कला और साहित्य के विविध अंत तथा देश की विविध समस्याओं - अन्न समस्या, कश्मीर समस्या, भूदान यज्ञ, बेसिक शिक्षा, सहशिक्षा, राष्ट्रभाषा का प्रश्न आदि पर संक्षेप में प्रकाश डाला गया है। इसमें कुलमिलाकर बीस निबंध हैं।

दूसरी कृति 'भारतीय साहित्य' का प्रकाशन १९६७ ई॰ में हुआ। इसमें नायरजी के चार समीक्षात्मक निबंध संकलित हैं। इनमें दो काव्यों - श्री मैथिलीशरणगुप्त रचित यशोधरा और तुलसीकृत रामचरितमानस की समीक्षाएँ हैं और अन्य दो बंगला के नाटककार श्री द्विजेन्द्रलाल राय कृत नाटक शाहजहाँ तथा प्रेमचन्द रचित उपन्यास 'गबन' पर लिखी समीक्षाएँ हैं। 'यशोधरा' की साहित्यिक समीक्षा में उन्होंने काव्य के अन्तरंग और बहिरंग पक्षों पर विचार किया है। साथ ही गुप्तजी की 'वैष्णव भावना' और 'बुद्ध की निर्वाण भावना' तथा यशोधरा और बुद्ध के भाव-सामंजस्य की पृष्ठभूमि को भी स्पष्ट किया गया है। गुप्तजी द्वारा काव्य का विषय बनायी गयी उपेक्षिता नारियों-ऊर्मिला, यशोधरा, विष्णुप्रिया-की मनोभूमियों का तुलनात्मक अध्ययन निबंध की और एक खूबी है। विद्वान लेखक ने यशोधरा के चरित्र की व्याख्या करते हुए उसके आदर्श पत्नी, आदर्श माता और उपेक्षिता विरहिणी रूपों की सम्यक व्याख्या की है और 'यशोधरा' को एक सफल विरह-काव्य कहा है। डॉ.नायरजी ने 'यशोधरा' के वैशिष्ट्य को यों व्यक्त किया है - 'राष्ट्रकवि गुप्तजी की आत्मा उनकी अन्य रचनाओं से अधिक यशोधरा में निवास करती है। वस्तुतः वैष्णव कवि भी मैथिलीशरण गुप्तजी ने बुद्धदेव की पत्नी यशोधरा का प्रणयन करके काव्य क्षेत्र में ही नहीं, सांस्कृतिक क्षेत्र में भी भारतीय चिन्तन को समन्वयात्मक सूत्र में बाँधने का सफल प्रयास किया है।'[१]

दूसरे निबंध 'रामचरितमानस' की समीक्षा इन शीर्षकों के अन्तर्गत

नायरजी के एकांकी संकलन धर्म और अधर्म में अभिव्यक्त मानवीय चेतना...

एकांकी का दूसरा आयाम भारतीय जीवन मूल्य हे, स्वाभिमान की रक्षा। पाण्डव कर्ण को हीन कुल में उत्पन्न मानते है और दुर्योधन उसको मित्र मानकर उसके स्वाभिमान की रक्षा करता है। दुर्योधन की यह उदारता सोद्देश्यपूर्ण एवं अपने स्वार्थों की पूर्वक है पर कर्ण हारा उसके पक्ष का निर्वाह उसके स्वाभिमान की रक्षा का प्रतीक है। इस प्रकार मानवीय मूल्यों की रक्षा-हेतु इस एकांकी का सर्जन हुआ है।

'धर्म और अधर्म' प्रस्तुत एकांकी संकलन का प्रतिनिधि एकांकी है जो नामकरण से ही स्पष्ट है। यह चार दृश्यों से युक्त अपेक्षाकृत बड़ा एकांकी है। इस एकांकी की कथावस्तु महाभारतकालीन है। प्रथम दृश्य में द्रौपदी द्वारा अन्याय की समाप्ति के लिए पाण्डवों को युद्ध करने के लिए प्रोत्साहित करना, व्यास द्वारा युद्ध के परिणाम के प्रति, सशंकित युधिष्ठिर को अर्जुन की अपराजय भक्ति से आश्वस्त करना और अर्जुन का दिव्याशस्त्रों की खीज में निकल जाना प्रथम आदर्श का परिपालक है अथति् हिंसा तथा युद्ध के द्वारा अन्याय का निर्मूलन करने वाले आदर्श कीराह पर अग्रसर धेना है। एकांकी का दूसरा सोपान भी इसी आदर्श रक्षा का संकेत देता है। इन्द्र के रथ पर समाजीत अर्जुन गन्धमादन पर्वत पर आकर अपने प्रयासों की सफलता का ज्ञापन करता है और इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि दया और उदारता का निर्वाह हर स्थिति में धर्म नहीं होता अथति् किसी परिस्थिति में हिंसा तथा संहार भी धर्म होता है। यथार्थ में अपने शौर्य एवं पौरुष से अन्यायी तथा अधर्मी व्यक्ति का संघट करना ही धर्म होता है। इसी को आदर्श नीति मानकर कृष्ण ने जरासंध का संहार करके धर्म एवं मानवता की रक्षा की थी, यही आदर्श अर्जुन के सामने भी था। तीसरा दृश्य गाँधी और चाणक्य दोनों के आदर्शों का संकेत देता है। कृष्ण हिंसा तथा संहार से बचाने के लिए दुर्योधन के यहाँ जाते हैं। पाण्डवों के लिए राज्य नहीं केवल पाँच गाँव माँगते है। यह प्रयास गाँधीवादी आदर्श का निर्वाह करता है। पर वह, अपने प्रयासों की विफलता पर निष्क्रिय होकर नहीं बैठते और न आततायी के प्रहार को सहते हैं वरन् चाणक्य के आदर्श का अनुसरण करते हैं और इस प्रकार अधर्म के विनाश का पथ प्रशस्त करते है। यही भारतीय आदर्श है और इसी में निशित है मानवीयता। इसी आदर्श का निर्वाह करते हुए अर्जुन कर्ण का वध करता है और महाभारत युद्ध में विजयी होता है एवं अन्यायी पक्ष का उन्मूलन करके मानवीय आदर्श एवं धर्म की स्थापना करता है।

इस प्रकार हम देखते है कि नायर जी के एकांकी साहित्य के मूल में एक ही दृष्टि अन्तर्निहित है और वह हे मानवीय आदर्शों की रक्षा, इंसानियत की अभिवृद्धि और उदात्त जीवन-मूल्यों के आचरण के साथ गहरी प्रतिबद्धता।

असिस्टन्ट प्रोफसर, डी.बी. कॉलेज, तलयोलप्परम्बू

की गई है-तुलसी के राम, लोकनायक तुलसी, तुलसी का रामराज्य, रामचरितमानस का कला-पक्ष, अभिव्यंजना पक्ष। इस संक्षिप्त निबंध में लेखक ने रामचरितमानस और तुलसी की महत्ता का उजागर करने का प्रयत्न किया है, साथ ही गाँधीवादी युग में उसके वैचारिक समन्वय और सांस्कृतिक एकता बनाये रखने की क्षमता की ओर भी संकेत किया है। इस प्रकार लेखक ने 'रामचरितमानस' को आधुनिक दृष्टि से देखकर वर्तमान सन्दर्भों में उसकी उपयोगिता पर सम्यक प्रकाश डाला है।

प्रसिद्ध बंगला नाटककार द्विजदेवलाल राय के नाटक 'शाहजहाँ' पर नायरजी ने एक समीक्षा प्रस्तुत की है। यह निबंध उपशीर्षकों में बाँटकर प्रस्तुत किया गया है। यथा-नाटक की कथा, नाटक की सामान्य पर्यालोचना, कथोपकथन, रस, उद्देश्य, अभिनय-योग्यता, ऐतिहासिकता, शीर्षक, स्त्रीपात्र, औरंगज़ेब। नाटक मुख्य रूप से चरित्र-चित्रण पर आधारित है, इसलिए डॉ.नायरजी ने भी चरित्र चित्रण को लेकर निबंध की रचना की है। निबंध में उन्होंने पात्रों की दो कोटियाँ निर्धारित की हैं - मानव पात्र और अमानव पात्र। मानव पात्रों में शाहजहाँ, दारा, शुजा, मुराद, महामाया, नादिरा, जहाँनारा, पियारा को लिया गया है और अमानव पात्रों में औरंगज़ेब एवं जिहन खाँ का विशेष उल्लेख किया गया है।

'गबन' में लेखक ने प्रेमचन्द जी की उन विशेषताओं की चर्चा की है जिन्होंने उन्हें 'उपन्यास सम्राट' पद पर अधिष्ठित करने में सहयोग दिया है। निबंध में प्रेमचन्दजी की पैनी दृष्टि, चरित्र चित्रण की अन्यतम क्षमता, शोषण के विरुद्ध संघर्ष की चेष्टा, कलात्मक अभिव्यक्ति एवं निगूढतम भावों को चित्रित करने का सफल प्रयास किया गया है।

'भारतीय साहित्य और कलायें' आपके फुटकर निबंधों का संकलन है। इसका प्रथम संस्करण १९६७ में तथा दूसरा संस्करम १९७७ में प्रकाशित हुआ। संकलन के अधिकांश निबंध समीक्षात्मक हैं जिसमें हिन्दी एवं मलयालम साहित्य के विभिन्न पक्षों को देखने-परखने का प्रयास है। उपनिषदों में प्रतीक विधान नामक निबंध में डॉ.नायरजी ने भारतीय उपनिषदों में प्रतिकात्मक प्रयोगों का अन्वेषण किया है। उनके अनुसार उपनिषद भारतीय दार्शनिक परम्परा के बीजरूप है तथा उसमें ब्रह्म के स्वरूप का विवेचन है। लेखक ने मुण्डकोपनिषद्, ईशावास्योपानिषद्, कठोपनिषद्, प्रश्नोपनिषद्, मण्डूक्योपनिषद्, तैशियोपनिषद्, धान्दोग्योपनिषद् तथा बृहदारण्यक उपनिषद् से उद्धरण देकर उपनिषदों की समृद्ध प्रतीक योजना को स्पष्ट किया है। रामचरितमानस का कथा शिल्प में लेक्क ने रामकथा के मूलस्रोतों तक पहुँचने का प्रयास किया है। इसमें उनके प्रौढ़ आलोचना क्षमता एवं शोधवृत्ति का परिचय मिलता है। सूरसाहित्य और मलयालम का कृष्णकाव्य आपके द्वारा लिखा गया तुलनात्मक निबंध है। इसमें सूरदास के कृष्णभक्ति काव्य और मलयालम के कवियों के कृष्णभक्ति काव्य के साम्य-वैषम्य को उजागर किया गया है। समीक्षा में डॉ.नायरजी ने सूरदास के बाल-लीला वर्णन एवं सूरकाव्य की विशेषताओं की खुब प्रशंसा की है और आपने यह भी सिद्ध किया कि सुर की समता रखनेवाले कृष्ण भक्त कवि मलयालम में है ही नहीं।

मलयालम के महाकवि उल्लूर परमेश्वर अय्यर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर लिखा गया निबंध है उल्लूर परमेश्वर अय्यर भारतीय संस्कृति के महाकवि। इसमें कर्णभूषण, पिंगला, भक्तिदीपिका जैसी रचनाओं का अध्ययन मानवीयता, विश्वप्रेम और भारतीय संस्कृति के धरातल पर किया गया है। महाकवि के व्यक्तित्व की रेखाओं और कृतित्व की उदात्तता और तेजस्विता को निबंध की सीमाओं में साकार करने में लेखक सफल हुए हैं। शुक्लोत्तर हिन्दी आलोचना को दक्षिण के हिन्दी आलोचकों का योगदान नामक निबंध में शुक्लोत्तर युग में दक्षिणी प्रदेशों के हिन्दी आलोचकों की गतिविधियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया है। पंत और जी के काव्य में दार्शनिकता और रहस्यात्मकता का जो स्रोत है उसे कवीन्द्र रवीन्द्र के काव्य में ढूँढने का प्रयास है कवीन्द्र रवीन्द्रः सुमित्रानंदन पंतः जी शंकर कुरुप नामक निबंध। भारतीय महाकवि जी.शंकर कुरुपः प्रकृति और पुरुष में लेखक ने जी के प्रकृति-विषयक दृष्टिकोण तथा उनके काव्य में प्रकृति और पुरुष के अभेदत्व को स्पष्ट किया है। डॉ.नायर जी के शब्दों में-जी अपनी प्रतीक क्रिया के कारण मलायलम के अकेले महाकवि हैं। प्रकृति के अनंत उपादानों को प्रतीकों की प्रोशाक पहनाकर कुरुपजी ने भावोद्दीपन की जो अनन्यसादृश प्रगल्भता प्रकट की, वह अद्भुत है।[२] भारतीयता एवं मानवता के पूजारी वल्लत्तोल के काव्य-वैशिष्ट्य एवं काव्य-प्रेरणाओं का परिचय नायरजी ने भारतीय महाकवि श्री. वल्लत्तोल नारायण मेनोन शीर्षक निबंध में दिया है। यह निबंध महाकवि वल्लत्तोर के व्यक्तित्व और कृतित्व की एक झलक प्रस्तुत कर उनके काव्य में अधिकाधिक अवगाहन की उत्सुकता जागृत करता है। भारतीय साहित्य में ऐतिहासिक उपन्यास निबंध में डॉ.नायरजी ने भारतीय भाषाओं में रचित ऐतिहासिक उपन्यासों पर अपने विचार प्रकट किए हैं। इसके अन्तर्गत केंपु नारायण का मुद्रामंजुषे, श्री.सी.वी.रामनपिल्लै का मार्तांडवर्मा, टी.एम.अप्पु नेडुंगाडी का कुन्दलता तथा ओ.चन्दुमेनन का इन्दुलेखा का उल्लेख मिलता है। मलयालम काव्य में नए प्रयोग इस संकलन का प्रमुख निबंध है जिसमें अपने मलयालम काव्य में नए प्रयोग करनेवाले कुमार आशान, वल्लत्तोल, उल्लूर, जी.शंकरकुरुप, पी.भास्करन, ओ.एन.वी.कुरुप, इडश्शेरी गोविन्दनकुट्टि नायर और वयलार रामवर्मा की कविताओं के रसास्वादन की क्षमता और काव्य-प्रवृत्ति पर विचार किया है।

मलयालम कहानी एक विहंगावलोकन एक लघु निबंध हैं जिसमें लेकक ने मलयालम कहानियों की गतिशील दिशा का अध्ययन प्रस्तुत किया है। छायावादेत्तर काव्य को अंचलजी की देन में डॉ.नायरजी ने छायावादी चिन्तन की मूलभूत उद्भावनाओं एवं उसके समृद्ध और आकर्षक काव्य स्वरूप का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। लेखक की मान्यता है कि छायावाद प्रतीक्षा, संघर्ष और आशा का युग है और इसी युग में अंचलजी ने सामाजिक विषमताओं के मध्य श्रमिकों के जीवन की करुण कहानी भावविह्वल स्वर में कही है। उनकी दृष्टि में छायावादी काव्यशैली से अंचलजी ने चित्रात्मकता एवं भावानुभूति ग्रहण की तो स्वयं के अनुभवों से दलितों के जीवन की विषमता का चित्र उकेरा है। भारतीय महाकवि जी.शंकर कुरुप और हिन्दी के सिंबालिक कवि में डॉ.नायरजी ने जी के प्रतीक-विधान की चर्चा के साथ-साथ प्रसाद, निराला, पंत और महादेवी के प्रतीक विधानों का उल्लेख किया है। केरल की कलागत उपलब्धियाँः चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला संकलन का सर्वाधिक लंबा निबंध है जिसमें लेखक ने केरलीय वैभव के परिप्रेक्ष्य में वहाँ की चित्रकला, मूर्तिकला और वास्तुकला के उन्नत स्वरूप की झाँकी प्रस्तुत की है। चित्रकला पर चर्चा करते समय डॉ.नायरजी ने केरल के भित्तिचित्रों का उल्लेख करते हुए उनको कला की दृष्टि से अत्यंत श्रेष्ठ और प्रशंस्य कहा है। केरल की मूर्तिकला का निरूपण करते हुए उन्होंने शिला-शिल्प, धातुशिल्प एवं दारु शिल्प की विविध शैलियों का विस्तृत विश्लेषण किया है। वास्तुकला

डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर की देश-भक्ति-परक कविताएँ-आधुनिकता के विशेष सन्दर्भ में

रीजा आर.एस.

केरल के हिन्दी साहित्यकारों में डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर अग्रगण्य हैं। उनका जन्म २७ जून १९२४ ई॰ में शास्तांकोट्टा में हुआ। कवि, नाटककार, कहानीकार, उपन्यासकार, प्रबन्धकार, अनुवादक, आलोचक, चित्रकार आदि विभिन्न रूपों में उन्होंने अपना अद्वितीय व्यक्तित्व प्रकट किया है। भारत की भावात्मक एकता को दृष्टि में रखकर १९८० में 'केरल हिन्दी साहित्य अकादी' की स्थापना की। वह उनकी मानस संतान है।

१९५७ को डॉ. चन्द्रशेखरन नायर जी आचार्यवर्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी जी से मिले थे। लंबी देर की चर्चा के बाद आचार्यवर ने श्री.चन्द्रशेखरन नायर जी को गले से लगा लिया और आर्शीवाद दिया। उस घटना को लेकर डॉ. चन्द्रशेखर नायर जी कहते हैं कि वह हमारेलिए एक 'सांस्कृतिक दिवस' था। डॉ. सुमित्रानन्दन पंत और श्री. जी.शकरकुरुप की प्रतीकवादी कविताओं पर डॉ. चन्द्रशेखरन नायर जी का शोध प्रबन्ध तैयार हुआ था। प्रबन्ध समर्पित करके लौटते समय डॉ. चन्द्रशेखरन नायर जी पंत जी से मिले। पंत जी ने ग्रन्थ के पन्ने पलटकर देखे और उसी ग्रन्थ पर लिख दिया - 'इस ग्रन्थ में अपने विषय के सभी पहलुओं का गंभीर और व्यापक अध्ययन मिलता है। अनेक वर्षों से लेखक अपने विषय का अध्ययन करता आ रहा है। वस्तुतः एक दक्षिणात्य विद्वान के द्वारा यह ग्रन्थ हिन्दी साहित्य केलिए ही नहीं, अपितु समस्त भारतीय साहित्य केलिए एक विशिष्ट देन है। मैं मनीषी लेखक को हार्दिक बधाई देता हूँ।'[1] ये दोनों उनकी ज़िन्दगी की महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं।

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर एक बहुचर्चित चित्रकार भी हैं। 'प्रकृति और पुरुष', 'सीता-राम', 'गीतोपदेश', 'भगवान मुद्ध', 'विवेकानन्द' आदि उनके ख्याति-प्राप्त चित्र हैं। वे भारतीय और पाश्चात्य चित्रकला के अच्छे मर्मज्ञ भी हैं।

हिन्दी और मलयालम में उनके पचास ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं, तीन सौ पचास से अधिक रचनाएँ स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुई हैं। अनेक पत्रिकाओं और ग्रन्थों का संपादन का कार्य भी उन्होंने किया है। १९९६ से केरल हिन्दी साहित्य अकादमी से प्रकाशित 'शोध पत्रिका' (त्रैमासिक) के संपादन से शोध के क्षेत्र में उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किया है। डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर पर सात शोध-ग्रन्थ लिखे गये हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर २५० साहित्यकारों के लेख प्रस्तुत हो चुके हैं।

डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर एक अच्छे नाटककार हैं। 'द्विवेणी, 'कुरुक्षेत्र जागता है', 'युग संगम', 'सेवाश्रम', 'देवयानी', 'धर्म और अधर्म' आदि हिन्दी नाटक क्षेत्र की महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हैं। वे मानवीय आदर्शों के कहानीकार भी हैं। 'हार की जीत', 'प्रोफेसर और रसोइया' आदि उनके कहानी संग्रह हैं। इनकी कहानियों में हिन्दी के वरिष्ठ कहानिकार प्रेमचन्द की तरह सार्वभौमिकता के साथ-साथ स्थानीयता का तीखा यथार्थ भी झलकता है। इसलिए डॉ. नथन सिंह ने उन्हें 'केरलीय प्रेमचन्द' कहा और उस नाम पर एक जीवनी भी लिखी। राष्ट्रीय और राज्यस्तरीय कई-पुरस्कारों से डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर जी सम्मानित हुए हैं।

डॉ.एन. चन्द्रशेखरन नायर की लेखनी काव्य-भारती से भी अनुगृहीत है। आधुनिक काव्य-कला की सभी मुख्य विशिष्टताएँ उनके काव्यों में प्राप्त होती हैं। छायावाद, बिंबवाद, यथार्थवाद, अस्तित्ववाद, आधुनिकतावाद आदि अनेक सिद्धान्दन्तों की विशेषताएँ उनकी कविताओं में मिलती हैं। उनकी रचनाओं का मूल स्वर राष्ट्रीय-तथा सांस्कृतिक है। उनके गीत मधुर संगीत से मंडित हैं, उनमें गंभीरता के शंखनाथ के साथ-साथ सुकुमारता का मधुर वीणारव भी गूँज उठता है।

डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर की कविताएँ गहरी संवेदना और लोकमंगल की भावना से ओत-प्रोत हैं। युगीन भावनाओं को प्राचीन परिवेश से वलियत कर अद्यतन रुप में प्रस्तुत करने का उनका कौशल श्लाघ्य है। उनकी सृजन-चेतना सजीव, संपन्न, सम्यक और सम्मोहक हैं। उनकी कतिपय कविताएँ छायावादी शैली की है एवं कतिपय प्रगतिवादी शैली की। प्रयोगवादी कविताएँ भी उनके द्वारा रची गयी हैं।

हिन्दी के अनेक प्रसिद्ध कवियों की रचना धार्मिता की झलक इनमें देखी जा सकती है। पंत और निराला की सौन्दर्य दृष्टि, प्रसाद और महादेवी वर्मा का दार्शनिक भाव बोध, माखनलाल चतुर्वेदी और दिनकर का राष्ट्रीय स्वर, बच्चन और नवीन का गीतलय इत्यादि सब एक साथ इन कविताओं में मिलते हैं। रवीन्द्रनाथ ठाकुर और बंकिमचन्द्र जैसे भारतीय कवियों के देश-प्रेम मय भावनाओं से डॉ.चन्द्रशेखरन नायर की कविताओं का राष्ट्रीय भाव साधर्म्य रखता है। शेली, कीट्स जैसे पश्चिमी कवियों की सौन्दर्य तृष्णा और आधुनिकता

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के निबंध: एक मूल्यांकन....

के अन्तर्गत केरल के मन्दिरों एवं भवनों की सूक्ष्मतिसूक्ष्म विशेषताओं को स्पष्ट किया है। इन निबंध संकलनों के अतिरिक्त उनके अनेक बिनंध विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। इन फुटकर निबंधों में भी अधिकांश समीक्षात्मक हैं, शेष कला, राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रभाषा, सांस्कृति आदि से संबंधित हैं।

डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायरीज हिन्दी के शीर्षस्थ गद्य लेखक हैं। मानव मात्र के हृदय को प्रभावित करने की अनूर्व शक्ति उनके निबंधों में वर्तमान है। उन्होंने विभिन्न लेखकों की विभिन्न रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन करके उनकी साहित्यिक सेवा का मूल्यांकन किया है। उनके निबंध अनुसंधानपरक दृष्टिकोण, विस्तृत अध्ययन और चिन्तनशील व्यक्तित्व की झलक दिखाते हैं। प्रतिपादन की स्पष्टता उनकी शैली का मुख्य गुण है। निश्चय ही आप हिन्दी साहित्य के वरिष्ठ लेखक और हिन्दी भाषा के निस्वार्थ सेवी हैं।

१. भारतीय साहित्य - पृ.सं.४५
२. भारतीय साहित्य और कलायें - पृ.सं.६५

पोस्ट डॉक्टरल फेलो, हिन्दी विभाग,
कार्यवट्टम, यूनिवेर्सिटी ऑफ केरला

बोध भी चन्द्रशेखरन नायर जी की कविताओं में कम नहीं है। वे राष्ट्रीय गीतकार के रूप से जाने जाते हैं।

'कविताएँ देशभक्ति की' (१९९४) राष्ट्रीय गीतकार डॉ.चन्द्रशेखरन नायर का काव्य संकलन है। इनमें उन्तीस कविताएं संकलित हैं। इनमें 'हिमालय गरज रहा है' (१९६५), 'बीसवीं सदी का मनुष्य', 'रामराज्य हिन्दी के प्रति', 'नया वेदान्त', 'मत करना परीक्षण', 'लोकतंत्र ने अपना झंडा फहराया', 'तोड़ना नहीं बनाना है जीवन की रेख', 'आज वह मालिक है', 'गरिमामयी भारत जननी', 'शकुन्तला हाय शकुन्तला' जैसी कविताएँ उल्लेखनीय हैं।

भावना एवं कल्पना के धनी डॉ.चन्द्रशेखरन नायर ने कविता-कुसुमों से धरती माता की पूजा-अर्चना की है। यहाँ माँ साधारण माँ नहीं है, व्यास, ईसा, शंकर, लिंकन, विवेकानन्द, गाँधीजी, जवाहर जैसे पुत्र रत्नों की जननी है, जिन्होंने कर्मवीर बनकर संसार में शाश्वत प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली है।

'हिमालय गरज रहा है' (१९६५) उनका ख्याति-प्राप्त खण्डकाव्य है। हिन्दीतर-भाषी हिन्दी साहित्यकार के द्वारा रचित यह प्रथम प्रबन्ध कृति है। इनमें कवि का उज्ज्वल राष्ट्र-प्रेम व सांस्कृतिक प्रेम प्रकाशमय हो उठा है। चीनी आक्रमण की पृष्ठ-भूमि में रचित यह कृति अपनी ओजपूर्ण भाषा शैली के कारण विशेष आकर्षक बन पड़ी है। यह अपनी देशभक्ति एवं राष्ट्रीय भावना के कारण हिन्दी काव्य विकास के पथ पर एक अनमोल रत्न है।

आधुनिकता के कई रूप हैं। जिनमें एक परंपरा का निषेध भी है। डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर जी की ऐसी कविताओं का विश्लेषण मैं यहाँ कर रही हूँ, जिनमें आधुनिक पीठी द्वारा परंपरा का निषेध हो रहा है, परंपरा के विरुद्ध हो रहा है और विभिन्न प्रकार की आधार्मिकताओं और अनैतिकताओं से समाज अस्तव्यस्त हो रहा हैं।

'तोड़ना नहीं बनाना है जीवन की रेख' गाँधी जन्म शताब्दी की याद दिलानेवाली एक कविता है। गाँधी जन्म शताब्दी मनायी जा रही है। सब का मन उत्साह से भर जाता है। नयी पीढ़ी को जगाने और उनमें सत्य, अहिंसा के प्रति आस्था जगाने के उद्देश्य से यह त्योहार मनाया जा रहा है। कवि कहते हैं:

'नव युवकों को सही मार्ग दिखाऊँ/कुत्सित फैशन से उन्हें बचाऊँ/सत्य-अहिंसा के ताने बाने में/छात्रों का जीवन बन डालूँ मैं।'[२]

गाँधी जन्म शताब्दी के सभी कार्य, कार्यक्रम के अनुसार होते हैं। जुलूस, सम्मेलन, आस्पतालों में छात्रों का शुचीकरण जैसे कार्य चलते हैं। लेकिन जिस महती उद्देश्य से शताब्दी का यह त्योहार मनाया गया उसकी पूर्तित्व नहीं हुई उलटे इसके नाम पर चारों ओर संघर्ष चले, इत्याएँ हुई, गांधीजी की मूर्तियाँ भी इधर-उधर तोड़ी गयी, पुलिस आयी, सामाजिक और पारिवारिक जीवन अस्तव्यस्त हो गया शान्ति के बदले अशान्ति का वातावरण छा गया।

आधनिक जीवन की अनुशासन हीनता और लोगों के लालची एवं भ्रष्ट व्यक्तित्वों पर इस कविता ने प्रकाश डाला है।

'गाँधी एक संकल्प है जगत का/एक शाश्वत प्रतीक है भारत का/हम चरितार्थ हुए शुभ परिणाम देख/तोड़ना नहीं बनाना है जीवन की रेख।'[३]

'मत करना परीक्षण' नामक कविता लोकतंत्र के गुणों पर प्रकाश डालती है। हम लोकतंत्र पर विश्वास करते हैं। लोकतंत्र में अहिंसा, सत्य और नीति का ही स्थान है, लेकिन आधुनिक युग अहिंसा को छोड़कर हिंसा के द्वारा शक्ति परीक्षण करना चाहता है। पशुबल, मायावी, आणवीय छल आदि का उत्तर हम सत्य, अहिंसा और नीति से दे सकते हैं। कवि कहते हैं-

'पशुबल की बराबर नीति का/मयावी और आणवीय छल का/उत्तर हम दे सकते हैं, हर क्षण/मत कर बैठना शक्ति परीक्षण।'[४]

आधुनिकता मनुष्य को स्वार्थी बनाती है। रावण का पतन अपहरण से ही हुआ। आधुनिक युग में सर्वत्र अपहरण ही होता रहता है। धन, संपत्ति, विज्ञान, मनुष्य सबका अपहरण होता है। आधुनिकता रूपी मोह माया ने अपहरण रूपी छाया बीछाकर सर्वत्र अशान्ति फैलायी है। इसलिए कवि कहते हैं कि आधुनिकता के नाम पर सत्य, धर्म, नीति, अहिंसा आदि सात्विक गुणों के विरुद्ध परीक्षण करना मानवीय नहीं है।

'राम राज्य' नामक कविता पृथ्वी में राम राज्य की स्थापना को लक्ष्य करके लिखी गयी है। इसमें राम राज्य भाववाचक संज्ञा है, सर्वगुण संपन्नता का अर्थ इसमें रहता है। आज़ादी के पहले यह शब्द मोहक था। त्रेतायुग में वह केवल व्यक्तिवाचक था, श्रीराम का व्यक्तित्व इतना महान था, उनका शासन इतना मंगलकारी था कि शीघ्र ही व्यक्तिवाचकता राम शब्द से निष्कासित हुई और गुणवाचकता उसमें आ गयी। आज़ादी के द्वारा गाँधीजी राम राज्य की स्थापना करना चाहते थे। लेकिन कुछ नहीं चला। अब इस शब्द का कोई विशेषार्थ नहीं रहा।

आधनिकता ने राम राज्य की गुणात्मक संकल्पना को ठप कर दिया। कवि के शब्द हैं-

रामराज्य/'व्यक्तिवाचक, भाववाचक/दोनों से आगे गया/पता नहीं, उसका/अब क्या वाचक है?'[५]

आधुनिकता ने लोगों को घमंडी बना दिया है, वे इतना गर्वीले हो गये हैं कि आम जनता पर उनका ध्यान ज़रा भी नहीं जाता। ये प्रवृत्ति अब बढ़ती ही जा रही हे। प्रस्तुत कविता 'आज वह मालिक है' वर्तमान युग की इस अहं भावना को मूर्त करती है। यह कविता कवि के एक साधारण पडोसी रामदेव से संबन्ध रखती है। वह बहुत दयालू था, नरमी से बोलता था, सीधा-सादा व्यक्तित्व रखता था लेकिन शीघ्र ही उसमें बदलाव आ गया। अब वह मालिक हो गया। फलत: वह ऐसा अकड़कर चलने लगा कि पहले के मित्रों और पडोसियों तक की ओर देखता भी नहीं। आधुनिकता ने उसे इस ढंग से परिवर्तित किया कि मानो वह मनुष्य ही नहीं है, देव हो। कवि के शब्द हैं-

'आज वह तोंदवाला है/डील-डौल नहीं है/नाटा है/शरीर मुलायम है, पर/बोली में आदेश का वचन है/चलता तो अकड़कर है/मैं देखकर हैरान हो जाता हूँ/आज वह मालिक है।'[६]

शकुन्तला! हाय शकुन्तला!! नामक कविता आधुनिक नारी के नकली सौन्दर्य प्रदर्शन पर व्यंग्य करती है। आधुनिक नारी अपनी वेष-भूषा पर अधिक ध्यान देती है। आधुनिक भावबोध में डूबकर नारी नकली सौन्दर्य के पीछे भागती है। प्रस्तुत कविता में स्टैशन के मैदान में सांस्कृतिक समारोह का अद्घाटन हो रहा है। मंत्री पधारे हुए हैं। अभिनेत्री की सी वेष भूषा धारण करके एक नारी भी बैठी हुई थी। उसे देखकर लगता था कि सर्वांग सुन्दरी शकुन्तला है। वास्तव में उसका नाम श्यामा था जो एक साधारण नारी थी। साज-सज्जा, आडंबर, तड़क-भड़क इत्यादि के कारण मंत्री भी

श्री अक्षरगीता

(बारहवाँ अध्याय)

डॉ. वीरेन्द्रशर्मा

अर्जुन बोले-

सतत युक्त जो भक्त आपके
इस प्रकार करते पूजन
अक्षर, निर्गुण, अन्य कौन से
उत्तम उनमें योगी जन

श्रीभगवान बोले-

तत्परमन मुझमें होकर जो
नित्य युक्त मुझको भजते
अति श्रद्धा से, मत में मेरे
योगी वे उत्तम होते

वश में करके सभी इन्द्रियां
भजते अक्षर, अचल, अरूप
निर्गुण, ध्रुव, जो सदा एक रस
निर्देशों से परे स्वरूप

सभी जगह समबुद्धिभाव से
सब में व्यापक को भजते
वे सब मुझको ही पाते हैं
सबके हित जो रत रहते

निर्गुण में आसक्त चित्त की
श्रान्ति अधिक बढ़ जाती है
देह-मान से गति अरूप की
प्राप्ति कष्ट से होती है

किन्तु परायण मुझमें जन जो
कर्म सभी अर्पित करते
भक्तियोग एकाग्र सतत जो
मेरा ध्यान भजन करते

मृत्युरूप भवसागर से मैं
उद्धारक उनका तत्क्षण
अर्जुन, जन जो कर देते हैं
अर्पित मुझमें अपना मन

चित्त लगाओ मुझमें अपना
बुद्धि लगाओ मुझमें ही
वास करोगे मुझमें ही तुम
इसमें है संदेह नहीं

अर्जुन, स्थिरचित्त नहीं यदि
कर पाते हो तुम मुझमें
मुझे प्राप्त करने की इच्छा
करो योग-साधित मन में

यदि अभ्यास नहीं है संभव
मेरे हित ही कर्म करो
करते हुए कर्म मेरे हित
सिद्धि-लाभ फिर प्राप्त करो

मेरे योगाश्रित होकर तुम
हो अशक्त यदि इसमें भी
आत्मवान होकर तज दो फिर
तुम सब कर्मों के फल भी

ज्ञान श्रेष्ठ अभ्यासयोग से
ध्यान ज्ञान से श्रेयस्कर
त्याग-कर्म-फल श्रेष्ठ ध्यान से
शान्ति त्याग से ही सत्वर

द्वेषहीन है जो दयालु है
मित्र सभी का ममताहीन
क्षमाशील, सम दुःखसुख में जो
आत्मजयी मद मान विहीन

मेरा भक्त मुझे वह प्रिय है
निश्चय दृढ़ जिसका होता
अर्पित चित्त बुद्धि मुझमें कर
सदा तुष्ट योगी रहता

हो उद्विग्न न जिससे कोई
स्वयं कभी उद्विग्न नहीं
उद्वेगों से मुक्त मुझे प्रिय
भीति न हर्ष न द्वेष कहीं

शुद्ध, दक्ष, हो व्यथारहित है
नहीं दुःखी या इच्छुक है
सर्वारम्भ परित्यागी वह
जन तटस्थ मुझको प्रिय है

हर्ष न जिसको द्वेष न जिसको
नहीं दुखी या इच्छुक है
भक्तियुक्त जन वह प्रिय मेरा
सभी शुभाशुभ त्यागी है

शत्रु मित्र अपमान मान में
जो समान है सुख दुःख में
शीत उष्ण में है समान जो
जो समान सब द्वन्दों में

जो समान निन्दा स्तुति में
मननशील स्थिरमति जन
भक्तियुक्त जन प्रिय वह मेरा
सब प्रकार संतुष्ट सुजन

धर्ममयी संवादसुधा का
श्रद्धायुक्त करें सेवन
पूर्ण समर्पित, भक्तियुक्त वे
प्रिय मेरे अत्यन्त सुजन •

डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर की देश-भक्ति-परक कविताएँ-आधुनिकता के विशेष सन्दर्भ में...

पहले उसे पहचान नहीं पाये थे। नकली वेष-भूषा के कारण ही वे उसे पहचान न पाये। लेकिन तुरन्त ही उन्होंने उसे पहचान लिया और कहा-

'हलो शम्मी, क्या कहूँ तेरा रूप।'[७]

अनवसर पर मंत्री को नेपथ्य में देखकर श्यामा चकित होती है और तुरन्त भाग जाती है। यहाँ आधुनिक युग की नकली आदतों पर प्रकाश डाला गया है। वस्तुतः नकलची आधुनिक युग का अभिशाप है।

डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर दक्षिणी हिन्दी साहित्यकारों में अग्रस्थानीय हैं। डॉ. वेल्लायणी अर्जुन, डॉ. चन्द्रशेखरन नायर जी को समस्त अहिन्दी प्रदेशों के हिन्दी महाकवि मानते हैं। उनकी सभी कविताओं में उत्साह, उल्लास, और उद्‌बोधन का काव्यमय स्वर सुनायी देता है।

सन्दर्भ सूची:

१. डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायरः संवेदना और अभिव्यक्ति, डॉ. अमरसिंह वधान, पृ.७२
२. कविताएँ देशभक्ति की, डॉ. चन्द्रशेखरन नायर, पृ.७५
३. वही ,, पृ.७७
४. वही ,, पृ.६९
५. वही ,, पृ.३८
६. वही ,, पृ.३९
७. वही ,, पृ.७०

सहायक ग्रन्थ सूची:

१. डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायरः संवेदना और अभिव्यक्ति संपादकः डॉ.अमरसिंह वधान, प्रथम संस्करणः २००८ प्रकाशकः अभिषेक प्रकाशन, दिल्ली.
२. कविताएँ देशभक्ति कीः डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, प्रथम संस्करणः १९९४, प्रकाशकः केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, तिरुवनन्तपुरम-४
३. केरल में हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास, डॉ. एन.ई. विश्वनाथ अय्यर, प्रथम संस्करण १९९६, प्रकाशनः विश्वविद्यालय प्रकाशन, वारणासी
४. उत्तराधुनिकता कुछ वितार, संपादनः देव शंकर नवी, सुशान्त कुमार मिश्र, प्रथम संस्करण २०००, प्रकाशनः वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
५. അനന്തപുരിയും ഞാനും (ഡോ.എൻ.ചന്ദ്രശേഖരൻനായരുടെ ആത്മകഥ), ഡോ.എൻ.ചന്ദ്രശേഖരൻ നായർ, 2008, പ്രസാധനം: ശ്രീനികേതൻ, ലക്ഷ്മീനഗർ, തിരുവനന്തപുരം.
६. ഡോ.എൻ.ചന്ദ്രശേഖരൻ നായരുടെ കഥകൾ, ഡോ.എൻ.ചന്ദ്രശേഖരൻ നായർ, 2007. പ്രസാധനം: കേരള ഹിന്ദി സാഹിത്യ അക്കാദമി, തിരുവനന്തപുരം.
७. ഡോ.എൻ.ചന്ദ്രശേഖരൻ നായർ. സാഹിത്യം-സംസ്കാരം-കല-സാഹിത്യകാരൻ. സമ്പാദകർ: ഡോ.എൻ.ചന്ദ്രശേഖരൻ നായർ സപ്തതി സമിതി, 1994. പ്രസാധനം: ശ്രീനികേതൻ പ്രകാശൻ, തിരുവനന്തപുരം.

शोध छात्रा, यूनिवेर्सिटी लाइब्रेरी, पालयम, तिरुवनन्तपुरम

समीक्षा

आरण्यक

बंगाल की औरतें सुन्दर और सेस्की होती हैं। सेक्स के मामले में कुशल जादूगरनी। पश्चिमी पाकिस्तानी पंजाबी पठान, शेख उन सुन्दर लडकियों को अपनी हवश का शिकार बनाने लगे। अर्थात् बंगाली जाति का घोर अपमान। बंगाली संस्कृति और भाषा का अपमान यानी मुक्तियुद्ध की भेरी बज उठी। बंगला देश उसी का परिणाम है। पढिए दिल थामे। **प्राप्तिस्थान (033) 22135102 स्वदेश भारती, मोबाइल 09239040156, फोन 2406-7127**

विशेष महत्व के कतिपय ग्रंथ

तमिल संगम-साहित्य; विख्यात हिन्दी तमिल लेखक श्री. डा.एम.शेषम के अनेक हिन्दी ग्रंथों में यह ग्रंथ भी पठनीय एवं संग्रहणीय है। संगमकाव्य तमिल का प्राचीनतम उपलब्ध साहित्य है। विद्वानों के मतानुसार वह संपूर्ण तमिल-साहित्य की शिराओं में प्रवहमान रक्तधारा है।

तोलकाप्पियम

तमिल भाषा का पुराकालीन काव्य शास्त्र का आकर ग्रंथ है यह। भारत में संस्कृत के पश्चात् प्राचीनतम साहित्य तमिल भाषा में प्राप्त है। तमिल प्राचीनतम भारत की उपलब्धियों का प्रतीक है। डॉ. शेषन जी का यह ग्रंथ भी विज्ञ पाठकों के लिए सुरक्षित रखने लायक है।

तमिल भक्ति आन्दोलन - डॉ.एम.शेषन

डॉ.एम.शेषन की पुस्तक तमिल भक्ति आन्दोलन तमिल शैव साहित्य आलवार वैष्णव साहित्य की तरह बहुत भावपूर्ण है। भावपूर्णता के साथ-साथ इसमें सिद्धांतनिष्ठा भी मिलती है।

तीनों ग्रंथों की प्राप्ति केलिए फोन 09841229879, 044-23663425

दनकौर से लखनऊ तक (पाँचवाँ संस्करण)

त्रिलोकचन्द्र गोलय का मोटा ग्रंथ (पांच सौ पृष्ठोंवाला) असंख्य पुरस्कार प्राप्त लोकप्रिय ग्रंथ है।-संसार परिवर्तनशील है। ६३-६४ का परिवर्तन बहुत होते हैं। उस ग्रंथ को पढ़कर इतने समय में क्या और कितने परिवर्तन हुए, उनका सत्य लगाया जा सकता है। प्राप्ति स्थान पता- **सी.गोयल, जानकीपुरम, लखनऊ-226021, मोब. 09450122299**

'तथ्य-कथ्य', 'कुछ-कुछ', 'प्रकृति मेरी प्रकृति'

श्रीमती रजनी सिंहजी हिन्दी की श्रेष्ठ कवयित्री हैं। उनकी लिखी उपर्युक्त तीनों काव्य-रचनाएं विशेष रूप से पठनीय एवं कंठस्थ करने योग्य हैं। आधुनिक निराकार निराधार अकविता की सूखी डालों को छोडकर आपकी वाणी में स्वाभाविक आनन्द का प्रवाह है। कुछ-कुछ प्रभुचरण में समर्पित आत्मा का मिलन बिन्दु है। प्रकृति मेरी प्रकृति भी ब्रह्मतत्व के साथ कवयित्री के आत्म-लच का ही भाव दर्शाती है।

प्राप्ति स्थान-दूरभाष 91-5734-265101-24911, रजनीविला, डिबाई 202393(उ.प्र.)

हिन्दी के बढ़ते कदम

प्रख्यात हिन्दी लेखक श्री हरिहरलाल श्रीवास्तव जी का ग्रंथ हिन्दी के बढ़ते कदम राजभाषा सम्बन्धी अनेक प्रश्नों की ओर इशारा करनेवाला और उन प्रश्नों का समाधान ढूँढ लेने में सहायक है। श्रीवास्तव जी अनेक वर्षों से केन्द्र मंत्रालयों की सलाहकार समितियों में रह चुके हैं। वे हिन्दी की प्रोन्नति प्राप्त करने में अपेक्षित जानकारी दे चुके हैं।

केरल के हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास

१९८९ से २०१२ तक का नवीकृत ग्रंथ

भारत सरकार के शिक्षा विभाग केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के निदेश पर, उनके सहयोग से तैयार हो रहा है।

प्री. पब्लिकेशन, मूल्य - **120** रुपये मात्र। पोस्टेज अलग

- **केरल के हिन्दी साहित्य एवं भाषा का सम्पूर्ण विवरण**
- **दक्षिण के हिन्दी प्रचरण की विस्तृत रूप रेखा**
- **स्कूलों-कालेजों में हिन्दी का प्रवेश और प्रोन्नति**
- **केरल के अब तक जीवित-दिवंगत साहित्यकारों की जानकारी**
- **केरल के विश्व विद्यालयों में हुए हज़ार तक शोधकार्य का सही विवरण**
- **केरल की हिन्दी सेवा-संस्थाओं का परिचय**
- **केरल में हुए पत्र-पत्रिकाओं की रूप रेखा**
- **केरलीय ग्रंथकारों द्वारा रचित ग्रंथ-विवरण-**

അനന്തപുരിയും ഞാനും (മലയാളം ആത്മകഥ) - 400.00

एक कर्मयोगी की आत्मकथा, भारत स्वतंत्रता के रास्ते से (हिन्दी आत्मकथा) - 500.00 (अनुवाद-कौसल्या अम्माळ)

30-6-2012 तक एम.ओ. सहित प्राप्ति-पता भेजें :

लेखक, चेयरमेन, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, लक्ष्मी नगर, पट्टम पालेस पोस्ट, तिरुवनन्तपुरम-695004

The touch of pink is
the touch of health.
Reaching out to people across the country, we have been working to provide better, more complete and affordable healthcare. From innovative contraceptives to hospital equipment, healthcare services and pharma products to specialised healthcare programs, we're doing all it takes to make mothers and fathers and babies, and grandmothers and brothers and sisters glow with the touch of pink, the touch of good health.
Hindustan Latex Limited is now
HLL Lifecare Limited
Innovating for Healthy Generations
www.lifecarehll.com
Contraceptives | Surgical and Hospital Products & Equipments | Medical Infrastructure Projects | Women's Health Care | Diagnostic Services | Vaccines
Rapid Test Kits | Natural Health Care Products | Procurement and Consultancy Services | Social and Health Care Franchising
Condom Promotion and AIDS Prevention Programs | Hospitals and Mobile Clinics | Public Health Program Implementation and Technical Support for NGO's

"हिन्दी प्रचार वैश्विक आयाम" संज्ञक विषय पर २७ मार्च २०१० को केरल हिन्दी प्रचार सभा भवन में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के तत्वावधान में अध्यक्षीय भाषण दे रहे हैं। सभा की अध्यक्षा डॉ.तंकमणिअम्मा, मंत्री प्रो.के.केशवननायर, डॉ.एस.राधाकृष्ण पिल्लै, श्री.कुमारजी आदि बैठे हैं।

श्रीमती रमा उण्णित्तान की पुस्तक पैतृक स्पन्दन का लोकार्पण हुआ। श्री. पिरप्पनकोड मुरली, विलक्कुटि राजेन्द्रन, राजेन्द्रन आदि डॉ.नायर के साथ खडे हैं।

डॉ.नायर के भवनांगण में कमल फूल। चित्र श्रीमती षंसू द्वारा

अकादमी के वार्षिक सम्मेलन के हॉल में प्रदर्शित डॉ.नायर के ग्रंथ

श्री. पी. गोपिनाथन नायर जी केन्द्र गान्धी स्मारक निधि के अध्यक्ष नियुक्त हुए, जिस पद पर प्रथम अध्यक्ष के रुप में श्री. राजेन्द्र प्रसाद जी विराज रहे थे। उनका अभिनन्दन समारोह चल रहा हैं। बैठे हैं, प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ श्री.वी.एम.सुधीरन, पद्मश्री विश्वनाथन, डॉ.नायर। बोल रहे हैं श्री.रामनपिल्लै (बी.जे.पी.)

भाषा संगम के तत्वावधान में मार्च १६ को केरल हिन्दी साहित्य अकादमी भवन में डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के महाकाव्य (चिरजीव महाकाव्य) के चर्चा सम्मेलन का डॉ.टी.शान्तकुमारी उद्घाटन कर रही हैं। प्रो.डी.तंकप्पन नायर, श्री. तुंपमन तंकप्पन, श्री.एम.पी.सदाशिवन आदियों ने महाकाव्य पर चर्चा ज़ारी की।

३१वें वार्षिक सम्मेलन में हिन्दी साहित्य अकादमी का पुरस्कार दूरदर्शन हिन्दी प्रबन्धक श्री.हरीन्द्रशर्मा को दिया जा रहा है

३१वें वार्षिक सम्मेलन में एस.बि.टी. हिन्दी कविता का पुरस्कार मुख्य प्रबन्धक श्री. संजय के. सिंह जी कवि श्री. मनु को दे रहे हैं

३१वें वार्षिक सम्मेलन में एस.बि.टी. हिन्दी शोध पुरस्कार मुख्य प्रबन्धक डॉ.मणिकण्डन नायर को दे रहे हैं

डॉ.विश्वनाथ अय्यर की नवती के आचरण में डॉ.नायर का अभिनन्दन। डॉ.अय्यर के साथ मंत्री एम.विजयकुमार और प्रोफ. के .केशवन नायर बैठे हैं।

डॉ. एन.चन्द्रशेखरन नायर की डोक्युमेन्टरी का प्रकाशन कर रहे हैं पुर्व दूरदर्शन निदेशक श्री. कुञ्ञिकृष्णनजी। स्वीकार करते हैं निंस वि.वि. के एम.डी. डॉ.फैसलख्रानजी

दिवंगत सी.शरत्चन्द्रन (डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर का पुत्र) के द्वितीय चरम-पर्व के आचरण देश भर चल रहे हैं। एक मंच पर उनके पिता और माता मित्रों के साथ।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायरजी का डोक्युमेन्टरी-परिवार महाराजा श्री. उत्राटम तिरुनालजी के साथ

केरल हिन्दी प्रचार सभा की वज्रजूबिली आचरित प्रथम उद्घाटन समारोह का दृश्य श्री. ओ.एन.वी. के साथ डॉ.नायर और अन्य विशिष्ट सदस्य

केरल हिन्दी प्रचार सभा की वज्रजूबिली समारोह के अवसर पर श्रीमती पुष्पलता तनेजाजी नायरजी को पुरस्कार देती है

९-२-२०१२ को हिन्दी विद्यापीठ का प्रो.पी.जी.वासुदेव एस.बी.टी. पुरस्कार डॉ.चन्द्रशेखरननायर को दिया गया। डा.नायर प्रो.वासुदेव के चित्र में पुष्पार्चन करते हैं। पीछे एस.बी.टी.के महाप्रबन्धक श्री. संजय के. सिंह और विद्यापीठ के कार्यकर्ता

डा.नायर के ८८वें जन्मदिन का आचरण हिन्दी प्रचार सभा में हुआ। ग्वालियर के डा.मेहरोत्राजी बीच में, रंगीन वस्त्रों में। उनका भी आदर धूम-धूम से उसी दिन चला

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के लिए शोध-पत्रिका डा.एन. चन्द्रशेखरन नायर, श्री निकेतन, तिरुवनन्तपुरम - ४
द्वारा मुद्रित संपादित और श्रीरामदासमिशन प्रिंटिंग एण्ड पब्लिशिंग हाऊस, तिरुवनन्तपुरम-८७ में मुद्रित।